वर्तमान योरप का संक्षिप्त इतिहास

(१४५३ से १६१६ ई० तक)

For Inter. and B. A. Students

जगतनारायण

किताब महल

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९५१

मुद्रक—टंडन प्रेस, ५ ए, एलबर्ट रोड इलाहाबाद
प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद ।

अभिमत

In this little book Mr. Jagat Narain, has made a modest attempt to write, in Hindi, the history of Europe from the beginning of modern times to the end of the first Great War. Its purpose is to initiate those, who do not know English, into the triumphs and tragedies of Europe's fascinating past. I hope it will be found useful.

5/8/50

R. S. TRIPATHI
M.A. P.H.D. (Lond.)
Head of the Department of History,
BENARES HINDU UNIVERSITY.

But one had to master the English language in order to derive this pleasure so long. There has been a long-felt need of a short and concise history of Europe written in Hindi. Fortunately for us Sri Jagat Narain B. A. has brought out such a nice little book, which will not only enrich the Hindi literature but also will do a great service to the student community and the general reader. Knowing intimately as I do Sri Jagat Narain, one of my brilliant ex-pupils—and I feel particular pleasure in writing out this Foreword to his maiden venture—I can safely commend his book to the reading public. Sri Jagat Narain is a keen student of history, is indeed a scholar of promise, but he does not, even in the moments of wildest self-esteem, pose to be a historian and therefore places the product of his efforts shyly before the educated world for their assessment. I take this opportunity of congratulating him on his bold and most laudable enterprise and am sure his work will be warmly welcomed and appraised by the student as well as the general reader.

ABHBHUSHAN BHATTACHARYA
Lecturer in History
A. B. College, Banaras.

सूची

विषय　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठांक

विषय पृष्ठांक

पहला पाठ

वर्तमान युग का प्रारम्भ

(Beginning of Modern Age)

ऐतिहासिकों में मतभेद—योरप का इतिहास एक प्राचीन इतिहास है। उसके प्रारम्भिक इतिहास का अध्ययन करना विदेशियों का अध्ययन करना होगा। अतः हमें योरप के इतिहास का एक ऐसे निश्चित समय से अध्ययन करना चाहिये जहाँ से वर्तमान युग का प्रारम्भ होता हो और जहाँ से वर्तमान योरपीय संस्कृति और सभ्यता की नींव पड़ी हो। इस विषय पर ऐतिहासिकों में मतभेद है। फिर भी कुछ ऐतिहासिकों का मत है कि वर्तमान युग सन् १४५३ से प्रारम्भ होता है। उनका कहना है कि सन् १४५३ में तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया को जीता जिससे दो [illegible] परिणाम हुए। पहला, जब कि यूनान के विद्वानों को विवश [illegible] तो इटली कला-कौशल, विद्या, इत्यादि की जागृति का केन्द्र बन गया और यहीं से इनका प्रसार योरप के अन्य देशों में हुआ। दूसरा, यूनानी जब योरप में बस गये और योरप और एशिया में होने वाले व्यापार मार्ग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तो योरप वालों को पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के लिए नये-नये मार्गों का आविष्कार करना पड़ा जिसके फलस्वरूप नई दुनिया (New world) का पता लगा। अतः उनका कहना है कि यदि कोई निश्चित समय वर्तमान युग के प्रारम्भ के लिए हो सकता है तो वह केवल सन् १४५३ ही है। कुछ विद्वानों का कहना है कि वर्तमान युग सन् १४९२ से प्रारम्भ होता है, क्योंकि अमेरिका का आविष्कार और योरपीय सभ्यता और विज्ञान का प्रसार इसी समय में हुआ था। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका कहना है कि योरप के इतिहास में वर्तमान युग का प्रारम्भ सन् १५१७ से होता है क्योंकि इसी वर्ष धर्मसुधार का जन्म हुआ और पोप का ह्रास होने लगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न समय वर्तमान युग के प्रारम्भ के लिए प्रस्तावित किये गये हैं। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि ये भिन्न-भिन्न समय

योरप के इतिहास में होने वाली मुख्य घटनाओं से सम्बन्ध रखते हैं। लेकिन यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो मालूम होगा कि कला-कौशल की उन्नति, विद्या और राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति और अमेरिका का पता लगाना इत्यादि कुस्तुनतुनिया के पतन के बाद ही से प्रारम्भ होता है। इसलिए यदि सन् १४५३ को योरप के इतिहास में वर्तमान युग के प्रारम्भ का समय दिया जाय तो अनुचित न होगा।

प्राचीन और वर्तमान युग की तुलना—मध्यकालीन राजनीतिक और सामाजिक स्थिति आज से बिलकुल भिन्न थी। प्राचीन समय में सम्पूर्ण योरप एक राज्य समझा जाता था जिसके दो प्रधान होते थे—पोप और सम्राट। उनकी आज्ञाओं का पालन करना लोग अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। पोप प्रायः राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था। लेकिन वर्तमान युग में राज्य राष्ट्रीय भावनाओं पर निर्भर करते हैं। आज की राजनीति एक-एक व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है, लेकिन प्राचीन काल में राजनीति का सम्बन्ध मनुष्यों की संस्थाओं से था न कि मनुष्यों से।

प्राचीन समय में समाज का रूप जागीरदारी का था। राज्य के कर्मचारी राज्य की ओर से जागीर पाते थे जिसके बदले में उनको सैनिक सहायता करनी पड़ती थी। इस प्रकार समाज दो भागों में विभक्त था—जागीरदार और खिदमती असामी। वर्तमान युग की मुख्य विशेषता मध्यम श्रेणी की उत्पत्ति है। मध्यम श्रेणी का जन्म व्यापार और वाणिज्य की उन्नति के फलस्वरूप हुआ है।

मध्यकाल में विद्या का विस्तार बहुत ही सीमित था। वस्तुतः विद्या पर बड़े-बड़े जागीरदारों का एकाधिकार हो गया था। जनता विद्या से बिलकुल वंचित थी। मनुष्यों में किसी बात की आलोचना करने की भावना नहीं थी और वे प्रायः प्राचीन रीति-रिवाजों में विश्वास करते थे। अधिकतर उनको धर्म की शिक्षा दी जाती थी लेकिन उनको धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने का अधिकार न था। किन्तु वर्तमान युग हम बिलकुल भिन्न पाते हैं। विद्या का विस्तार दिन प्रतिदिन बढ़ता चला आ रहा है। मनुष्य बिना आलोचना किये हुए किसी बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। धर्म का प्रभुत्व धीरे-धीरे कम होता चला जा रहा है।

वर्तमान युग की विशेषतायें--वर्तमान युग की कुछ विशेषतायें निम्नलिखित हैं।

वर्तमान युग की पहली मुख्य विशेषता धर्म-सुधार है। अब तक पोप धार्मिक मामलों में सर्वेसर्वा माना जाता था और उसकी आज्ञाओं का उलंघन करना पाप तथा अनुचित समझा जाता था। लेकिन धीरे-धीरे लोग चर्च तथा पोप में होने वाली त्रुटियों को जानने लगे। और इसके फलस्वरूप योरप में एक विशाल धार्मिक आन्दोलन आरम्भ हुआ जिसका मुख्य ध्येय चर्च की त्रुटियों को दूर करना था। यह अन्दोलन 'धर्म सुधार' (Reformation) के नाम से प्रसिद्ध है। लोग पोप के एकाधिकार को मानने से अस्वीकार करने और बाइबिल के पढ़ने तथा उसका स्वतन्त्र रूप से अर्थ लगाने के अधिकार को प्राप्त करने लगे।

दूसरी मुख्य विशेषता जो वर्तमान युग को मध्यकाल से भिन्न करती है आविष्कार है। सर्व प्रथम छपाई का आविष्कार हुआ जिससे किताबों का मूल्य कम हो गया और ज्ञान का प्रसार सम्पूर्ण योरप में होने लगा। अब तक ज्ञान पादड़ियों और पोप तक ही सीमित था और जनता इससे वंचित थी। इसके अतिरिक्त किताबें हाथ से लिखी जाती थीं जिससे वह मँहगी पड़ती थीं। लेकिन छपाई के आविष्कार हो जाने से किताबों की संख्या में वृद्धि हो गई और साथ ही साथ सस्ती भी हो गईं। छपाई के आविष्कार के साथ-साथ बारूद का भी आविष्कार हुआ। बारूद पर राजाओं का एकाधिकार स्थापित हो गया जिसका परिणाम यह हुआ कि बैरनों की शक्ति कम हो गई और राजाओं की शक्ति बढ़ने लगी।

तीसरी विशेषता राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति है। जागीर प्रथा लगभग समाप्त हो चुकी थी। भिन्न-भिन्न राज्यों की स्थापना होने लगी थी जहाँ पर शक्तिशाली राजा राज्य करते थे। अब तक सम्पूर्ण योरप एक राज्य समझा जाता था जिसके दो प्रधान होते थे—पोप और सम्राट्। पोप राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था। लेकिन अब राजा अपने राज्यों के राजनीतिक और धार्मिक मामलों में प्रधान होने लगे।

चौथी विशेषता मध्यम श्रेणी का जन्म है। मध्यम श्रेणी का जन्म व्यापार और वाणिज्य की उन्नति के फलस्वरूप हुआ है। जागीरदारों का पतन मध्यम

श्रेणी की उन्नति का मुख्य कारण है । योरप में जितने आन्दोलन तथा क्रान्ति हुए हैं-धर्मसुधार, पार्लियामेन्ट तथा राजाओं से मुठभेड़, फ्रान्स की राज्यक्रान्ति इत्यादि मध्यम श्रेणी की उन्नति की प्रतीक हैं। यही मध्यम श्रेणी आगे चलकर राजाओं की शक्ति को कम करने में सफल हुई और राजाओं के अत्याचार तथा बर्बरता से जनता के अधिकारों की रक्षा की।

पाँचवीं मुख्य विशेषता नये देशों की खोज है। जब यूनानी विद्वान योरप में आकर बस गये और योरप और एशिया में होने वाले व्यापार-मार्ग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तब योरप वालों को पूर्वी देशों से व्यापार करने के लिए नये-नये मार्गों का आविष्कार करना पड़ा जिसके फलस्वरूप नये-नये देशों की खोज हुई। इस क्षेत्र में प्रमुख नाम जो हमारे सामने आता है वह पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी (Henry the Navigator) का है जिसने अपना सारा जीवन अपने देशवासियों को दक्षिण की ओर मार्ग खोज निकालने के लिए उत्साहित करने में व्यतीत किया। उसके प्रयत्नों का फल यह हुआ कि सन् १४९८ ई० में वास्को-डि-गामा ने पुर्तगाल के लिए भारत-वर्ष के साथ व्यापार करने के लिए एक नया मार्ग खोज निकाला। इसी तरह धीरे-धीरे स्पेन ने भी इस क्षेत्र में पदार्पण किया और कोलम्बस ने सन् १४९२ ई० में नई दुनिया (New World) का पता लगाया।

सन् १४९७ ई० में इंगलैन्ड के एक नाविक सेबासटियन कैबट (Sebastian Cabot) ने ब्रीस्टल (Bristol) से समुद्री यात्रा की और पहली बार अमेरिका पहुँचा। इसी तरह अन्य देशों ने भी कई नये देशों का पता लगाया। इससे कई महत्वपूर्ण परिणाम निकले। पहला, अब तक व्यापार वेनिस जेनोवा (Genoa) तक ही सीमित था। भूमध्यसागर समुद्री मार्ग का केन्द्र था।* लेकिन अब व्यापार विश्वव्यापी हो गया। अटलांटिक महासागर का महत्व बढ़ने लगा। वेनिस और जेनोवा का महत्व कम होने लगा। दूसरा, व्यापार

---

* "Rome was the hub of the Universe, Venice and Genoa the emporiums of its trade and Florence the home of its arts and letters. All men's eyes looked towards Italy, but nowhetre came an aversion of gaze."

और वाणिज्य बड़े पैमाने पर होने लगे जिसके कारण नई नई कम्पनियों की स्थापना होने लगी और बैंकिंग (Banking) की उन्नति हुई। तीसरा, नये देशों के खोज होने के कारण सस्ते मजदूरों की आवश्यकता होने लगी जिससे गुलामों के बेचने के व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिला। चौथा, लोगों के सुख और सम्पत्ति में वृद्धि हुई और मध्यम श्रेणी का जन्म हुआ। पाँचवां, व्यापार और वाणिज्य की प्रधानता के लिए भिन्न-भिन्न देशों में युद्ध होने लगा।

प्रश्नोत्तर

1. Give in outline, the special features which distinguish the Modern Age from the Middle Age. (Benares. 1948)

(देखिये—पृष्ठ ३, ४, ५)

2. Discuss the significance of the geographical discoveries of the fifteenth and sixteenth centuries upon the general history of Europe. (Benares. 1947)

(देखिये—पृष्ठ ४, ५,)

3. Why is the Capture of Constantinople by the Turks regasded as opening a new era in History ? Can you suggest any other dates from which modern Europe may be said to have begun. (Calcutta. 1915)

(देखिये—पृष्ठ १)

4. Which of the following dates you prefer for marking off the Modern European history from the Medieval Age : 1453, 1492, 1517. Give reasons for your preference.

(देखिये—पृष्ठ १)

5. Distinguish Modern from the Medieval History of Europe in regrad to her political and social conditions. (Calcutta. 1917)

(देखिये—पृष्ठ २)

दूसरा पाठ

कला-कौशल तथा विद्या का नवजागरण काल

साहित्यों और भाषाओं की उन्नति—निरंकुश राजसत्ता तथा आर्थिक प्रसार से अधिक महत्त्वपूर्ण मानसिक विकास (Intellectual Quickening) है जो पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ और जिसका गहरा प्रभाव वर्तमान समाज और सभ्यता पर पड़ा। इस बात का प्रमाण हमें छपाई के आविष्कार और विद्या के प्रसार, उच्चकोटि की सभ्यता का पुनरोद्धार, कला की उन्नति, राष्ट्रीय साहित्यों की उन्नति इत्यादि से मिलता है। यह काल योरप के इतिहास में "कला-कौशल तथा विद्या का नवजागरण काल" के नाम से प्रसिद्ध है। कला और साहित्य की उन्नति जो इटली में आरम्भ हुई धीरे-धीरे इंगलैन्ड आदि देशों में फैलने लगी जहाँ पर अब भी पुराने आचार-विचार प्रचलित थे। यह काल सन् १३०० ई० से लेकर सन् १५०० ई० तक और योरप के कुछ भागों के लिए सन् १५५० ई० तथा सन् १६०० ई० तक फैला हुआ है।

इस काल में राष्ट्रीय साहित्य और भाषाओं की आशातीत उन्नति हुई। नागरिक लोग अपने ही देश की भाषा में बोलने लगे जिससे फ्रान्स, इटली, जर्मनी, स्पेन और इंगलैण्ड की भाषायें शिक्षित समाज की भाषा बन गईं। मध्य-काल में इनकी उन्नति बैरनों और जागीरदारों द्वारा हुई थी लेकिन इस काल में इन्होंने एक निश्चित रूप धारण किया। इस काल में जब हम फ्रान्स की ओर बढ़ते हैं तो हम फ्रोसार्ट (१३३१-१४१० ई०) जैसे ऐतिहासिक तथा विलाँन (१४३१-१४८४) जैसे मौलिक कवि को पाते हैं। इन दोनों विद्वानों ने फ्रान्स की भाषा की उन्नति में काफी हाथ बटाया। जब हम समुद्र पार करके इंगलैण्ड आते हैं तो हम चौसर (१३४०-१४००) जैसे उच्च कोटि के कवि को पाते हैं। इटली में, पहला लेखक जिसने अपने देश की भाषा का सर्व प्रथम प्रयोग किया, दान्ते था। दान्ते

फ्लोरेन्स का एक प्रमुख नागरिक था। पेट्रार्क एक कवि और साथ ही साथ मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करने वाला विद्वान था। बोसासिओ इस काल का प्रमुख लेखक था।

कला की उन्नति—कला-कौशल तथा विद्या के नवजागरण काल में साहित्य की अपेक्षा चित्रविद्या, मूर्ति बनाने की विद्या और शिल्पविद्या (Architecture) में अधिक उन्नति हुई। इटली इन सब विद्याओं की उन्नति का केन्द्र था।

शिल्प विद्या ने ब्रूनेलेस्ची (Brunelleschi) के प्रभाव से उच्च-कोटि की उन्नति की। ब्रूनेलेस्ची फ्लोरेन्स का निवासी था। उसने घर बनाने की मध्यकालीन रीति में एक रुचि पैदा कर दी जिसका फल यह हुआ कि फ्लोरेन्स तथा रोम और वेनिस में सुन्दर-सुन्दर घर बनने लगे। जब हम मूर्ति बनाने की विद्या की ओर आते हैं तो हम उसी प्रकार की असाधारण उन्नति पाते हैं। डोनाटेलो (Donatello) इस विद्या का मार्ग दर्शक था। डोनाटेलो ने इस विद्या का प्रकृति के साथ एक निकटतम सम्बन्ध स्थापित किया। मिचेलांगेलो (Michelangelo) ने इस विद्या में विशेष सफलता प्राप्त की। इस काल में चित्र विद्या में भी विशेष उन्नति हुई। पहला फ्लोरेन्टाईन (Florentine) चित्रकार मसाचिओ (Masaccio) था जिसको जीवन और प्रकृति से विशेष प्रोत्साहन मिला। लिओ नार्डो-ड-विंसि और मिचेलांगेलो इस काल के प्रसिद्ध चित्रकार थे। लिओनार्डो-ड-विंसि एक चित्रकार और वैज्ञानिक था और मिचेलांगेलो एक मूर्तिकार और चित्रकार था।

विज्ञान की उन्नति—विज्ञान के क्षेत्र में सबसे अधिक उन्नति ज्योतिष विद्या में हुई। यूनान का अन्तिम ज्योतिषी टॉलेमी (Ptolemy) था जिसने इस बात की शिक्षा दी कि पृथ्वी गोल है और उसने उसकी परिधि मालूम की। उसका कहना था कि पृथ्वी विश्व का स्थायी केन्द्र है। कोपर-निकस ने एक नई ज्योतिष विद्या की रचना की और सिद्ध किया कि सूर्य ग्रह-मण्डल का केन्द्र है।

आविष्कार की उन्नति—इस काल में बारूद और छपाई का आविष्कार हुआ। बारूद के आविष्कार से कई प्रभावशाली सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए। अब तक बैरन शक्तिशाली थे और उनके शक्तिशाली होने का मुख्य कारण उनके गढ़ (Castles) थे। राजाओं की शक्ति सीमित थी और वे बैरनों पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाल सकते थे। बारूद के आविष्कार से राजाओं की शक्ति बढ़ गई। बारूद पर उनका एकाधिकार स्थापित हो गया। गढ़ शक्ति हीन हो गए और बैरनों का प्रभाव दिन प्रति दिन घटता गया। बारूद से अधिक महत्वपूर्ण आविष्कार छपाई का था। अब तक किताबें हाथ से लिखी जाती थीं इसलिए किताबों का मूल्य अधिक होता था और उनकी संख्या भी कम होती थी। इन सब कारणों से किताबों पर प्रायः पोप और पादड़ियों का ही एकाधिकार स्थापित था। लेकिन छपाई के आविष्कार से उनकी संख्या में काफी वृद्धि हो गई और किताबों के मूल्य भी कम हो गये। किताबों में पुराने और नये दोनों विचार संग्रहित होते थे।

भौगोलिक उन्नति—इस काल में भूगोल की भी विशेष उन्नति हुई। इस भौगोलिक क्षेत्र में सबसे प्रमुख नाम जो हमारे सामने आता है वह क्रामर (Kramer) का है। क्रामर ने नकशा बनाने की विधि को काफी प्रोत्साहन दिया और अक्षांश और देशान्तर रेखाओं के खींचने की विधि बतलाई।

वैद्यक शास्त्र की उन्नति—वैद्यक शास्त्र की भी उन्नति इस काल में हुई। इस क्षेत्र में हम दो मुख्य नामों को पाते हैं—वेसालियस (Vesalius) और हार्वे (Harvey)। वेसालियस ने मनुष्य के शारीरिक ढांचे पर एक किताब लिखी और हार्वे ने रक्त-संचार के सिद्धान्त की व्याख्या की।

कला-कौशल तथा विद्या का नवजागरण काल और सुधार—सोलहवीं शताब्दी का धर्मसुधार आन्दोलन कला-कौशल तथा विद्या के नव-जागरण काल की देन था। कला-कौशल तथा विद्या के नवजागरण काल में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण उन्नति हुई। मनुष्यों के विचारों में प्रभावशाली परिवर्तन हुआ। विद्या के प्रसार तथा छपाई के आविष्कार ने तो मनुष्यों के विचारों में क्रान्ति पैदा कर दी। मनुष्यों का दृष्टिकोण धीरे-धीरे धर्म से होने वाली त्रुटियों

की ओर आकर्षित होने लगा जिसके परिणाम स्वरूप धर्मसुधार का जन्म हुआ। यदि योरप में कला-कौशल तक विद्या का नवजागरण काल न हुआ होता तो सम्भवतः धर्मसुधार का समय कई वर्षों के लिए स्थागित हो गया होता।

प्रश्नोत्तर

1. What do you mean by "Renaissance"? What were its leading features? (देखिये —पृष्ठ ७, ८, ९, १०)

2. What was the relation between the Renaissance and the Reformation? (Calcutta, 1923, 1921)

(देखिये—पृष्ठ १०)

3. How far was the Reformation a result of the Renaissance? (Calcutta. 1932)

(देखिये—पृष्ठ १०)

तीसरा पाठ

धर्म सुधार

(Reformation)

धर्म-सुधार का अर्थ—सोलहवीं शताब्दी की मुख्य घटना धर्मसुधार का जन्म है। धर्मसुधार उस धार्मिक अन्दोलन को कहते हैं जो सोलहवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ और जिसके परिणामस्वरूप योरप के बहुत से देशों के गिरजाघर रोम के चर्च से अलग हो गये। रोम के चर्च में बहुत सी त्रुटियाँ आ गई थी जिसको सुधारने की आवश्यकता इसके पहले ही जान पड़ी थी। इंगलैण्ड में *विकलिफ (Wycliffe) पहला व्यक्ति था जिसने पादड़ियों के संसारिक जीवन की कटु आलोचना की थी और उसको सुधारने का प्रयत्न किया था। बोहेमिया में जॉन हस (Johu Huss) ने धर्म में जागृति पैदा करने का प्रयत्न किया था। लेकिन उसको धर्म-द्रोही ठहराकर प्राण-दण्ड दिया गया। इस प्रकार का प्रयत्न सवोनारोला (Savonarola) ने भी फ्लोरेन्स में किया था और उसको भी प्राण-दण्ड मिला। इन धर्म सुधारकों के असफल होने का मुख्य कारण लोगों का अन्धविश्वास था।

धर्म सुधार के कारण—धर्म सुधार के उत्पत्ति के चार मुख्य कारण थे—(क) कला-कौशल तथा विद्या के नव जागरण काल का प्रभाव (ख) धार्मिक कारण (ग) राजनीतिक कारण (घ) आर्थिक कारण।

(क) कला-कौशल तथा विद्या के नवजागरण काल का प्रभाव—इस काल में साहित्य और भाषा, कला और कौशल इत्यादि की असाधारण उन्नति हुई। मनुष्यों के मध्यकालीन विचारों में प्रभावशाली परिवर्तन हुए। मनुष्यों का दृष्टिकोण धीरे-धीरे धर्म की बुराइयों की ओर आकृष्ट होने लगा। "लोग ख्याल करते थे कि जब तक विद्या का जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं तब तक

* Wycliffe is called the "Morning Star" of the Reformation.

उसका ज्ञान निरर्थक है। जब तक मनुष्य न तो अपना जीवन अच्छी तरह से व्यतीत कर सके और न अच्छे काम कर सके तब तक उनके ज्ञान से कोई लाभ नहीं। सत्य और यथार्थता ही नवीन विद्या की विशेषताएँ थीं।" इरास्मस (Erasmus) ने अपनी पुस्तक "Praise of Folly" में चर्च की त्रुटियों की आलोचना की और उसके समाधान के लिए मार्ग बतलाया।

(ख) धार्मिक कारण—चर्च की पवित्रता नष्ट हो चुकी थी। "उस समय के पोप इटली के राजकुमार थे, जो आधिभौतिक जीवन के लिये आध्यात्मिक शक्तियों को काम में लाते थे।" पादड़ी धार्मिक कर्त्तव्यों का उचित रीति से पालन नहीं करते थे। उनकी धनलिप्सा और विलासिता लोगों को अप्रिय थी। पादड़ी धन के लोभ से बहुत काम ले लेते थे किन्तु वे उन्हें नहीं कर सकते थे। धर्म की अपेक्षा राजनीति से उनका अधिक सम्बन्ध था।

(ग) राजनीतिक कारण—सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजनीतिक स्थिति में काफी परिवर्तन हो चला था। जागीर प्रथा अवनति की अवस्था में थी। राष्ट्रीय भावनायें ज़ोर पकड़ रहीं थीं। नये-नये राज्यों की स्थापना हो रही थी। शासक-वर्ग देशी मामलों में स्वतन्त्र तथा शक्तिशाली होना चाहते थे और रोम के पोप के अधीन रहना उन्हें असह्य था। वे चर्च के धन तथा प्रभाव पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए उत्सुक थे। इसी प्रकार स्वदेश-भक्त (Patriots) भी चर्च के राजनीतिक शक्ति से असन्तुष्ट थे, क्योंकि उनके ध्येय में रुकावट पड़ती थी। इसलिए जब धर्मसुधार प्रारम्भ हुआ तो इन राजाओं, राजकुमारों तथा स्वदेश-भक्तों ने अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट की।

(घ) आर्थिक कारण—जनता का धर्म-सुधार के आन्दोलन में साथ देने का मुख्य कारण आर्थिक था। लोगों को पहले वर्ष की आय का आधा भाग (System of Annates) पोप को भेजना पड़ता था। इसके अतिरिक्त लोगों को अनेकों प्रकार के धार्मिक कर पोप को देने पड़ते थे। यह सब धन जो इस प्रकार रोम पहुँचता था सांसारिक सुख और विलास की वस्तुओं के खरीदने तथा पोप के दरबार की सुन्दरता को बनाये रखने के लिए व्यय किया जाता था। चर्च पर आक्रमण करने का तात्कालिक कारण यह था कि टट्ज़ेल (Tetzel) रोम के सेण्ट पिटर्स (St. Peters) के गिरजाघर

के निर्माण के लिए रुपये पाने के उद्देश्य से पोप के हस्तपत्र (Indigences) जर्मनी में बेच रहा था। लूथर (Luther) ने उसका घोर विरोध किया।

जर्मनी में धर्मसुधार का श्रीगणेश—जर्मनी धर्मसुधार की जन्मभूमि थी। यहाँ से धर्मसुधार प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण योरप में व्याप्त हो गया। इसके कई कारण थे—आर्थिक, राजनीतिक और मार्टिन लूथर(Martin Luther) की उपस्थिति। जर्मनी को अन्य देशों की अपेक्षा अधिक कर देने पड़ते थे जिस के कारण वह एक "दुधार गाय" (Milk Cow) कही जाती थी। इन करों को रोकने में समाज के प्रत्येक वर्ग तथा छोटे पादड़ियों ने साथ दिया। इसी प्रकार जर्मनी की राजनीतिक स्थिति भी डांवाडोल थी। जर्मनी लगभग ३५० राज्यों में विभक्त था। उनको एक सूत्र में बांधना एक विकट समस्या थी। इस के अतिरिक्त पोप और रोम के सम्राट् सदैव जर्मनी के मामलों में हस्तक्षेप किया करते थे। जर्मनी का शासन एक सभा (Diet) द्वारा होती थी जिसमें जनता के प्रतिनिधि होते थे। अगर चार्ल्स पंचम ने अपनी सारी शक्ति जर्मनी की ओर लगाई होती तो आन्दोलन सफल नहीं हुआ होता। मार्टिन लूथर ने तो जर्मनी के आन्दोलन में एक नया उत्साह, उमंग और जीवन पैदा कर दिया।

सन् १५१७ ई० में मार्टिन लूथर (Murtin Luther) ने जो सक्सोनी के विटेनबर्ग (Wittencrg) का एक पादड़ी था पोप के सर्वाधिकार के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ा जिसका मुख्य ध्येय चर्च की बुराइयों को दूर करना था। उसने पोप के हस्तपत्र बेचने की नीति का घोर विरोध किया और उसके विरुद्ध अपनी पंचानवे प्रतिज्ञायें (Ninetv five Theses) प्रकाशित की। ये प्रतिज्ञायें विटेनबर्ग के चर्च की किवाड़ों पर चिपका दी गईं। इन प्रतिज्ञायों का अनुवाद जर्मन भाषा में किया गया। इन प्रतिज्ञाओं ने सारे देश में अशान्ति पैदा कर दी और लोग लूथर के इस साहस पर आश्चर्य प्रकट करने लगे क्योंकि लूथर अभी भी कैथोलिक धर्म का अनुयायी था।

धीरे-धीरे ये पंचानवे प्रतिज्ञायें (Ninety Five Theses) वाद-विवाद के विषय बन गये। सन् १५१७ ई० से सन् १५२० ई० तक पोप और लूथर में

समझौता हो जाने की आशा की जाती थी। तीन वर्ष की अशान्ति के पश्चात् मार्टिन लूथर ने प्रत्यक्ष रूप से पोप, पादड़ियों तथा धर्म विधि पर आक्रमण करना शुरू किया। पोप (Leo X) ने समझौते की नीति Policy of reconciliation) को त्यागकर एक घोषणा-पत्र (Bull) प्रकाशित किया जिसके अनुसार लूथर को एक नास्तिक (Heretic) ठहराया गया (सन् १५२० ई०)। लूथर ने पोप के घोषणापत्र को खुले बाजार में जला दिया और पोप की आज्ञाओं को मानने से इन्कार कर दिया।

२६ मई सन् १५२१ ई० में चार्ल्स पंचम ने वॉर्मस (Worms) नामक स्थान पर एक सभा बुलाई और लूथर को उपस्थित होने की आज्ञा दी गयी। लूथर को आन्दोलन से हट जाने के लिए कहा गया, लेकिन लूथर ऐसा करने को तैयार न था। इसलिए सन् १५२१ ई० में एक आज्ञा द्वारा (Edict of Worms) लूथर को अवैध घोषित किया गया। चार्ल्स पंचम का प्रयत्न विफल रहा और सन् १५२६ ई० में स्पीअर (Spieir) नामक स्थान पर जर्मन राजकुमारों की एक दूसरी सभा बुलाई गयी। चार्ल्स पंचम लूथर को धर्म से बहिष्कृत करने के लिए उत्सुक था इसलिए उसने कोई परिवर्तन न करने की नीति को दृढ़तापूर्वक अपनाया। सभा के अधिकतर सदस्य चार्ल्स की नीति से सहमत थे।

इस समय तक लूथर के अन्दोलन की जड़ अधिक दृढ़ हो चली थी और राजकीय आज्ञाओं से उसके वेग को रोका नहीं जा सकता था। अगर चार्ल्स ने अपना पूरा ध्यान जर्मनी की ओर लगाया होता तो जर्मनी में धर्म-सुधार का समय कुछ और ही हुआ होता। सन् १५५५ ई० में चार्ल्स फ्रान्स और जर्मनी से निराश हो गया। देश की सहानुभूति प्राप्त करने के विचार से उसने प्रोटेस्टेंटों (Protestants) से एक संधि कर ली जो योरप के इतिहास में आग्सबर्ग की सन्धि (Treaty of Angsburg) के नाम से प्रसिद्ध है।

आग्सबर्ग की सन्धि (१५५५ ई०)—आग्सबर्ग की सन्धि एक प्रकार का समझौता था जो अधिक दिनों तक कायम न रह सका। इस सन्धि की चार मुख्य शर्तें थीं—(क) रोम का सम्राट किसी निश्चित धर्म को जनता पर बल-पूर्वक लागू नहीं कर सकता था। इस सन्धि के द्वारा रोम को एक से अधिक

गिरजाघरों की उपस्थिति को स्वीकार करना पड़ा। (ख) इस सन्धि के अनुसार केवल कैथोलिक धर्म और लूथर-धर्म (Lutheranism) को स्वीकार किया गया और अन्य धर्मों को अवैध घोषित किया गया। (ग) दोनों धर्मों में से एक को चुनने की स्वतन्त्रता शासकों को दी गयी। जनता इस अधिकार से वंचित रही। यदि शासक कैथोलिक धर्म का अनुयायी है तो वह प्रोटेस्टेन्ट प्रजा को देश निष्कासन का दण्ड दे सकता है। (घ) सन् १५५२ ई० के पहले धर्म के परिवर्तन के साथ साथ धन का भी परिवर्तन होता था। लेकिन यह अस्वीकार कर दिया गया। इस सन्धि के अनुसार जो धन सन् १५५५ ई० के पहले कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों के हाथ में था वह उन्हीं के हाथ में रहा। यदि कोई कैथोलिक प्रोटेस्टेन्ट होना चाहता था तो उसे अपने धन से वंचित होना पड़ता था। इसी प्रकार प्रोटेस्टेन्ट अपने धन को खो बैठते थे यदि वे कैथोलिक हो जाते थे।

इस सन्धि से कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों में अधिक दिनों तक शान्ति बनी रही। लेकिन इस सन्धि में कई एक बुराईयाँ थीं जिनके कारण यह सन्धि अधिक दिनों तक टिक न सकी और सन् १६१८ ई० में एक युद्ध कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों में छिड़ा जो तीस वर्ष (१६१८-४८) तक चलाता रहा। यह युद्ध योरप के इतिहास में तीस-वर्षीय युद्ध (Thirty Years War) के नाम से विख्यात है। इस सन्धि में तीन मुख्य त्रुटियाँ थी—(क) कैथोलिक धर्म और लूथर-धर्म (Lutheranism) में से एक को चुनने की स्वतन्त्रता शासकों को दी गयी थी। जनता इस अधिकार से वंचित थी। शासक प्रायः कैथोलिक हुआ करते थे और वे बहुसंख्यक प्रोटेस्टेन्टों पर अत्याचार करते थे। (ख) इस सन्धि के द्वारा केवल कैथोलिक धर्म और लूथर-धर्म को ही मान्यता दी गयी थी। इस समय एक नया धर्म (Calvinism) जोर पकड़ रहा था और जिसके अनुयायियों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती चली जा रही थी। (ग) धर्म के परिवर्तन के साथ-साथ धन के परिवर्तन न होने की नीति (Ecclesiastical Reservation) से प्रायः कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों में झगड़े हुआ करते थे। प्रोटेस्टेन्ट सदैव इस नीति की अवहेलना किया करते थे जिसके कारण कैथोलिक इनकी आलोचना करते थे। इन्हीं सब कारणों से यह कहा जाता है कि तीस-वर्षीय युद्ध का मुख्य कारण आग्सबर्ग की सन्धि है।

इंगलैण्ड में धर्म सुधार— इंगलैण्ड में धर्म सुधार एक विशेष प्रकार से आरम्भ हुआ। इंगलैण्ड का शासक हेनरी अष्टम (Henry VIII) कैथोलिक धर्म का अनुयायी था। उसने धर्म-सुधार के विरुद्ध एक पुस्तक (Defence of the Seven Sacraments) लिखा जिससे प्रसन्न होकर पोप (Leo X) ने उसे "धर्म-रक्षक" (Defender of the Faith) की उपाधि से विभूषित किया। लूथर के विचारों के प्रभाव से इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार नहीं हुआ बल्कि पोप से अप्रसन्न होकर इंग्लैण्ड के राजा के द्वारा ही धर्मसुधार का सूत्रपात हुआ। हेनरी कैथरीन का परित्याग करना चाहता था। इसके कई कारण थे—(क) कैथरीन हमेशा राजनीतिक कार्यों में हस्तक्षेप करती थी। (ख) उसके कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ था। हेनरी को पुत्र की इच्छा थी। (ग) इसी समय हेनरी एन बोलिन (Anne Boleyne) पर, जो उसके दरबार में रहती थी, मोहित हो गया और उससे प्रेम करने लगा। हेनरी अष्टम ने अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए पोप से आज्ञा प्राप्त करनी चाही। इन मामलों की जाँच के लिए वूल्जे (Wolsey) और कैम्पेजियो (Campeggio) न्यायाधीश नियुक्त किये गये। कैम्पेजियो ने जान बूझ कर टाल-मटोल की। अदालत भङ्ग कर दी गई और पोप ने मामले को रोम मँगवा लिया। सन् १५२९ ई० में उसने हेनरी अष्टम के विरुद्ध निर्णय दिया जिससे अप्रसन्न होकर हेनरी ने इंग्लैण्ड में धर्मसुधार का काम शुरू किया जिसके साथ उसकी कोई सहानुभूति नहीं थी। उसने सुधार पार्लियामेन्ट (Reformation Parliament) को सन् १५२९ ई० में आमंत्रित किया जिसने कई महत्वपूर्ण विधानों का निर्माण किया। सन् १५३० ई० में इंग्लैण्ड के पादड़ियों पर एक कानून (Act of Premunire) के विरुद्ध वूल्जे को लिगेट मानने के अपराध में अभियोग लगाया गया। पादड़ियों ने डरकर राजा को १,१८,००० पौं० जुर्माना देकर क्षमा माँगी। सन् १५३२ ई० में एक दूसरा एक्ट (Act of Annates) पास किया गया जिसका आशय था कि जो पोप को धन भेजे जाते थे वे भविष्य में उनके पास न भेजे जाँय। सन् १५३३ ई० में एक तीसरा एक्ट (Act of Appeals) बनाया गया जिसके अनुसार जो धार्मिक अपीलें रोम को भेजी जाती थीं बन्द कर दी गईं। एक दूसरे एक्ट के

अनुसार (Act of Supremacy) राजा को चर्च का अधिष्ठाता घोषित किया गया। हेनरी ने एनबोलिन से विवाह कर लिया। इन एक्टों से इंग्लैण्ड में पोप की महत्ता का अंत हो गया। इन वर्षों में (१५३४-४० ई०) हेनरी ने मठों का दमन किया जिससे केथोलिक धर्म की रही-सही शक्ति का भी अन्त हो गया। सन् १५४७ ई० में हेनरी अष्टम की मृत्यु हो गई। उसके बाद एडवर्ड षष्ठ (Edward VI) ने धर्मसुधार के कार्यों को जारी रखा। सन् १५५३ ई० में एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् मेरी ट्यूडर (Mary Tudor) राज्याधिकारिणी घोषित की गई। वह पक्की केथोलिक थी। उसने एडवर्ड और हेनरी के सभी एक्टों को रद्द कर दिया। उसकी संरक्षता में इंग्लैण्ड ने फिर रोम की अधीनता स्वीकार कर ली। प्रोटेस्टेन्टों पर प्राचीन काल के कानून लागू किये गये और उन पर अत्याचार होने लगे।

एलिज़ाबेथ (१५५८-१६०३ ई०) दोनों सम्प्रदायवालों को प्रसन्न करना चाहती थी। पोप उसे धर्म से बहिष्कृत घोषित कर चुका था। इसलिए केथोलिकों की ओर से उसका पक्ष निर्बल हो गया था। प्रोटेस्टेन्टों के प्रति उसकी विशेष सहानुभूति थी। अतः उसने मध्यम-मार्ग (Middle Course) का अनुसरण किया। उसने ऐंग्लिकन चर्च (Anglican Church) की स्थापना की और उसमें ऐसी बातों को रखा जो दोनों को मान्य हों। जो उसके धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध जाते थे उनको दण्ड देने के लिये उसने एक विशेष न्यायालय (Court of High Commission) की स्थापना की। ऐंग्लिकन धर्म (Anglicanism) इंग्लैण्ड का धर्म घोषित किया गया।

स्कॉटलैण्ड में धर्मसुधार—सन् १५४२ ई० में जेम्स पंचम (James V) की आकस्मिक मृत्यु हो जाने से मेरी स्टूअर्ट (Mary Stuart) जो नाबालिग थी राज्याधिकारिणी घोषित की गई। केथोलिक पादड़ियों ने रानी का साथ दिया और धर्मसुधारकों ने स्कॉटलैण्ड में धर्मसुधार फैलाने के उद्देश्य से सामन्तों (Nobles) को मिलाना आरम्भ किया। कार्डिनल बिटन (Cardinal Beaton) ने रानी की अनुमति से और धर्म की रक्षा करने के उद्देश्य से बहुत से प्रोटेस्टेन्टों को प्राण-दण्ड दिया। ऐसी स्थिति में जॉन नॉक्स (John Knox) ने प्रमुख प्रोटेस्टेन्टों की एक संस्था (Lords of the Congregatism) स्थापित की जिसका मुख्य लक्ष्य धर्मसुधार की भावनाओं का प्रचार करना था। उसने

स्कॉटलैण्ड में राजनीतिक और धार्मिक क्रान्ति पैदा कर दी। रानी बन्दी बना ली गई और सन् १५६० में नॉक्स के अनुरोध से स्कॉटलैण्ड में प्रेसबीटिरियन चर्च की स्थापना की गई। केथोलिक धर्म की पुनः स्थापना के प्रयत्न में मेरी पूर्णतया असफल रही।

फ्रान्स में धर्मसुधार—अन्य देशों की भांति फ्रान्स में भी धार्मिक अशांति थी। फ्रान्स का राजा फ्रांसिस प्रथम, उसके पुत्र और पौत्र केथोलिक थे और राजनीतिक कारणों से केथोलिक सम्राट चार्ल्स पंचम के विरुद्ध जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों की सहायता करते थे। लेकिन गृह-नीति में वे प्रोटेस्टेन्ट पर अत्याचार करते थे। अन्तिम विजयी राजा हेनरी चतुर्थ ने सन् १५९८ ई० में (Edict of Nantes) पास करके धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की। यहाँ पर जान कालविन के द्वारा चलाये हुये धर्मसुधार (Calvinism) की प्रधानता थी और यहाँ के प्रोटेस्टेन्ट ह्यूगिनाट्स कहलाते थे।

धर्मसुधार की सफलता के कारण—धर्मसुधार की सफलता के कई कारण थे—(१) लूथर का व्यक्तित्व महान था। उसमें नेतृत्व करने की योग्यता थी। (२) जर्मनी छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्यों का संघ था जिनके मत लूथर के विषय में भिन्न थे। जर्मनी को राजनीतिक अनैक्य के कारण लूथर के विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया जा सकता था। (३) जनता पोप की नीति से असन्तुष्ट थी। (४) चार्ल्स पंचम कई समस्याओं को सुलझाने में लगा हुआ था इसलिए वह लूथर के आन्दोलन को दबा न सका। (५) लूथर ने अपने धार्मिक आन्दोलन को राष्ट्रीय रूप दिया था क्योंकि उसका कहना था कि वह विदेशियों के विरुद्ध आंदोलन कर रहा है।

धर्मसुधार का प्रभाव—धर्मसुधार का योरप की धार्मिक, राजनीतिक, और सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा। अधिकांश देशों के चर्च (इंग्लैण्ड, स्काटलैंड फ्रान्स इत्यादि) रोम के चर्च से अलग हो गये। रोम के चर्च की एकता नष्ट हो गई। बाइबिल पढ़ने तथा उसका स्वतन्त्र अर्थ लगाने की पूरी स्वतन्त्रता मिल गई। ईसाई धर्म ने राष्ट्रीयता का रूप धारण किया। राज्य धार्मिक मामलों में पोप से स्वतन्त्र हो गये। राजा लोग धार्मिक और राजनीतिक

सामन्तों में प्रधान होने लगे। चर्च की भूमि तथा धन पर अधिकार हो जाने से राजाओं की शक्ति अधिक बढ़ गई। यद्यपि धर्मसुधार के फलस्वरूप किसानों को धार्मिक कर नहीं देने पड़ते थे लेकिन राजाओं की निरंकुशता से उन्हें अधिक हानि उठाना पड़ी। धीरे धीरे उनमें अशान्ति फैलती गई और प्रजातन्त्र की भावनाओं का बीज बोया गया।

प्रश्नोत्तर

1. How far was the Reformation in Europe a political movement ? (*Benares. 1948*)

2. How far was the Reformation a result of the Renaissance ? (*Benares. 1949; Calcutta. 1932*)

3. Describe the events leading upto the initiation of the Reformation. (*Nagpur. 1929*)

4. To what causes would you attribute the success of the Reformation movement in Germany ? (*Calcutta. 1924, 1925*)

5. Give a brief account of the progress of Reformation in Germany.

6. What were the main provisions of the Treaty of Augsburg (1555) ? How far it was responsible for the initiation of the Thirty yearso ar.

चौथा पाठ

केथोलिक धर्मसुधार

(Counter Reformation)

केथोलिक धर्मसुधार का अर्थ—यदि सोलहवीं शताब्दी धर्मसुधार के लिये प्रसिद्ध है तो वह उतनी ही महत्त्वपूर्ण केथोलिक धर्मसुधार के लिए भी है। केथोलिक धर्मसुधार उस धर्मसुधार को कहते हैं जिसको केथोलिकों ने चलाया था और जिसका मुख्य उद्देश्य प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार को रोकना था। प्रोटेस्टेन्ट धर्म-सुधार की प्रगति से केथोलिकों की शक्ति दिन-प्रति दिन घटती चली जा रही थी। पोप तथा अन्य उच्च पादड़ियों को भी चर्च में सुधार करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी और इस प्रकार एक धार्मिक आन्दोलन प्रोटेस्टेन्ट धर्म के विरुद्ध चलाया गया जो केथोलिक धर्मसुधार नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्पेन का बादशाह फिलिप द्वितीय इस धर्मसुधार का कट्टर अनुयायी था।

केथोलिक धर्मसुधार की सफलता के कारण—(क) मार्टिन लूथर की मृत्यु के पश्चात् कोई योग्य नेता न रहा। योग्य नेता के अभाव में प्रोटे-स्टेन्ट धर्मसुधार का उन्नति होना असम्भव था। (ख) प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार कई भागों में विभक्त हो गया था। लूथर के अनुयायी (Lutherans), जान काल्विन के अनुयायी (Calvinists) और ज्वीगिंल के अनुयायी (Zwinglists) इन सबमें गहरा मतभेद था। (ग) प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय रूप को त्यागकर राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया था। (घ) जब तक प्रोटेस्टेन्टों ने विनाशकारी नीति (Destructive Policy) का अवलम्बन किया तब तक उनकी शक्ति का पूरा पूरा ज्ञान न था। लेकिन जब उन्हें निर्माण नीति (Constructive policy) का अवलम्बन करना पड़ा तो उनकी कमजोरियाँ स्पष्ट होने लगीं। (ङ) केथोलिकों के रीति-रिवाजों में जनता की अब अधिक रुचि उत्पन्न हो गई थी। (च) केथोलिकों के पास कई

एक संस्थायें थीं जिनके कार्यों ने जनता में एक बार फिर केथोलिक धर्म के प्रति श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न कर दिये।

पोप के सुधारने की नीति—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक रोम के चर्च में अनेक बुराइयाँ आ गई थीं। अतः पॉल तृतीय (१५३४-१५४६ ई०) ने एक नीति का अनुकरण किया जिसके अनुसार ऊँचे ऊँचे पदों की नियुक्ति करते समय पादड़ियों के धन और वंश की अपेक्षा विद्वता और सदाचार पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। इस नीति के फलस्वरूप सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक अनेक धार्मिक और दूरदर्शी पोप हुए। सन् १६०० ई० तक केथोलिक धर्माध्यक्ष से लेकर पादड़ियों और संन्यासियों तक सुधार हो गया।

कौंसिल ऑफ ट्रेन्ट—पोप के सुधारने की नीति को कौंसिल आफ ट्रेन्ट के कार्यों से अधिक प्रोत्साहन मिला। कौंसिल को अपने कार्यों में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। जर्मनी और स्पेन के केथोलिकों में मतभेद था और प्रोटेस्टेन्टों की सहायता से एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते थे। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी इस कौंसिल ने चर्च में अनेक सुधार किये और इसके कार्यों ने प्राकृतिक रूप से (Materially) केथोलिक धर्म की रक्षा की। इस कौंसिल ने लूथर की बतलाई हुई केथोलिक धर्म की बुराइयों को दूर कर चर्च के वास्तविक सिद्धान्तों की परिभाषाएँ कीं। चर्च के पदों को बेचना बन्द कर दिया गया। पादड़ियों को आज्ञा दी गई कि वे अपने अपने प्रदेशों में रहें। उनको सांसारिक जीवन का त्याग तथा धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य किया गया। उनकी शिक्षा के लिए पाठशालाओं की स्थापना की गई। हस्तपत्र (Indulgences) बेचना बन्द कर दिया गया।

इन्डेक्स और इन्क्वीजिशन—पोप ने इन्क्वीजिशन नामक प्राचीन संस्था का उद्घाटन किया। यह संस्था गुप्त रीति से प्रोटेस्टेन्टों का पता लगाकर उन्हें दण्ड दिया करती थी। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार का फिर से संगठन किया गया। पादड़ियों की एक सूची तैयार की गई और उनको बराबर धार्मिक शिक्षा दी जाने लगी। चर्च की धर्म पुस्तक (Service Book) में भी सुधार किया गया और बाइबिल का अनुवाद लैटिन

Latin) भाषा में किया गया। विधर्मी पुस्तकों की एक सूची (Index) तैयार की गई जिसको कैथोलिकों को पढ़ने की आज्ञा न थी। इन सब सुधारों से पादड़ियों के आचरण को शुद्ध किया गया और उनके संसारिक जीवन तथा धन-लिप्सा को रोका गया।

जेसूट दल—कैथोलिक धर्म की उन्नति के लिये कई एक धार्मिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी जिसमें जेसूट दल प्रमुख था। इस दल के सदस्य जेसूट (Jesuits) कहलाते थे। इगनाशियस लायला (Ignatius Loyala १४९१-१५५६ ई०) ने सन् १५४० ई० में जेसूट दल की स्थापना की थी। वह स्पेन का निवासी था। पोप ने छः वर्ष पश्चात् (सन् १५४६ ई०) उसके विधान को अनुमोदित किया। शिक्षक के रूप में उनकी समता यौरप में कोई नहीं कर सकता था। उनकी विद्वता और पवित्रता ने जनता में कैथोलिकों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी थी। उनको अपने शिक्षण कार्य में विशेष सफलता मिली। इस दल वालों ने पोलैण्ड को जिसने काल्विन-धर्म स्वीकार कर लिया था फिर से कैथोलिक बनाया। इसी प्रकार इस दल ने बवेरिया और दक्षिणी नदरलैण्ड में कैथोलिक धर्म की रक्षा की और आयरलैण्ड में कैथोलिक धर्म की स्थापना में काफी सहायता पहुँचाई। इस दल वालों ने भारत और चीन में भी कैथोलिक धर्म का प्रचार किया। इस प्रकार इस संस्था ने प्रोटेस्टेन्ट धर्म को काफी क्षति पहुँचाई।

प्रश्नोत्तर

1 What do you understand by the term "Counter Reformation"? What were its agencies?

(देखिये—पृष्ठ १६)

2 What do you mean by the Counter Reformation? By what methods was it carried out? What was the extent of its success? ([illegible])

(देखिये—पृष्ठ १६, २०, २१)

3. Write short notes on :—

(a) Council of Trent (b) Index and Inquisition (c) Jesuits.

(देखिये—पृष्ठ २०, २१)

पांचवां पाठ

स्पेन की प्रधानता

(Ascendancy of Spain)

स्पेन की प्रधानता के कारण—स्पेन की प्रधानता सोलहवीं शताब्दी का विषय है। इसके कई कारण थे। स्पेन की सैनिक शक्ति अधिक शक्तिशाली थी। योग्य तथा शिक्षित सैनिकों की कमी न थी। सन् १४९२ ई० में ग्रेनेडा को जीत लेने से उनकी सैनिक शक्ति को अधिक प्रोत्साहन मिला और उनकी बहादुरी का सिक्का अन्य देशों में जम गया। दूसरा मुख्य कारण जो स्पेन को प्रधान बनाने में सफल सिद्ध हुआ वह अमेरिका की खोज थी (१४९२ ई०) जिसके कारण स्पेन वालों को बहुत सा धन प्राप्त हुआ। स्पेन की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी लेकिन अमेरिका से धन आने के कारण स्पेन लम्बे चौड़े युद्धों में भाग लेने में सफल हुआ। तीसरा कारण स्पेन का सम्बन्ध था। स्पेन का सम्बन्ध योरप के अन्य देशों के साथ था जिससे स्पेन अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राज्य विस्तार तथा निरंकुश राजसत्ता स्थापित करने में लगा सका।

चार्ल्स पंचम—चार्ल्स पंचम स्पेन का सबसे प्रतापी राजा हुआ है। उसके शासन काल में सब प्रकार की उन्नति हुई और स्पेन की प्रधानता की नींव डाली गई। चार्ल्स को अपने शासन-काल में जितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा उतना शायद ही किसी राजा को करना पड़ा हो। उसका जन्म नीदरलैण्ड में हुआ था और उसकी शिक्षा भी वहीं हुई थी। वह एक उत्साही, परिश्रमी तथा विचारवान राजकुमार था। उसको अपने शासन-काल में अनेक असफलतायें मिलीं जिसका मुख्य कारण योग्यता का अभाव न था बल्कि समस्याओं की अधिकता थी।

चार्ल्स और फ्रान्सिस—स्पेन और फ्रान्स की शत्रुता के कई कारण थे। (क) फ्रान्स का राजा फ्रान्सिस प्रथम नेपिल्स पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। जिसको लुईस बारहवें ने सन् १५०४ ई० में समर्पण कर दिया

था। (ख) फ्रान्सिस मिलान जीतना चाहता था जो रोम के साम्राज्य में पड़ता था और रोम का सम्राट होने के नाते चार्ल्स को मिलान की रक्षा करना पड़ी। (ग) फ्रान्सिस नीदरलैण्ड में अपना अधिकार जमाना चाहता था। (घ) रोम के सम्राट् के निर्वाचन ने उनकी शत्रुता को व्यक्तिगत रूप दिया।

इटली रणभूमि थी। पोप के सैनिकों की सहायता से स्पेन की सेना ने मिलान का घेरा डाला और उसको जीतने में सफल हुई। विजयी सैनिकों ने फ्रान्स की सेना को आल्प्स पर्वत को पार करने के लिए बाध्य किया और मारसेलीज़ को जीता। फ्रान्सिस जो अभी तक घरेलू झगड़ों में फंसा हुआ था मारसेलीज़ को जीतने में सफल हुआ। फ्रान्सिस ने एक बड़ी भारी भूल की। उसने सेना के एक भाग को स्पेन की फौज का पीछा करने के लिए भेजा और दूसरे भाग को लेकर पेविया नगर का घेरा डाला। उसकी इस भूल से स्पेन वालों को अपनी सेना में सुधार करने का अच्छा अवसर मिला। फरवरी सन् १५२५ ई० को चार्ल्स की फौज ने फ्रान्स वालों पर विजय प्राप्त की। फ्रान्सिस बन्दी बना लिया गया और इस शर्त पर कि वह अपना अधिकार मिलान, नीदरलैण्ड और इटली पर से हटा लेगा और चार्ल्स की बहन से विवाह कर लेगा, मुक्त कर दिया गया। फ्रान्स पहुँचने पर फ्रान्सिस ने सन्धि की शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया और स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। सन् १५२७ ई० में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी जो Sack of Rome के नाम से प्रसिद्ध है। चार्ल्स के सैनिकों ने जो रोम में थे और जिनके पास न तो खाना था और न कोई आज्ञा देने वाला था गदर कर दिया। लेकिन इनमें प्लेग के फैल जाने से इनका कार्य असफल रहा।

रोम के लूट पाट Sack of Rome से केथोलिकों में अशान्ति फैल गई। हेनरी अष्टम ने जो केथोलिक था फ्रान्सिस की सहायता के लिए सेना भेजी। लेकिन फ्रान्सिस अधिक सफल न हो सका और सन् १५२९ ई० में एक सन्धि (Peace of Cambrai) हो गई जिसके अनुसार चार्ल्स का अधिकार नेपिल्स मिलान और नीदरलैण्ड पर सुरक्षित रहा। फ्रान्सिस ने चार्ल्स की बहन से विवाह कर लिया। यह सन्धि अधिक दिनों तक

कायम न रह सकी और शीघ्र ही दोनों में युद्ध छिड़ गया। चार्ल्स को कठिनाईयों में डालने के उद्देश्य से फ्रान्सिस ने स्काटलैण्ड, स्वीडन, डेनमार्क और मुसलमान तुर्क से समझौता कर लिया। सन् १५२६ ई० और सन् १५३८ ई० तथा सन १५४२ और सन् १५४४ ई० के बीच में कई छोटी छोटी लड़ाइयां हुईं। चार्ल्स के राज्य छोड़ देने और फ्रान्सिस की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों ने इस युद्ध को जारी रखा। अन्त में (Cateau-Cambresis, 1559) की सन्धि हुई जिसके अनुसार स्पेन की प्रधानता इटली में स्थापित हो गई और फ्रान्स की सीमा राईन नदी तक निर्धारित हो गयी।

चार्ल्स और मुसलमान तुर्क—फ्रान्स की अपेक्षा चार्ल्स मुसलमान तुर्कों की ओर से अधिक चिन्तित था। मुसलमान तुर्कों ने सुलेमान द्वितीय के नेतृत्व में अपनी शक्ति को अधिक बढ़ा ली थी। काला सागर पर उनका अधिकार हो गया था। अफ्रीका के उत्तरी देशों ने, मिश्र से लेकर अलजीरिया तक, सुलेमान की अधीनता स्वीकार कर ली थी। उनकी शक्ति स्पेन और इटली के लिए भय का कारण बन गयी थी। सन् १५२१ ई० में सुलेमान ने हंगरी पर आक्रमण किया और सन् १५२६ ई० में मोहाकस के युद्ध में हंगरी वालों पर पूर्ण विजय पाया। राजा मारा गया और हंगरी देश की एकता नष्ट हो गयी। चार्ल्स और उसके भाई फरडीनण्ड ने हंगरी पर अपना अधिकार जमाना चाहा परन्तु विफल रहा। सन् १५४७ ई० में चार्ल्स और उसके भाई फरडीनांड को तुर्कों की हंगरी की विजय को स्वीकार करना पड़ा। फरडीनांड ने हरजाना देना स्वीकार किया। सुलेमान जब तक जीवित था स्पेन वालों के लिए भय का कारण बना रहा।

चार्ल्स और इङ्गलैंड—स्पेन और इङ्गलैंड का सम्बन्ध पहले साधारण था। चार्ल्स की चाची Catherine of Aragon हेनरी अष्टम से व्याही थी। हेनरी अष्टम फ्रान्सिस के विरुद्ध चार्ल्स की सहायता करता था लेकिन रोम के लूटपाट (१५२७ ई०) के पश्चात हेनरी ने चार्ल्स की सहायता करना बन्द कर दिया। हेनरी कैथरीन का परित्याग करना चाहता था। इसके कई कारण थे—(क) कैथरीन से कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ था। (ख) कैथरीन

राजनीतिक मामलों में हमेशा हस्तक्षेप करती थी। (ग) इसीसमय हैनरी एनीबौलिन पर जो उसके दरबार में रहती थी मोहित हो गया और उससे प्रेम करने लग गया। हैनरी ने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए पोप से आज्ञा मांगी। चार्ल्स ने पोप को आज्ञा न देने के लिए प्रार्थना की। आज्ञा न मिलने पर हैनरी ने इङ्गलैण्ड की चर्च को रोम के चर्च से अलग कर दिया और स्वयं चर्च का मुख्य अधिष्ठाता हो गया। वूल्जे फ्रान्स से वैवाहिक सम्बन्ध करने के पक्ष में था। परिणाम यह हुआ कि हैनरी ने एनीबोलिन से विवाह कर लिया। वूल्जे अपमानित हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। फ्रान्सिस हताश हो गया। चार्ल्स का प्रयत्न विफल रहा और पोप से इङ्गलैण्ड का सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

चार्ल्स और नीदरलैण्ड—चार्ल्स का जन्म तथा शिक्षा-दीक्षा भी नीदरलैण्ड में हुये थे। अतः नीदरलैण्ड के साथ उसका घना सम्बन्ध था। नीदरलैण्ड वालों की दृष्टि में वह विदेशी न था। वह नीदरलैण्ड में एकात्मक सरकार की स्थापना करना चाहता था। इस उद्देश्य से उसने कई एक कौंसिलों की नियुक्ति की जो राजनीतिक, आर्थिक और न्याय सम्बन्धी बातों की देख-रेख करती थी। उसके ये कार्य नीदरलैण्ड वालों को अप्रिय न थे। नीदरलैण्ड में धर्मसुधार को दबाने में भी चार्ल्स को पूर्णतया सफलता मिली। सन् १५५५ ई० में जब चार्ल्स ने राज्य का त्याग किया तो उसने नीदरलैण्ड में ही शरण लिया।

चार्ल्स की असफलता के कारण—चार्ल्स की असफलता का मुख्य कारण योग्यता का अभाव न था बल्कि समस्याओं की अधिकता थी। जिस समय वह सिंहासनारूढ़ हुआ उस समय कठिनाइयों के बादल मँडरा रहे थे। चार्ल्स को फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा। तुर्कों की शक्ति भय का कारण बनी हुई थी। चार्ल्स का राज्य (Dynastic Empire) था। एकात्मक सरकार का अभाव था। केन्द्रीय सरकार कमजोर थी। नीदरलैण्ड इटली और स्पेन में जो चार्ल्स के अधीन थे, एकता न थी। इसके अतिरिक्त चार्ल्स को धार्मिक, आर्थिक और न्याय सम्बन्धी बातों को भी देख रेख करनी पड़ती थी। जर्मनी में तो उसे आरम्भ से ही प्रोटेस्टेन्टों का सामना करना पड़ा जो उसका पतन चाहते थे। जर्मनी प्रोटेस्टेन्ट धर्म को मानती थी और चार्ल्स कैथोलिक धर्म का अनुयायी था अतः उसे पोप की सहायता पर निर्भर करना पड़ता था। चार्ल्स की इटली

की नीति पोप को अप्रिय थी। इसलिए पोप की सहायता अधिक सफल सिद्ध न हो सकी।

फिलिप द्वितीय—फिलिप द्वितीय चार्ल्स पञ्चम का एक मात्र पुत्र था। उसका जन्म सन् १५२७ ई० में हुआ था और उसके जीवन का अधिकांश भाग स्पेन में ही व्यतीत हुआ था। स्पेन को प्रधान बनाना ही उसके जीवन का मुख्य ध्येय था। इसके अतिरिक्त वह केथोलिक धर्म का कट्टर अनुयायी था और केथोलिक धर्म को सदा ऊँचा देखना चाहता था। चार्ल्स भी केथोलिक धर्म का अनुयायी था लेकिन उसकी धार्मिक भावनायें इतनी प्रबल न थीं जितनी फिलिप की। उसमें काम करने की अदम्य शक्ति थी। उसे लड़ने से अधिक रुचि लिखने में थी। अपने घरेलू जीवन में वह अनुशासन और नियम से रहता था और सबसे प्रेम करता था। राजभक्ति उसकी एक विशेषता थी।

फिलिप और फ्रान्स—जब फिलिप स्पेन के सिंहासन पर बैठा उस समय फ्रान्स में गृहयुद्ध (Civil war) चल रहा था। फिलिप फ्रान्स में केथोलिक धर्म को फैलाने के उद्देश्य से हैनरी (Duke of Guise) से सन् १५८५ ई० में एक सन्धि कर ली जिसके अनुसार फिलिप ने हैनरी को सहायता देने का वचन दिया। यह गृह-युद्ध तीन हैनरियों का युद्ध था। हैनरी तृतीय जो कैथरीन डी मैडीसी का पुत्र और फ्रान्स का राजा था, हैनरी (Duke of Bourbon) जो नेवारे का राजा और फ्रान्स का उत्तराधिकारी था, और हैनरी (Duke of Guice)। हैनरी (Duke of Guise) कट्टर केथोलिक था और हैनरी (of Navarre) और हैनरी (of France) क्रमशः प्रोटेस्टेन्ट और नरम Moderate केथोलिक दल का प्रतिनिधित्व करते थे। सन् १५८८ ई० और सन् १५८९ ई० में हैनरी (Of France) और हैनरी (Of Guise) क्रमशः मार डाले गये। हैनरी (King of Navarre) ने जो फ्रान्स के सिंहासन पर बैठा स्पेन के विरुद्ध युद्ध जारी रखा। अन्त में वरविन्स की सन्धि से इस युद्ध का अवसान हुआ। इस प्रकार फिलिप का प्रयत्न विफल रहा। फिलिप की असफलता ने फ्रान्स की स्वतन्त्रता, स्वदेश भक्ति और राष्ट्रीय स्वाधीनता को और भी दृढ़ कर दिया।

फिलिप और मुसलमान तुर्क---सुलेमान द्वितीय की मृत्यु के बाद तुर्क मुसलमानों ने हंगेरी पर अपने अधिकार को और भी दृढ़ कर लिया। सन् १५७० ई० में तुर्कों की एक जहाज ने साइप्रस जीत लिया और उनकी शक्ति भूमध्य सागर में पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत हो गई। माल्टा और क्रीट ही दो बन्दरगाह भूमध्य सागर में रह गये थे जो इसाइयों के अधीन थे। ऐसी स्थिति में एक संघ बनाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य इटली की रक्षा करना था। लेपान्टो के युद्ध में तुर्क मुसलमान बुरी तरह परास्त हुए और उनके सभी जहाज या तो डुबा दिये गये या नष्ट कर दिये गये। इस युद्ध ने तुर्कों की समुद्री शक्ति को काफी धक्का पहुँचाया।

फिलिप और इंग्लैण्ड--फिलिप द्वितीय मेरी (Queen of Scotland) का पति था। वह मेरी को इंग्लैण्ड की उत्तराधिकारिणी समझता था। इसलिए वह इंग्लैण्ड पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। उसने एलिजबेथ के विरुद्ध कई एक षड्यन्त्र रचा जिसका ध्येय मेरी को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठाना था। वह एलिजबेथ के साथ विवाह करना चाहता था लेकिन एलिजबेथ ने साफ इन्कार कर दिया। बेबिंगटन के षड्यन्त्र के पकड़े जाने पर जिसमें मेरी का हाथ था मेरी को प्राण दण्ड दिया गया। सभी प्रयत्नों में असफल होने पर फिलिप ने, एक जहाजी-बेड़े को जो "अजय आर्मेडा" के नाम से प्रसिद्ध है इंग्लैंड पर आक्रमण करने के लिए भेजा। फिलिप का यह भी प्रयत्न विफल रहा और इंग्लैंड का स्पेन से भय जाता रहा।

फिलिप और नीदरलैंड---फिलिप नीदरलैंड की नीति में असफल रहा। नीदरलैंड में वह अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहता था। लेकिन वह नीदरलैंड की राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्थिति से भलीभाँति परिचित न था। जिसके कारण जब नीदरलैंड वालों ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया तो वह उनके विद्रोह को दबा न सका और नीदरलैंड जैसे धनी देश से उसे हाथ धोना पड़ा।

नीदरलैंड का स्वतन्त्र होना---नीदरलैंड में विद्रोह होने के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और व्यक्तिगत कारण थे।

नीदरलैंड सत्तरह छोटे-छोटे राज्यों का देश है। प्रत्येक के शासन-विधान एक दूसरे से भिन्न थे। फिलिप उनकी भिन्नता को दूर करके नीदरलैंड में एकात्मक राज्य की स्थापना करना चाहता था। इस उद्देश्य से उसने कई एक राज्यों को तथा शहरों को उनके अधिकारों से वंचित कर दिया इसके अतिरिक्त फिलिप सन् १५५६ के बाद नीदरलैंड कभी नहीं गया और नीदरलैंड के शासन भार को स्पेन वालों पर रख छोड़ा। इन सब कारणों से नीदरलैंड वालों में अशान्ति की लहर फैल गई।

चार्ल्स पंचम ने अपने शासनकाल में नीदरलैंड पर कई कर लगाये थे। इन करों को फिलिप द्वितीय ने और अधिक बढ़ाया। इसके अतिरिक्त नीदरलैंड के व्यापार तथा वाणिज्य पर कई प्रकार के नियन्त्रण लगाये गये। ये नियन्त्रण और कर नीदरलैंड की आर्थिक उन्नति में बाधायें थीं।

नीदरलैंड वाले अधिकतर कैथोलिक धर्म के अनुयायी थे। लेकिन काल-विन-धर्म का प्रभाव दिन प्रति दिन बढ़ता चला जा रहा था और प्रायः सभी उत्तरी प्रान्तों ने इस धर्म को स्वीकार कर लिया था। लेकिन फिलिप द्वितीय कैथोलिक धर्म को फैलाने पर तुला हुआ था। उसने पादड़ियों की संख्या बढ़ा दी और अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए क्रूरतापूर्वक—एक संस्था को (Inquisition) प्रयोग में लाया जिसके परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेन्ट भावनाओं का प्रसार अधिक होने लगा और अशान्ति की लहर अधिक तेजी के साथ लहराने लगी।

फिलिप द्वितीय स्वयं नीदरलैंड वालों को अप्रिय था। उसका जन्म तथा शिक्षा-दीक्षा स्पेन में हुआ था। अतः वह नीदरलैंड वालों की दृष्टि में विदेशी था। फिलिप स्पेन की भाषा को छोड़कर अन्य कोई भाषा नहीं जानता था। इसके अतिरिक्त वह नीदरलैंड को स्पेन की उन्नति का साधन बनाना चाहता था।

नीदरलैंड वालों ने इसके धर्म-संस्था (Inquisition) और स्पेन की सेना की उपस्थिति के विरुद्ध आन्दोलन किया। फिलिप ने उनको शक्ति से शांत करने का प्रयत्न किया। लेकिन वह अपने वचनों का पालन न कर सका। नीदरलैंड के प्रोटेस्टेन्टों ने, फिलिप के वचन भंग करने तथा कैथोलिक धर्म फैलाने के प्रयत्न पर, विद्रोह कर दिया। गिरजाघरों की मूर्तियाँ तोड़ दी गयीं और कई एक

गिरजाघर नष्ट भी कर दिये गये। फिलिप ने इनके विरुद्ध सन् १५६७ में आल्वा को भेजा। आल्वा ने एक कौंसिल की स्थापना की जिसका मुख्य कार्य विधर्मियों को पकड़कर दंड देना था। यह कौंसिल आगे चलकर "खूनी कौंसिल" के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त आल्वा ने नीदरलैंड पर कई कर लगाये जो नीदरलैंड की आर्थिक उन्नति के बाधक हुए। फिलिप के अत्याचारों के विरुद्ध दक्षिणी नीदरलैंड के कैथोलिक और उत्तरी नीदरलैंड के प्रोटेस्टेन्ट एक हो गये और सम्पूर्ण देश ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह का नेता विलियम (William the Silent) था जो जर्मनी का निवासी था। उसके प्रयत्न विफल रहे और उसकी सेना को आल्वा ने सरलतापूर्वक नष्ट कर दिया। परन्तु आल्वा अपने उद्देश्य में सफल न हुआ और उसके स्थान पर डान जान आफ़ आस्ट्रिया भेजा गया जो प्रोटेस्टेन्टों के साथ सन्धि करने के प्रयत्न में विफल रहा। डान जान आफ आस्ट्रिया के पश्चात् अलेक्जेंडर फार्नेस ड्यूक आफ पार्मा गवर्नर होकर आया। वह अपने कूटनीति में सफल हुआ। उसने उत्तरी और दक्षिणी प्रान्तों में फूट का बीज बोया। इस प्रकार नीदरलैण्ड दो भागों में विभाजित हो गया। एक भाग ने स्पेन का साथ दिया और स्पेनिश नीदरलैण्ड कहलाया। इसे आजकल बेल्जियम कहते हैं। दूसरे भाग ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया और आगे चलकर हालैण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बेल्जियम को हालैण्ड की अपेक्षा अधिक कठिनाईयों का सामाना करना पड़ा।

नीदरलैण्ड वालों की सफलता के कई कारण थे। (क) नीदरलैण्ड वालों में एकता थी। (ख) नीदरलैण्ड की बनावट विचित्र थी। नहरों की अधिकता थी। खतरे के समय बांधों को काट देते थे जिनसे आक्रमणकारियों को असुविधा होती थी। (ग) फिलिप की सम्पूर्ण शक्ति प्रयुक्त न थी। (घ) इंगलैण्ड फ्रान्स, जर्मनी इत्यादि देशों के प्रोटेस्टेन्टों ने नीदरलैण्ड वालों की सहायता की। (ङ) फिलिप एक समय में कई समस्याओं को सुलझाना चाहता था।

फिलिप की असफलता के कारण—(क) एक समय में वह कई समस्याओं को सुलझाना चाहता था। इसने इंग्लैण्ड और फ्रान्स से व्यर्थ का झगड़ा

मोल लिया था। अगर उसने अपनी पूर्ण शक्ति को एक ओर लगाया होता तो उसे अधिक सफलता मिली होती। (ख) वह एक कट्टर केथोलिक था। वह स्पेन में ही नहीं बल्कि इंगलैण्ड, फ्रान्स, पोलैण्ड और स्कान्डीनेविया में केथोलिक धर्म को ऊंचा देखना चाहता था जब कि इन देशों में प्रोटेस्टेन्ट भावनाओं का प्रसार तेजी के साथ हो रहा था। (ग) उसके असफल होने का मुख्य कारण नीदरलैण्ड का विद्रोह था।

स्पेन का पतन—ऐसी स्थिति में स्पेन का पतन होना स्वाभाविक था। स्पेन की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। स्पेन की आय दिन प्रति दिन घटती चली जा रही थी। नीदरलैण्ड वालों ने कर देना बन्द कर दिया था। इटली के राज्यों ने भी खर्च देना बन्द कर दिया था। अमेरिका की खानों से जो सोना-चांदी आती थे उसे बीच ही में इंग्लैण्ड के नाविक लूट लिया करते थे। स्पेन की अधिकांश भूमि चर्च की थी जिस पर किसी प्रकार का कर लगाया नहीं जा सकता था। यहूदियों (Jews) और हबशियों (Moors) पर जो व्यवसायी और उद्योगी थे, धार्मिक अत्याचार होने से वे स्पेन छोड़कर अन्य स्थानों पर जा बसे। इस प्रकार स्पेन का आर्थिक दिवाला निकल रहा था। प्रोटेस्टेन्टों को देश के प्रति कोई सहानुभूति न थी। केन्द्रीय सरकार शक्तिहीन थी। प्रान्तों की शक्ति अधिक होने के कारण वे प्रायः केन्द्रीय सरकार की आज्ञाओं का अवहेलना किया करते थे। एकात्मक सरकार का अभाव था।

प्रश्नोत्तर

1. Examine the causes of the greatness and decay of Spain.

(*Calcutta*. 1934)

(देखिये—पृष्ठ २२, २७)

2. "Charles V was the central figure in a very critical period of Spanish history." Explain.

(*Benares*. 1950)

(देखिये—पृष्ठ २२, २३, २४, २५)

3. Describe the chief events in the reign of Phillip II of

Spain. What in your opinion were the causes of the decline of Spain . (*Benares. 1949; Calcutta. 1935*)

(देखिये—पृष्ठ २६, २७, २८)

4. Sketch the career of Phillip II of Spain. (*Calcutta. 1915*)

(देखिये—प्रश्न ३ का उत्तर)

5. Account for the causes of rivalry between France and Spain in the sixteenth and seventeenth centuries. (*Benare, 1948*)

(देखिये—पृष्ठ २७, २८,)

6. How for was the revolt of the Netherlands due to causes other than religious . Attempt an estimate of the services of 'William the silent' to the cause of Dutch Independence. (*Calcutta.* 1919)

(देखिये—पृष्ठ २७, २८, २९)

7. To what causes would you attribute the success of the Dutch in their struggle for Independence (*Calcutta*, 1924)

(देखिये—प्रश्न ६ का उत्तर)

छठां पाठ

इङ्गलैण्ड में ट्यूडर काल

(Tudor Age in England)

हेनरी सप्तम—सन् १४८५ में हेनरी सप्तम (Henry VII) इंगलैण्ड के राज्य सिंहासन पर बैठा । वह एक विद्वान और दूरदर्शी राजा था । वह इंगलैण्ड की दशा से भली-भाँति परिचित था । वह इंगलैण्ड में एक शक्तिशाली साम्राज्य का निर्माण करना चाहता था ।

हेनरी को गद्दी से वंचित करने के लिये कई झूठे दावेदार खड़े किए गये । सन् १४८६ में लार्ड लावेल ने विद्रोह किया लेकिन असफल रहा । इसके बाद लेम्बर्ट सिमनल नामक एक छोटे बालक को एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल आफ वारविक बतलाया गया और आयरलैण्ड के डबलिन नगर का राजा घोषित कर इंगलैण्ड पर आक्रमण कर दिया गया । देश में अशान्ति फैल गई । लोगों को शान्त करने के लिये हेनरी ने तुरन्त वास्तविक अर्ल आफ वारविक को टावर (Tower) से निकाल कर प्रजा को दिखा दिया । परिणाम यह हुआ कि लेम्बर्ट सिमनल का प्रयत्न विफल रहा । सन् १४९२ में परकिन वारबिक नामक एक दूसरा झूठा दावेदार खड़ा किया गया । इसको एडवर्ड चतुर्थ का छोटा पुत्र बतलाया गया । फ्रान्स और आयरलैण्ड से उसे विशेष सहायता मिली । अन्त में वह बन्दी बना लिया गया और थोड़े समय पश्चात् हेनरी ने उसका वध करा दिया ।

बैरन्स बड़े शक्तिशाली थे । प्रत्येक के पास सैनिक होते थे । प्रत्येक बैरन के सैनिक एक विशेष प्रकार की वर्दी पहनते थे जो प्रायः उनके वंशीय चिन्ह होते थे । ये सैनिक प्रजा को कष्ट पहुँचाते थे और पकड़े जाने पर उनके स्वामी उन्हें अदालत से छुड़ा लाते थे । हेनरी ने उनके विरुद्ध एक

नियम (Statute against Livery and Maintenance) पास किया जिसके अनुसार उनके सैनिक विशेष प्रकार की वर्दी नहीं पहन सकते थे। और न खान पान ही कर सकते थे। इस नियम के विरुद्ध जाने वालों को दण्ड देने के लिये हेनरी ने एक विशेष न्यायालय (Court of Star Chamber) स्थापित किया इसमें वही लोग जज होते थे जिनका बैरनों से न तो कोई सम्बन्ध था और न उन्हें किसी प्रकार का भय था। वूल्जे इस न्यायालय का प्रधान था।

विदेशी आक्रमण से इंगलैण्ड की रक्षा करने के लिये उसने अन्य देशों से मित्रता करना आरम्भ किया। उसने अपनी पुत्री मारगरेट का विवाह स्काट-लैण्ड के बादशाह जेम्स चतुर्थ से किया। सन् १५०१ में स्पेन की राजकुमारी कैथरीन आफ अरागान राजकुमार आर्थर से ब्याही गई। दुर्भाग्यवश आर्थर का देहान्त हो गया। स्पेन से सम्बन्ध बनाये रखने के लिये हेनरी ने कैथरीन का विवाह अपने द्वितीय पुत्र से कर दिया। हेनरी शान्ति का प्रेमी था। इसलिये उसने फ्रान्स के बादशाह चार्ल्स अष्टम से सन् १४९२ में एटाप्ले की सन्धि की। सन् १४९६ में आस्ट्रिया के सम्राट मैक्सिमिलियन से उसने व्यापारिक सन्धि की। सन् १५०६ में उसने स्पेन के बादशाह फिलिप द्वितीय से एक दूसरी सन्धि की जिसके द्वारा इंगलैण्ड को अधिक व्यापारिक सुविधायें प्राप्त हुई। सन् १४९४ में पायनिंग एक्ट पास किया गया जिसके द्वारा आयरलैण्ड की पार्लियामेन्ट इंगलैण्ड की पार्लियामेन्ट के अधीन हो गई। हेनरी के शासन काल में, इंगलैंड ने सामुद्रिक यात्राओं में भी भाग लिया। जान केबाट ने लैब्रेडर और न्यूफाउन्डलैंड का पता लगाया।

इस प्रकार "हेनरी सप्तम के शासनकाल में पुरानी बुराइयाँ दूर की गई और आगामी उन्नति के लिये बीजारोपण किया गया।"

हेनरी अष्टम—सन् १५०९ में हेनरी अष्टम इङ्गलैंड का शासक हुआ। वह प्रजा का प्रिय बनना चाहता था। इस विचार से उसने अपने पिता के मन्त्रियों को जिनमें एम्पसन और डडली मुख्य थे मरवा डाला। उसने अपने पिता की नीति का अनुसरण किया। उसने अपनी परराष्ट्र नीति में शक्ति-

सन्तुलन (Balance of Power) की नीति को अपनाया। सन् १५१० में जब जूलियस द्वितीय ने फ्रान्सीसियों को इटली से मार भगाने के लिये (Holy League) की स्थापना की थी तो हेनरी ने उसका समर्थन किया। सन् १५१२ और सन् १५१३ में गिनी की ओर सेना भेजी गयी लेकिन कोई विशेष सफलता प्राप्त न हुई। सन् १५१३ में अंग्रेजों ने ग्वीन गेट नामक स्थान पर फ्रान्सीसियों को एडी के युद्ध (Battle of Spurs) में पराजित किया। सन् १५१४ में हेनरी (Holy League) से अलग हो गया और वूल्जे के कहने पर फ्रान्स से सन्धि कर लिया। हेनरी केले के पास बड़े धूम-धाम से फ्रान्सिस प्रथम से मिला। उनके मिलने का स्थान (Field of the Cloth of Gold) के नाम से प्रसिद्ध है। कैथरीन के दबाव देने पर हेनरी ने चार्ल्स पञ्चम का साथ दिया। वूल्जे इस मित्रता के विरुद्ध था। सन् १५२५ में फ्रान्सिस प्रथम पेविया के युद्ध में पराजित हुआ। रोम के लूटपाट के पश्चात् हेनरी ने चार्ल्स की सहायता करना बन्द कर दिया और फ्रान्सिस की सहायता के लिये सेना भेजा। इस प्रकार परराष्ट्र नीति में शक्ति-सन्तुलन की नीति का सूत्रपात्र हुआ।

कैथरीन के परित्याग के प्रश्न को लेकर इङ्गलैंड में धर्मसुधार का जन्म हुआ। सुधार पार्लियामेन्ट ने कई नियम पास किये जिससे पोप का सम्बन्ध विच्छेद हो गया। हेनरी ने मठों का दमन किया जिससे उसे पर्याप्त धन प्राप्त हुआ। सन् १५३४ में (Treason Act) पास किया गया जिसके अनुसार रचनात्मक कार्य करने वालों को दंड दिया जाता था। अतः राजा की धार्मिक और राजनीतिक शक्तियाँ बढ़ गईं। जनता में भी स्वतन्त्र भावों की उद्भावना हुई। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिये सुविधा उत्पन्न हो गई। राष्ट्रीय भावों की प्रबलता से देश उन्नतिशील हो गया।

एडवर्ड षष्ठम—हेनरी अष्टम की मृत्यु के बाद एडवर्ड षष्ठम (१५४७-५३) इङ्गलैंड का बादशाह हुआ। उसका राज्यकाल धर्मसुधार की उन्नति के लिये प्रसिद्ध है। केथोलिक धर्म की रही सही प्रभाव का भी अन्त हो गया। सन् १५४९ में एक प्रथम प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की गई और (Act of Uniformity) के अनुसार सब गिर्जों में उसी का प्रयोग करने की आज्ञा

दी गई। सन् १५५२ में द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की गई। सन् १५५३ में उसने एक नया राजनियम (Statute of 42 Articles) भी जारी कराया जिसमें प्रोटेस्टेन्ट चर्च के प्रायः सभी सिद्धान्त सम्मिलित थे। नये धर्मसुधार के सिद्धान्तों को न मानने वालों को कड़े कड़े दंड दिये जाते थे। इस प्रकार इङ्गलैंड में प्रोटेस्टेन्ट धर्म की पूर्ण रीति से संस्थापना हो गयी। सन् १५५३ में एडवर्ड षष्ठम की मृत्यु हो गई।

मेरी ट्यूडर—सन् १५५३ ई०में मेरी ट्यूडर का राज्याभिषेक हुआ। वह केथोलिक धर्म की कट्टर पक्षपातिका थी और देश को फिर से केथोलिक बनाना चाहती थी। एडवर्ड षष्ठम की प्रार्थना-पुस्तक हटा दी गई और हैनरी अष्टम के ६ धाराओं वाले नियम का पुनः प्रचार हुआ। मेरी ने पोप से क्षमा माँगी और पोप के प्रतिनिधि को इंग्लैंड में आने के लिये निमन्त्रण भेजा। प्रोटेस्टेन्ट पादड़ियों के स्थान पर केथोलिक पादड़ियों की नियुक्ति की गई। प्रोटेस्टेन्ट नेताओं को प्राण दंड दिया गया। सन् १५५४ ई० में मेरी ट्यूडर ने स्पेन के केथोलिक सम्राट चार्ल्स पञ्चम के पुत्र फिलिप से विवाह कर लिया। सन् १५५७ ई० में कैले पर फ्रान्स का अधिकार हो गया जिससे देश को एक बड़ी भारी हानि पहुँची। कैले के निकल जाने से मेरी को अत्यन्त दुःख हुआ और सन् १५५८ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

एलिजबेथ—मेरी ट्यूडर की मृत्यु के पश्चात् उसकी बहन एलिजबेथ सन् १५५८ ई०में इङ्गलैंड के राज्यसिंहासन पर बैठी। उसके सामने दो बड़ी समस्यायें थी धार्मिक और विदेशी। जैसा आगे बतलाया जा चुका है ऐंग्लिकन चर्च की स्थापना करके एलिजबेथ ने धार्मिक समस्या को सुलझाया। (Act of Supremacy) के द्वारा रानी धार्मिक और राजनीतिक मामलों में प्रधान हो गई। एडवर्ड षष्ठम के ४२ धाराओं को घटाकर ३९ कर दिया गया। नियम के विरुद्ध जाने वालों को दंड देने के लिये एक न्यायालय (Court of High Commission) की स्थापना की गई।

एलिजबेथ को अपनी परराष्ट्र नीति में स्काटलैंड, आयर्लैंड, फ्रान्स और स्पेन का सामना करना पड़ा। स्काटलैंड की रानी मेरी स्टुअर्ट को इङ्गलैंड की उत्तराधिकारिणी समझती थी और सिंहासन पर बैठने के अभिप्राय से एलिजबेथ

के विरुद्ध कई एक षड्यन्त्र रचा लेकिन एलिजबेथ की सतर्कता के सामने उसकी दाल न गली। अन्त में बैबिंगटन का षड्यन्त्र पकड़ा गया जिसमें मेरी का हाथ था। अतः मेरी बन्दी बना ली गई और सन् १५८७ ई० में वध कर दी गई। इस प्रकार स्काटलैंड से भय जाता रहा। एलिजबेथ के राज्य-काल में जिस समय रानी को पोप ने ईसाई धर्म से पतित घोषित कर दिया था, आयरलैंड के कथोलिकों ने एक भयङ्कर विद्रोह खड़ा कर दिया। अर्ल आफ एक्सेस का प्रयत्न विफल रहा। अर्ल आफ एक्सेस के पश्चात् एलिजबेथ ने लार्ड माउंटजुआय को आयरलैंड भेजा जिसने वहाँ जाकर विद्रोह को शान्त किया। एलिजबेथ को विशेषकर फ्रान्स और स्पेन से भय था। लेकिन फ्रान्स और स्पेन में शत्रुता थी जिससे वे सम्मिलित होकर इङ्गलैंड पर आक्रमण नहीं कर सकते थे। इसके अतिरिक्त इन दोनों देशों के प्रोटेस्टेन्टों ने विद्रोह कर रखा था। एलिजबेथ गुप्तरूप से प्रोटेस्टेन्टों की सहायता करती रही जिससे वे अपने घरेलू झगड़ों में फँसे रहे और इङ्गलैंड के विरुद्ध कोई कारर्वाई न कर सके। अन्त में फ्रान्स ने इङ्गलैंड से सन्धि कर ली। स्पेन की शत्रुता दिन प्रति दिन बढ़ती गई और सन् १५८८ ई० में एक जहाजी बेड़ा जो "अजय आर्मेडा" के नाम से प्रसिद्ध है, इङ्गलैंड के विरुद्ध भेजा गया। फिलिप द्वितीय का प्रयत्न विफल रहा और आर्मेडा बुरी तरह परास्त हुआ। आर्मेडा की पराजय से इङ्गलैंड की महत्ता की नीव पड़ी और योरपीय राजनीतिक क्षेत्र में अब स्पेन का मान न रहा।

एलिजबेथ के राज्य काल में सामाजिक और आर्थिक उन्नति का भी बीजारोपण किया गया। सब प्रकार के उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन दिया गया। विलासिता की वस्तुओं में वृद्धि हुई। सन् १६०१ ई० में दरिद्र नियम पास किया गया जिसके अनुसार जो काम करने के योग्य थे उन्हें काम दिया गया और जो काम करने के योग्य न थे उनको राजकीय सहायता दी गई। इस काल में साहित्य की भी उन्नति हुई। स्पेन्सर, शेक्सपीयर, बेकन, रिचार्ड हूकर, बेनजानसन आदि विद्वानों का जन्म भी इसी काल में हुआ था। देशभक्ति और व्यक्तित्व इस काल के साहित्य की विशेषताएँ थीं। इस काल

में अंग्रेजी साहित्य की जितनी उन्नति हुई उतनी किसी भी जाति के साहित्य में नहीं हुई। इन सब कारणों से एलिजबेथ के युग को स्वर्ण-युग कहते हैं।

प्रश्नोत्तर

1. How did Henry VII establish a strong monarchy in England ? Explain with special reference to his home and foreign policy.

(देखिये पृष्ठ—३२, ३३, ३६)

2. Discuss the foreign policy of Henry VIII.

(देखिये पृष्ठ—३३-३४)

3. By what measures was the work of Protestantism completed in England during the brief reign of Edward VI ?

(देखिये पृष्ठ—३४)

4. What did Mary do to restore Catholicism in England ?

(देखिये पृष्ठ—३५)

5. Why is the reign of Queen Elizabeth regarded as the Golden Age in British history ?

(देखिये पृष्ठ—३६)

सातवां पाठ

तीस-वर्षीय युद्ध

(Thirty-Years War)

जर्मनी की स्थिति—१७ वीं शताब्दी में फ्रान्स अपने गृह-युद्ध के कारण शक्तिहीन हो गया था। जर्मनी में पूर्ण शान्ति थी। चार्ल्स पञ्चम के पश्चात् जर्मनी के जो शासक हुए वे प्रायः धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते थे। ऐसी स्थिति में प्रोटेस्टेन्ट धर्म ने काफी उन्नति कर ली थी। लेकिन केथोलिक धर्मसुधार उनकी उन्नति में रोड़ा था। सम्राट रूडाल्फ द्वितीय ने धार्मिक विषयों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता देने की नीति को त्याग कर केथोलिकों को प्रोत्साहित किया। केथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों में विषमता बढ़ती गई। प्रोटेस्टेन्टों ने अपनी रक्षा के लिये एक संस्था स्थापित किया जिसका प्रधान फ्रेड्रिक (Frederick, Elector of Palatinate) था। केथोलिकों ने देखा देखी एक संघ (Catholic League) बनाया जिसका नेतृत्व बवेरिया का मैक्सिमिलियन कर रहा था। केथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों की शत्रुता दिन प्रति दिन बढ़ती गई और अन्त में सन् १६१८ ई० में जर्मनी में एक धार्मिक युद्ध आरम्भ हुआ जो योरप के इतिहास में तीस-वर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

तीस वर्षीय युद्ध के कारण—तीस वर्षीय युद्ध के कई कारण थे। (क) यह आशा की गई थी कि आगसवर्ग की सन्धि (१५५५) केथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों के झगड़े को सुलझाने में सफल होगी लेकिन इस सन्धि में तीन बड़ी त्रुटियाँ थीं। पहला धार्मिक स्वतन्त्रता शासकों को दी गई थी। जनता इस अधिकार से वंचित थी। दूसरा इस सन्धि ने केवल केथोलिक धर्म और लूथर धर्म को स्वीकार किया था। कालविन धर्म का प्रभाव जर्मनी में अधिक था। तीसरा, Ecclesiastical

Reservation के मामलों में केथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों में सदैव झगड़ा हुआ करता था। प्रोटेस्टेन्ट शासकों ने केथोलिकों की सम्पत्ति को हड़प लेने की नीति को जारी रखा। केथोलिक जो प्रोटेस्टेन्ट होते थे अपने चर्च की भूमि को अपनी निजी सम्पत्ति के रूप में परिणत कर लेते थे। इसलिये आग्स-बर्ग की सन्धि को सुधारने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी। (ख) इस युद्ध के राजनीतिक कारण भी थे। फरडीनाण्ड द्वितीय जर्मनी में अपनी शक्ति दृढ़ करना चाहता था। वह जर्मनी की धार्मिक अशान्ति को अपने उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनाना चाहता था। जर्मनी लगभग साढ़े तीन सौ राज्यों में विभाजित था और प्रत्येक के शासक स्वतन्त्र होना चाहते थे। प्रोटेस्टेन्ट आन्दोलन से उनकी शक्ति काफी बढ़ गई थी और फरडीनाण्ड द्वितीय के अधीन रहना उन्हें असह्य था। विशेषकर प्रोटेस्टेन्ट शासक सम्राट के घोर शत्रु थे। इसलिए सम्राट उनकी शक्ति को केथोलिक संघ की सहायता से कुचलना चाहता था। जिसके कारण उन्होंने इस युद्ध में सक्रिय भाग लिया। (ग) बोहेमिया के निवासी अधिकतर प्रोटेस्टेन्ट थे और फरडीनाण्ड की धार्मिक नीति उन्हें अप्रिय थी। जब प्राग में एक प्रोटेस्टेन्ट चर्च नष्ट किया गया तो इस धार्मिक अशान्ति ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

तीस वर्षीय युद्ध, एक योरपीय युद्ध—बोहेमिया का प्रोटेस्टेन्ट विद्रोह धीरे धीरे स्पेन, डेनमार्क, स्वीडन, जर्मनी और फ्रान्स में फैलता हुआ एक योरपीय युद्ध के रूप में परिणत हो गया।

बोहेमिया—बोहेमिया तीस-वर्षीय युद्ध की जन्मभूमि थी। प्रोटेस्टेन्ट चर्च के नष्ट किये जाने पर अब प्रोटेस्टेन्ट निवासियों ने बगावत का झंडा खड़ा किया तो सम्राट फरडीनाण्ड द्वितीय ने बवेरिया के सम्राट मैक्सिमिलियन से जो केथोलिक संघ का प्रधान था, सहायता माँगा। फ्रेड्रिक को अपने ससुर जेम्स प्रथम और उत्तरी जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों से विशेष आशा थी। लेकिन फ्रेड्रिक की यह आशा उसके पराजय का मुख्य कारण सिद्ध हुई। जेम्स प्रथम पार्लियामेन्ट से झगड़ा हो जाने के कारण और जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमार जान जार्ज (Elector of Saxony)

से विशेष स्वीकृत पाने की आशा में फ्रेड्रिक की सहायता न कर सके। सन् १६२० ई० में वाइट हिल के युद्ध में फ्रेड्रिक को करारी हार खानी पड़ी। फ्रेड्रिक भागा और उसे अपने पद तथा सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ा। विद्रोहियों के नेताओं की सम्पत्ति जब्त कर ली गई और उन्हें प्राण दंड दिया गया। बोहेमिया में प्रोटेस्टेन्ट धर्म अवैध घोषित कर दिया गया। इस युद्ध ने अन्य प्रोटेस्टेन्ट धर्मावलम्बियों में चेतना पैदा कर दी। जेम्स प्रथम ने अपने दामाद की सहायता के लिये एक सेना भेजी जो असफल रही।

स्पेन—फिलिप चतुर्थ जो सन् १६२१ ई० में स्पेन का बादशाह हुआ पलाटिनेट में सफलता पाने पर हालैंड पर भी विजय प्राप्त करना चाहता था। इसलिए डच के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की गई। फ्रान्स और इङ्गलैंड ने हालैंड का साथ दिया। ब्राजिल से डच भगा दिये गये। सन् १६२५ ई० में अंग्रेजों का काडीज जीतने का प्रयत्न विफल रहा। इसी समय ब्रेडा को भी स्पेन वालों ने जीत लिया। इन सफलताओं से उत्तरी जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों में भय पैदा हो गया।

डेनमार्क—फ्रान्स और स्वीडन जर्मनी के मामलों में हस्तक्षेप करना चाहते थे लेकिन फ्रान्स अपने घरेलू झगड़ों के कारण और स्वीडन, पोलैंड से युद्ध हो जाने के कारण जर्मनी के प्रोटेस्टन्टों की सहायता न कर सके। अतः जर्मनी के प्रोटेस्टेन्टों ने डेनमार्क के बादशाह क्रिश्चन चतुर्थ से सहायता के लिये प्रार्थना की। क्रिश्चन चतुर्थ ने सहायता देना स्वीकार किया। सन् १६२५ में डेनमार्क की सेना ने जर्मनी पर आक्रमण किया, टिली और वालेन्स्टेन की सहायता से फरडीनांड द्वितीय की सेना ने सन् १६२६ में डेनमार्क की सेना को लूटर के युद्ध में परास्त किया। क्रिश्चन चतुर्थ की असफलताओं ने उसे ल्यूबेक की सन्धि को स्वीकार करने के लिये बाध्य किया जिसके अनुसार खोये हुये प्रदेशों पर उसका पुनः अधिकार हो गया और उसने जर्मनी के मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। सफलताओं के मिलने पर कैथोलिकों ने फरडीनांड द्वितीय को एक घोषणा पत्र (Edict of Restitution) पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया जिसका आशय

था कि वे धार्मिक सम्पत्तियाँ जो आग्सवर्ग की सन्धि के पश्चात् प्रोटेस्टेन्टों के अधिकार में चली गई हों, कैथोलिक चर्च को वापस लौटा दी जायँ। इस घोषणापत्र से लूथर के अनुयायी अपने मतभेदों को भूल गये और कैथोलिकों के विरुद्ध कालविन के अनुयाइयों से जा मिले। इस प्रकार स्थायी शान्ति की आशा जाती रही।

स्वीडन—इस समय स्वीडन का राजा गस्टावस अडाल्फस था। गस्टावस अडाल्फस ने प्रोटेस्टेन्टों का पक्ष लेकर तीस-वर्षीय युद्ध में हस्तक्षेप किया। उसके दो प्रधान उद्देश्य थे। पहला, वह बाल्टिक सागर पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था। इसी कारण से वह पोलैण्ड से युद्ध कर रहा था। दूसरा, वह प्रोटेस्टेन्ट धर्म का कट्टर पक्षपाती था और वह सदा प्रोटेस्टेन्ट धर्म को ऊँचा देखना चाहता था। कार्डीनल रिचलू के आदेशानुसार फ्रान्स ने गस्टावस अडाल्फस से सन्धि कर ली और स्वीडन को सहायता देना स्वीकार किया। रिचलू स्पेन को नीचा दिखलाना चाहता था।

कैथोलिक संघ ने मगडेबर्ग को जीत लिया और उसके निवासी निर्दयता पूर्वक कत्ल कर दिये गये। जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमार जो अभी तक अडाल्फस से अलग थे मिल गये। गस्टावस अडाल्फस ने टिलीको सन् १६३१ ई० में लिपजिग के निकट ब्रीटेनफेल्ड के युद्ध में परास्त किया। इसके बाद गस्टावस ने बवेरिया पर आक्रमण किया। टिली गस्टावस के आक्रमण को रोक न सका और वह सन् १६३२ ई० में लेच नामक स्थान पर मारा गया। फरडीनाण्ड द्वितीय को अपनी रक्षा के लिये वालेन्स्टेन (Wallenstein) को बुलाना पड़ा। सन् १६३२ ई० में ल्यूटजेन के युद्ध में वालेन्स्टेन पराजित हुआ और गस्टावस वीरगति को प्राप्त हुआ। गस्टावस के कार्यों को उसके मन्त्री (Oxenstern) ने जारी रखा। सन् १६३४ ई० में स्वीडन की सेना नॉर्डलिनजेन के युद्ध में हार गई। इस प्रकार दक्षिणी जर्मनी में गस्टावस के वालेन्स्टेन पर विदेशी मित्रता का संदेह किया और सम्राट की आज्ञा पर मार डाला गया।

फ्रान्स—कार्डिनल रिचलू को विश्वास था कि हाप्सबर्ग की पराजय पर फ्रान्स की उन्नति निर्भर करती है। पहले उसने हाप्सबर्गों के शत्रुओं को सहा-

यता की लेकिन जब इन सहायताओं का कोई निश्चित परिणाम न निकला तो रिचलू ने तीस वर्षीय युद्ध में स्वयं हस्तक्षेप करना उचित समझा। रिचलू आष्ट्रिया के हाप्सबर्ग वंश को नीचा दिखलाना चाहता था।

पहले तो स्पेन की सेना फ्रान्स की अपेक्षा श्रेष्ठ जान पड़ी। सन् १६३६ ई० में स्पेन की एक सेना ने उत्तरी फ्रान्स पर आक्रमण किया। स्पेन की दूसरी सेना ने पीरीनीज को पार करके दक्षिणी फ्रान्स पर आक्रमण किया। फ्रान्स के भाग्य ने पल्टा खाया और फ्रान्स की सेना नीदरलैंड, राइनलैंड, उत्तरी इटली और दक्षिणी फ्रान्स से स्पेन वालों को हटाना आरम्भ किया। नीदरलैंड और पुर्तगाल वालों ने फ्रान्स का साथ दिया। जान चतुर्थ पुर्तगाल का राजा घोषित किया गया। सन् १६४० ई० में फिलिप चतुर्थ के विरुद्ध नेपील्स और आरागॉन में विद्रोह हुए। ये विद्रोह सफलतापूर्वक दबा दिये गये लेकिन फिलिप चतुर्थ की सम्पूर्ण शक्ति जाती रही। वह पुर्तगाल को जीत न सका और न वह हालैंड या फ्रान्स के विरुद्ध कोई कार्रवाई ही कर सका। सन् १६४३ ई० में रोक्राय के युद्ध में फ्रान्सीसियों ने स्पेन की सेना को हराया। सन् १६४२ ई० में कार्डीनल रिचलू का देहान्त हो गया और सन् १६४६ ई० में बवेरिया पर स्पेन वालों का अधिकार हो गया।

अन्त में सन् १६४८ में वेस्टफालिया की सन्धि हुई जिससे तीस-वर्षीय युद्ध का अवसान हुआ।

वेस्टफालिया की सन्धि (१६४८)—वेस्टफालिया की सन्धि ने महत्वपूर्ण राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं को हल किया। धार्मिक आग्सबर्ग की सन्धि ने केवल लूथर-धर्म और कैथोलिक धर्म को स्वीकार किया था लेकिन इस सन्धि ने काल्विन-धर्म (Calvinism) को भी स्वीकार कर लिया और उसके अनुयायियों को भी समान अधिकार मिले। वह चर्च सम्पत्ति जो सन् १६२४ ई० के प्रारम्भ में कैथोलिकों या प्रोटेस्टेन्टों के हाथ में था वह उन्हीं के अधिकार में रहा। राजकीय न्यायालय में कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों की संख्या समान हो गई। राजनीतिक, वेस्टफालिया की सन्धि से आस्ट्रिया के हाप्सबर्ग वंश का अधिकार आस्ट्रिया हंगरी और बोहेमिया पर सुरक्षित रहा।

लेकिन प्रत्येक के शासक अपने देश के आन्तरिक मामलों में स्वतन्त्र हो गए और वे सम्राट की आज्ञा के बिना सन्धि या युद्ध कर सकते थे । स्ट्रासवर्ग नगर को छोड़कर सम्पूर्ण अलसॉक फ्रान्स को मिला । स्वीडन को पोमेरानिया का एक बड़ा भाग मिला और ओडर एल्ब और वेसर नदियों के मुहानों पर स्वीडन का अधिकार स्थापित हो गया । फ्रान्स और स्वीडन जर्मनी की राजपरिषद् के सदस्य हो गए । ब्रान्डेनबर्ग को पोमेरानिया भका पूर्वी भाग मिला । पलाटिनेट को बवेरिया के मैक्सिमिलियन और फ्रेड्रिक के पुत्र में बाँट दिया गया । स्वीट्जरलैंड और हालैंड स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकार कर लिये गये ।

तीस-वर्षीय युद्ध का वर्तमान योरप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है । तीस-वर्षीय युद्ध अन्तिम धार्मिक युद्ध था । धर्म को लेकर जो झगड़े हुआ करते थे उनका अन्त हुआ और धार्मिक स्वतन्त्रता की नीव डाली गई ।* यह सन्धि दो युगों को एक दूसरे से भिन्न करती है । यह धर्मसुधार के युग का अन्त करती है और राजनीतिक क्रान्ति के युग की नींव डालती है । सोलहवीं शताब्दी में धार्मिक समस्या प्रबल थी और धर्म के नाम पर भिन्न भिन्न देशों में युद्ध हुआ करते थे । लेकिन अब सीमा-विस्तार के प्रश्न को लेकर युद्ध होने लगे । इस बात का प्रमाण हमें कार्डीनल रिचलू की परराष्ट्र नीति से मिलता है जिसका मुख्य ध्येय फ्रान्स की सीमा में विस्तार करना था । इसके अतिरिक्त इस सन्धि का योरपीय महत्व है । इस सन्धि ने अन्तरराष्ट्रीय मामलों पर भी प्रकाश डाला । इस सन्धि ने योरप की राजनीतिक और भूगोलिक प्रबन्ध में भी सुधार किया । इसके परिणामस्वरूप फ्रान्स और ब्रान्डेनबर्ग शक्तिशाली हो गए और सम्राट तथा स्पेन की शक्ति कम हो गई ।

प्रश्नोत्तर

1. How far was the Thirty Years War, a war of religion and how far was it a war of politics?

(Cal 1928, Benares 1947)

---

* "The Thirty Years' War paved a rocky road towards the eventual dawn of religious liberty".—Hayes, Modern Europe.

(देखिये —पृष्ठ ३८, ३६,)

2. "Begun as a local sedition it soon became a civil war, and finally became European in scope." Account for this complication of the Thirty years War.

(Benares. 1949)

(देखिये—पृष्ठ ३६, ४०, ४१)

3. Explain the importance of the Peace of Wsetphalia in the history of Europe. (Calcutta. 1921, 25)

(देखिये—पृष्ठ ४२)

4. What were the causes of the Thirty Years War ? Estimate the importance of the parts played by (a) Wallenstein, (b) Tilly, (c) Gustavus Adolphus, (d) Richelieu in the Thirty Years War. (Calcutta, 1912, 24)

(देखिये —पृष्ठ ४१, ४२, ४३)

आठवाँ पाठ

(Stuart Age)

इंग्लैण्ड में स्टूअर्ट काल

जेम्स प्रथम—एलिजबेथ की मृत्यु के बाद स्काटलैण्ड का राजा जेम्स षष्ठम सन् १६०३ ई० में जेम्स प्रथम के नाम से इंग्लैण्ड का राजा हुआ। इस प्रकार स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड का शासन एक ही व्यक्ति के अधीन हो गया। जेम्स प्रथम हठी और जिद्दी था। वह कट्टर कैथोलिक था और दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास करता था। वह अपनी धार्मिक नीति में एलिजबेथ का अनुसरण करना चाहता था। लेकिन परिस्थिति उसके अनुकूल न थी।

उसके सामने सबसे निकट समस्या धार्मिक समस्या थी। इस समय इंग्लैण्ड में तीन धार्मिक सम्प्रदाय हो गये थे। कैथोलिक जो प्राचीन धार्मिक पद्धति में विश्वास करते थे प्रोटेस्टेन्ट जो ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायी थे और प्यूरिटन जो ऐंग्लिकन चर्च में सुधार चाहते थे। सन् १६०३ ई० में प्यूरिटनों ने एक आज्ञापत्र पेश किया और धार्मिक सुधार पर दबाव डाला ताकि वे लोग भी ऐंग्लिकन चर्च में प्रवेश कर सकें। सन् १६०४ ई० में हेम्पटन नामक स्थान पर एक सभा बुलाई गई। जेम्स प्रथम यह कह कर कि यदि आज बिशपों को हटा दिया जाय तो कल राजा को भी हटना पड़ेगा (No bishop, no king) सभा को विसर्जित कर दिया। इसी प्रकार कैथोलिकों को भी जेम्स प्रथम से आशा थी क्योंकि जेम्स प्रथम स्काटलैण्ड की रानी मेरी का जो कैथोलिक धर्म की कट्टर पक्षपातिनी थी, पुत्र था। अन्त में निराश होकर कैथोलिकों ने बारूद के षड्यन्त्र की रचना की। किसी प्रकार षड्यन्त्र का पता लग गया और गाई फाक्स जिसको सुरंग में आग लगाने का कार्य सौंपा गया था पकड़ा गया। षड्यन्त्र के नेताओं को प्राण दंड दिया गया और कैथोलिकों के विरुद्ध कठोर नियम बनाये गए।

जेम्स को आरम्भ से ही पार्लियामेन्ट का सामना करना पड़ा। पार्लियामेन्ट

के झगड़े के कई कारण थे । (क) जेम्स कैथोलिक था और पार्लियामेन्ट में प्यूरिटनों का प्रभाव अधिक था । (ख) राजा दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास करता था । (ग) पार्लियामेन्ट का कहना था कि राजा और मन्त्री अपने कार्यों के लिए पार्लियामेन्ट के प्रति उत्तरदायी है । जेम्स इसको मानने के लिए तैयार न था । (घ) जेम्स प्रथम फजूलखर्ची था और जब कभी वह पार्लियामेन्ट को बुलाता था पार्लियामेन्ट उसकी नीति की आलोचना करती थी । इसलिए वह पार्लियामेन्ट की आज्ञा के बिना धन वसूल करता था । (च) पार्लियामेन्ट जेम्स की परराष्ट्र नीति की भी आलोचना करती थी और किसी कैथोलिक देश से सम्बन्ध करने की नीति के विरुद्ध थी । जेम्स ने केवल चार पार्लियामेन्ट बुलाया लेकिन वे किसी न किसी विषय पर भङ्ग कर दिये गए ।

जेम्स अपनी परराष्ट्र नीति में शान्ति का इच्छुक था । सन् १६०४ ई० में उसने स्पेन से सन्धि की । सन् १६१३ ई० में जेम्स ने अपनी पुत्री का विवाह फ्रेड्रिक से किया । वह अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी के साथ करना चाहता था । पार्लियामेन्ट इसके विरुद्ध थी । जेम्स का प्रयत्न विफल रहा । सन् १६१८ ई० में जर्मनी में तीस वर्षीय युद्ध आरम्भ हुआ । फ्रेड्रिक जो प्रोटेस्टेन्टों का नेतृत्व कर रहा था अपने ससुर से विशेष सहायता की आशा करता था । लेकिन जेम्स घरेलू झगड़ों के कारण सहायता न कर सका । सन् १६२५ में जेम्स की मृत्यु हो गई ।

चार्ल्स प्रथम—सन् १६२५ में चार्ल्स प्रथम का राज्याभिषेक हुआ । उस समय उसकी आयु केवल २५ वर्ष की थी । चार्ल्स में अपने पिता के सभी गुण वर्तमान थे । सन् १६२५ में चार्ल्स ने प्रथम पार्लियामेन्ट को आमंत्रित किया । चार्ल्स को स्पेन के विरुद्ध युद्ध करने के लिए रुपये की अत्यन्त आवश्यकता थी । लेकिन उसे अपनी आवश्यकता का सातवां भाग मिला । पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने बकिंघम पर आक्रमण किया जिससे पार्लियामेन्ट भङ्ग कर दी गई । सन् १६२६ में रुपये की आवश्यकता बनी रहने के कारण चार्ल्स को द्वितीय पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ी । इस बार भी पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने बकिंघम पर आक्रमण किया । अपने प्रिय मित्र की रक्षा के लिए चार्ल्स को पार्लिया-

मेन्ट भङ्ग कर देना पड़ा । सन् १६२८ में पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने अधिकार याचना पत्र तैयार किया । इसके अनुसार (क) बिना पार्लियामेन्ट की आज्ञा से कर लगाना अवैध ठहराया गया । (ख) बिना अपराध प्रमाणित किये कोई बन्दीगृह में भेजा नहीं जा सकता था । (ग) गृहस्थों के यहाँ सैनिक ठहराये नहीं जा सकते थे । (घ) शान्ति के समय सैनिक कानून लगाया नहीं जा सकता था । चार्ल्स को इस अधिकार-याचना पत्र पर अपनी स्वीकृति देनी पड़ी । सन् १६२६ ई० में जान ईलियट ने तीन प्रस्ताव पास किया । इसके अनुसार जो धर्म में परिवर्तन करने का प्रस्ताव करेगा या पार्लियामेन्ट की स्वीकृति के बिना कर लगाने का प्रस्ताव करेगा या देगा, देश का शत्रु समझा जायगा । पार्लियामेन्ट भङ्ग कर दी गई और कुछ सदस्यों को दण्ड तथा कारावास दिया गया ।

सन् १६२६ ई० से लेकर सन् १६४० ई० तक चार्ल्स ने बिना पार्लियामेन्ट के राज्य किया । इस काल में चार्ल्स के दो प्रमुख सलाहकार थे, टॉमस वेंटवर्थ और विलियम लॉड । धन उपार्जन के लिए चार्ल्स नये नये रीतियों को काम में लाया । व्यापारिक वस्तुओं के ठेके बेचे गए । टनेज और पाउन्डेज लगाया गया । ४० पौं० वार्षिक आय की भूमि वालों को नाईट होने के लिए बाध्य किया गया । न्यायालयों में अपराधियों पर भारी जुरमाना लगाये जाने लगे । सन् १६३४ ई० में चार्ल्स ने सम्पूर्ण देश पर जहाजी कर लगाया जो प्राचीन काल में जहाज बनाने के कार्य में व्यय किया जाता था । सन् १६३५ ई० में जहाजी कर को स्थायी रूप दे दिया गया । लाड की सलाह से चार्ल्स ने प्यूरिटनों के विरुद्ध कई नियम बनाये । उसकी धार्मिक-नीति से देश में अशान्ति फैल गई । स्काटलैण्ड की धार्मिक-प्रणाली में भी सुधार किया गया । प्रेसबीटिरियन धर्म का उन्मूलन किये बिना ही उसने धर्माध्यक्षता (Episcopacy) की स्थापना की । बिशप हटा दिये गए और प्रार्थना पुस्तक बन्द कर दी गई । स्काटलैण्ड की पार्लियामेन्ट ने इसको स्वीकृति नहीं दी । और सन् १६३६ ई० में एक धार्मिक युद्ध छिड़ा जो बिशप युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है । चार्ल्स का प्रयत्न विफल रहा और उसे स्काटलैण्ड वालों की सभी मांगों को स्वीकार करना पड़ा ।

धन की आवश्यकता बनी रहने के कारण चार्ल्स को सन् १६४० ई० में चौथी

या अल्पकालिक पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ी। विरोधी दल का नेता पिम था। हाउस आफ कामन्स ने (Grievances) को दूर करने के लिए दबाव डाला और चार्ल्स के जहाजी कर की कटु आलोचना की। पार्लियामेन्ट भङ्ग कर दी गई। द्वितीय बिशप युद्ध में हार जाने के कारण चार्ल्स को पांचवी पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ी जो दीर्घकालिक पार्लियामेन्ट के नाम से प्रसिद्ध है। पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने पहले वेंटवर्थ और लॉड पर आक्रमण किया। एक एक्ट (Act of Attainder १६४१) पास करके वेंटवर्थ को फांसी दी गई। लॉड को टावर में बन्द कर दिया गया और कुछ समय पश्चात् वध कर दिया गया। स्टार चैम्बर, कोर्ट आफ हाई कमीशन, कौंसिल आफ वेल्स और कौंसिल आफ नार्थ नष्ट कर दिये गए। धार्मिक मामलों में पार्लियामेन्ट के सदस्यों में मतभेद था। धर्माध्यक्षता का अन्त करने वाले बिल (Root and Branch Bill) पर बड़ा वाद विवाद हुआ। सन् १६४१ ई० में पार्लियामेन्ट ने राजा पर अविश्वास का प्रस्ताव (Grand Remonstrance) पास किया और अनुरोध किया कि उसके विश्वासी व्यक्ति ही मन्त्री चुने जांय। पिम ने सैनिक बिल पेश किया जिसका आशय था कि स्थल और जल-सेनाओं का प्रबन्ध तथा उनके अफसरों की नियुक्ति पार्लियामेन्ट करेगी। चार्ल्स ने इसको अस्वीकार कर दिया और पार्लियामेन्ट के पाँच प्रमुख नेताओं पिम, हैम्पडन, हैजलेरिग होल्स और स्ट्रोड को पकड़ना चाहा। लेकिन वे किसी प्रकार पार्लियामेन्ट भवन से निकल भागे। युद्ध होना अनिवार्य प्रतीत होने लगा। देश में दो दल हो गए—एक जो राजा का पक्ष लेता था और दूसरा जो पार्लियामेन्ट का समर्थन करता था। प्रथम गृह-युद्ध सन् १६४२ ई० में आरम्भ हुआ। सन् १६४२-४३ ई० के प्रारम्भिक युद्धों में राजा की विजय रही। लेकिन राजा को मार्स्टन मूर और नेजबी के युद्धों में करारी हार खानी पड़ी। अन्त में निराश होकर राजा को स्काटिश सेना का आश्रय लेना पड़ा। स्काटलैण्ड के निवासियों ने उसके सामने प्रेसबीटिरियन धर्म स्वीकार करने का प्रस्ताव पेश किया परन्तु चार्ल्स ने इसे न माना। इस पर स्काटलैण्ड के निवासियों ने राजा को इंगलैण्ड की पार्लियामेन्ट को सौंप दिया। अब चार्ल्स अकेला पार्लियामेन्ट का कैदी हो गया। चार्ल्स के आत्म-समर्पण

करने के पश्चात सेना और पार्लियामेन्ट में धार्मिक मतभेद हो गया। इसी बीच में चार्ल्स पार्लियामेन्ट के हाथ से भाग निकला और स्काटलैण्ड वालों से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। इस प्रकार सन् १६४८ ई० में द्वितीय गृह-युद्ध आरम्भ हुआ। इस बार स्काटलैण्ड वालों ने पार्लियामेन्ट के स्थान पर राजा का पक्ष लिया। परन्तु क्रामवेल की नई सेना ने स्काटलैन्ड की सेना को परास्त किया और यहीं युद्ध का अन्त हो गया। अब इंगलैन्ड की पार्लियामेन्ट की यह धारणा होने लगी कि जब तक चार्ल्स जीवित रहेगा, तब तक झगड़ों का कोई अन्त न हो सकेगा। कर्नल प्राईड ने हाउस आफ कामन्स से प्रेसबेटिरियन सदस्यों को निकाल कर एक विशेष न्यायालय की नियुक्ति की। न्यायालय ने चार्ल्स को विश्वासघाती और उपद्रवी ठहराया और उसे प्राण-दन्ड की आज्ञा दी। (३० जनवरी सन् १६४९ ई०)। इस प्रकार निरंकुश शासन का अन्त और सैनिक शासन का प्रारम्भ हुआ।

क्रामवेल और प्रजातन्त्र—चार्ल्स के वध के बाद सन् १६४९ ई० में प्रजातन्त्र की घोषणा की गई। इंगलैन्ड को विशेषतः आयरलैन्ड और स्काटलैन्ड से भय था क्योंकि ये चार्ल्स द्वितीय को राजा बनाने के पक्ष में थे। आयरलैन्ड के निवासी रम्प के शासन को घृणा की दृष्टि से देखते थे। आयरलैन्ड वालों ने प्रजातन्त्र के विरुद्ध विद्रोह किया। क्रामवेल ने जो विद्रोह का दमन करने के लिए भेजा गया था ड्रोगेडा (Drogeda) और वेक्सफोर्ड को घेर लिया। और वाटरफोर्ड को छोड़कर सभी समुद्री किनारों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सन् १६५२ ई० तक सम्पूर्ण आयरलैन्ड इंगलैन्ड के अधीन हो गया। इसी प्रकार जब स्काटलैन्ड में विद्रोह हुआ तो क्रामवेल ने स्काटलैंड वालों को डनबर और वारसेस्टर के युद्धों में हराया। स्काटलैन्ड वालों को अपनी स्वतन्त्रता से हाथ धोना पड़ा। क्रामवेल ने रम्प को सन् १६५३ ई० में भंग कर दिया और नये शासन-विधान के अनुसार क्रामवेल को संरक्षक की पदवी दी गई। क्रामवेल और पार्लियामेन्ट में मतभेद था इसलिए उसने पार्लियामेन्ट को भंग करके सैनिक शासन की स्थापना की। सन् १६५५ ई० में उसने इंगलैन्ड को ११ प्रान्तों में विभाजित किया और प्रत्येक प्रान्त को एक सैनिक अफसर के आधीन रखा। सैनिक

अफसर मेजर-जनरल कहलाता था। वह प्रान्त के शासन के लिए उत्तरदायी होता था।

क्रामवेल की परराष्ट्र नीति सफल रही। सन् १६५१ ई०में क्रामवेल ने नाविक नियम Navigation Act पास किया। जिसने डचों को अति क्षति पहुँचाई। इसलिए डचों ने इंगलैन्ड के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। क्रामवेल ने उन्हें पोर्टलेन्ड के युद्ध में पराजित किया। क्रामवेल ने स्पेन के विरुद्ध फ्रान्स से सन्धि कर ली और जमैका और डनकर्क स्पेन वालों से जीत लिया। इस प्रकार क्रामवेल की परराष्ट्र नीति के फलस्वरूप इंगलैन्ड की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

क्रामवेल की मृत्यु के बाद सेना और पार्लियामेन्ट में झगड़ा होने लगा। क्रामवेल का पुत्र—रिचार्ड साम्यिक समस्या को हल न कर सका। इसलिए उसने पदत्याग कर दिया। ऐसी स्थिति में जनरल मॉन्क ने एक नवीन पार्लियामेन्ट को आमंत्रित किया और रम्प पार्लियामेन्ट को भंग होने के लिए बाध्य किया। इसके पश्चात् कन्वन्शन पार्लियामेन्ट ने राजकुमार चार्ल्स द्वितीय को इंगलैन्ड के राजसिंहासन के लिए आमंत्रित किया। सन् १६६० ई० में चार्ल्स इंगलैन्ड लौटा और उसका हार्दिक स्वागत किया गया।

चार्ल्स द्वितीय—चार्ल्स द्वितीय "स्वार्थपरायण, विलासप्रिय और ढोंगी" था। वह कैथोलिक था लेकिन प्रकट रूप से प्रोटेस्टेन्ट बना हुआ था। उसके जीवन के दो प्रधान लक्ष्य थे—पहला कैथोलिक धर्म की उन्नति दूसरा लुईस चौदहवें की सहायता से राजा की शक्ति को दृढ़ करना। नवीन पार्लियामेन्ट ने जो कवेलियर पार्लियामेन्ट के नाम से प्रसिद्ध है अठारह वर्ष तक कार्य किया। कवेलियर पार्लियामेन्ट ने प्यूरिटनों की राजनीतिक महत्ता को कम करने के लिये चार एक्ट पास किये। सन् १६६१ ई० में कारपोरेशन एक्ट पास किया गया। जिसके अनुसार कारपोरेशन के प्रत्येक सदस्य को ऐंग्लिकन चर्च का अनुयायी होना पड़ता था। सन् १६६२ ई० में समानता (Uniformity) का नियम पास किया गया। इस एक्ट के द्वारा सरकारी प्रार्थना-पुस्तक के अनुसार प्रत्येक पादड़ी और स्कूल के अध्यापक को धार्मिक कार्य करने के लिये शपथ लेनी पड़ती थी। सन् १६६४ ई० में कन्वेन्टिकल एक्ट पास किया गया। इसके अनुसार ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त पाँच से अधिक व्यक्ति

मिलकर धार्मिक सभायें नहीं कर सकते थे। सन् १६६५ ई० में चौथा एक्ट पास हुआ जिसके अनुसार वे पादड़ी जिन्होंने सरकारी प्रार्थना-पुस्तक को मानने से इन्कार कर दिया था नगर के पाँच मील तक नहीं आ सकते थे और न वे किसी विद्यालय में अध्यापक ही हो सकते थे। ये चारों नियम मिलकर क्लैरेंडन कोड के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि इस समय क्लैरेंडन राजा का प्रधान मन्त्री था। सन् १६६० ई० में कवेलियर पार्लियामेन्ट भङ्ग कर दी गई और उसके उपरान्त क्लैरेंडन का मन्त्रि-मंडल नियुक्ति हुआ। सन् १६६५ ई० में भीषण प्लेग फैला और उसके एक साल बाद लन्दन नगर में आग लगी। इन सब घटनाओं से क्लैरेंडन की अप्रियता बढ़ती गई। पार्लियामेन्ट ने उस पर अभियोग चलाकर उसे पद त्याग करने के लिये बाध्य किया। उसने फ्रान्स में जाकर शरण ली और वहीं उसकी मृत्यु हुई।

क्लैरेंडन के पतन के बाद चार्ल्स द्वितीय ने क्लिफोर्ड, आरलिंगटन, बकिंघम, आशले और लाडरडेल को अपना विश्वासपात्र बनाया। यह 'केबाल' मन्त्रिमंडल के नाम से प्रसिद्ध है। चार्ल्स ने इसी वर्ष धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा की जिसके अनुसार कैथोलिकों और डिसेन्टरों के विरुद्ध बनाये गये नियमों को रद्द कर दिया गया। पार्लियामेन्ट ने इसके विरोध में टेस्ट एक्ट पास किया जिसके अनुसार जो ऐंग्लिकन चर्च के सिद्धान्तों का अनुसरण नहीं करते थे उन्होंने अपने पदों से हाथ धोया। चार्ल्स का भाई जेम्स क्लिफोर्ड, और आरलिंगटन को अपने पद छोड़ने पड़े। आशले मन्त्रि-मन्डल से निका दिया गया। इस प्रकार सन् १६७३ ई० में केबाल मन्त्रि मन्डल का अन्त हुआ।

केबाल मन्त्रिमन्डल के अन्त होने पर चार्ल्स ने डेनबी को अपना प्रधान मन्त्री बनाया। लेकिन शीघ्र ही लुई चौदहवें से सन्धि करने के आरोप में पार्लियामेन्ट ने उस पर अभियोग चलाया। सन् १६७६ ई० में चार्ल्स ने डेनबी की रक्षा के लिए पार्लियामेन्ट को भंग कर दिया। सन् १६७६ ई० से लेकर सन् १६८० ई० तक तीन अल्पकालिक पार्लियामेन्ट आमन्त्रित किये गये। सन् १६८१ ई० से सन् १६८५ ई० तक चार्ल्स की [illegible] रही। सन् १६८५ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

चार्ल्स द्वितीय अपने परराष्ट्र नीति में फ्रान्स के अधीन था। धन की आवश्यकता बनी रहने के कारण वह लुई चौदहवें के हाथ का कठपुतली बन गया। चार्ल्स के राजा होने के कुछ ही वर्ष पश्चात् पहला डच युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध के व्यापारिक कारण थे। अन्त में ब्रेडा की सन्धि से डचों और अंग्रेजों में मित्रता हो गई। जब लुई चौदहवें ने नीदरलैण्ड पर आक्रमण किया तो इंग्लैण्ड ने स्वीडन और हालैण्ड से मित्रता कर ली (Triple Alliace) और लुई को नीदरलैण्ड छोड़ने के लिए विवश किया। लुई ने डोवर की गुप्त सन्धि से चार्ल्स को अपनी ओर कर लिया और इंग्लैण्ड ने लुई के आक्रमणों में सम्मिलित होना स्वीकार किया। इसी समय द्वितीय डच युद्ध आरम्भ हुआ। पार्लियामेन्ट डचों से युद्ध करने के पक्ष में न थी। पार्लियामेन्ट ने चार्ल्स को युद्ध से अलग होने के लिए बाध्य किया। सन् १६७४ ई० में डचों से सन्धि कर ली गई। इसी वर्ष जेम्स की पुत्री मेरी का विवाह विलियम आफ आरेन्ज के साथ किया गया।

जेम्स द्वितीय—जेम्स द्वितीय सन् (१६८५-१६८८ ई०) कट्टरवादी था। और कैथोलिक धर्म की उन्नति ही उसका प्रधान लक्ष्य था। वह स्वयं पक्का कैथोलिक था और अन्य मतावलम्बियों को विधर्मी समझता था। सन् १६८५ ई० में मानमथ ने जेम्स के विरुद्ध विद्रोह किया। वह पकड़ा गया और सन् १६८५ ई० के जुलाई महीने में फांसी पर लटकाया गया। जज जेफरीज उसका प्रधान सलाहकार और साधन था। उसकी बर्बरता से प्रजा की स्वतन्त्रता को खतरा हो गया था। उसने टेस्ट एक्ट के विरुद्ध कैथोलिकों की नियुक्ति की और जो उससे सहमत न थे उन्हें निकाल बाहर किया। इसके अतिरिक्त उसने कैथोलिक अफसरों को अधिकार देना शुरू किया। उसने कोर्ट आफ हाई कमीशन को फिर से स्थापित किया। इस कोर्ट को दीर्घकालिक पार्लियामेन्ट ने अवैध घोषित कर दिया था। इससे देश में अशान्ति फैल गई। विरोधियों को दबाने तथा अपनी शक्ति को दृढ़ करने के लिए उसने सैनिकों की संख्या में वृद्धि की। इसी प्रकार उसने स्काटलैण्ड और आयरलैंड में कैथोलिकों के विरुद्ध बनाये गये नियमों को रद्द करके कैथोलिकों की नियुक्ति की। सन् १६८७ ई० में उसने धार्मिक स्वतन्त्रता (Declaration of Indulgences) की घोषणा प्रकाशित किया

केथोलिकों और डिसेन्टरों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल गई। केथोलिकों और डिसेन्टरों की नियुक्ति करके कारपोरेशन का पुनः संगठन करने के लिए रेगूलेटर्स नियुक्त किये गये और लार्ड लेफ्टिनेन्टों को उन लोगों की सूची तैयार करने की आज्ञा दी गई जो राजा के पक्षपाती थे। रेगूलेटर्स का प्रयत्न विफल रहा और लार्ड लेफ्टिनेन्टों ने जेम्स की आज्ञा को मानने से इन्कार कर दिया। सन् १६८७ ई० में जेम्स ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के कुलपति को हटाकर पार्कर को जो आक्सफोर्ड का बिशप था नियुक्त किया। उसके इस कार्य से शिक्षित समाज में भी अशान्ति फैल गई। सन् १६८८ ई० में जेम्स ने द्वितीय धार्मिक स्वतन्त्रा की घोषणा प्रकाशित की और गिरजाघरों में उसके पढ़े जाने की आज्ञा दी गई। १० जून को जेम्स को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। प्रजा को यह आशा थी कि जेम्स की मृत्यु के बाद प्रोटेस्टेन्ट धर्म के अनुयायी मेरी और विलियम इंगलैंड के शासक होंगे लेकिन पुत्र उत्पन्न हो जाने से उनकी यह आशा जाती रही। वे समझने लगे कि जेम्स के पुत्र को भी केथोलिक धर्म की शिक्षा दी जायगी और इस प्रकार इंग्लैंड के सिंहासन पर केथोलिकों का अधिकार बना रहेगा। देश के प्रमुख व्यक्तियों ने विलियम को इंग्लैण्ड में आकर राजसिंहासन को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की। ५ नवम्बर को विलियम टॉरैब्र नामक स्थान पर आ पहुँचा। जेम्स को इंग्लैण्ड त्यागकर (२३ दिसम्बर सन् १६८८ ई०) फ्रान्स में शरण लेनी पड़ी। इस क्रान्ति को गौरवपूर्ण या रक्तहीन राज्यक्रान्ति (Glorious or Bloodless Revolution) कहते हैं। एक राजा को हटाकर उसके स्थान पर दूसरे का राजसिंहासनासीन करना कोई सुगम कार्य नहीं है परन्तु इंग्लैण्ड में इस अवसर पर यह कार्य इतना शान्तिपूर्वक हुआ कि देश में न तो रक्तपात ही हुआ और न किसी प्रकार का हलचल ही हुआ। जेम्स द्वितीय से देश को बिना रक्त बहाये ही छुटकारा मिल गया। इस क्रान्ति से राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त का निर्णय हो गया और साथ ही साथ राजा और पार्लियामेन्ट के झगड़ों का भी अन्त हो गया।

रानी मेरी और विलियम तृतीय—सन् १६८८ ई० के गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति के पश्चात् विलियम तृतीय और मेरी तृतीय इंग्लैण्ड के राजसिंहासन

पर प्रतिष्ठित हुए। उन्हें शासन काल के प्रारम्भिक वर्षों में स्काटलैंड और आरलैण्ड के कैथोलिकों का सामना करना पड़ा। स्काटलैंड के कैथोलिकों का नेता विस्काउन्ट डंडी किलक्रैंकी के युद्ध में मारा गया। सन् १६६२ ई० में मेकडॉनेल्ड वंश के लोग वध कर दिये गए। आयरलैण्ड के कैथोलिकों को विलियम ने न्यूटाउन बटलर और बॉयन के युद्धों में पराजित किया। जेम्स फ्रान्स भाग गया और आयरलैण्ड के युद्धों का सदा के लिए अन्त हो गया।

सन् १६८६ ई० में अधिकार-नियम तैयार किया गया जिसके अनुसार राजा तथा प्रजा के वैधानिक अधिकारों और कर्त्तव्यों की विवेचना की गई। इसी वर्ष सैनिक-नियम पास किया गया जिसके अनुसार न्यायालयों द्वारा सैनिकों पर अभियोग चलाया जा सकता था और सैनिक अनुशासन भंग करने के अपराध में दण्ड दिया जा सकता था। सन् १६८६ ई० में सहिष्णुता-नियम पास किया गया जिसके अनुसार कैथोलिकों और यूनिटेरियनों को छोड़कर सभी लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई। सन् १६६४ ई० में त्रैवार्षिक नियम बनाया गया जिसके द्वारा यह निश्चित किया गया कि पार्लियामेन्ट तीन वर्ष से अधिक न रहे और कम से कम तीन वर्षों में पार्लियामेन्ट का एक अधिवेशन अवश्य हो। सन् १७०१ ई० में उत्तराधिकार निर्णय-नियम (Act of Settlement) पास किया गया जिसने उत्तराधिकार के प्रश्न का निर्णय किया।

विलियम की परराष्ट्र नीति चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय से बिलकुल भिन्न थी। चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय धन के लोभ में लुईस चौदहवें के हाथ का कठपुतली बन गये थे। वे देश के हित की अपेक्षा पारवारिक कल्याण के लिए अधिक चिन्तित रहते थे। विलियम की परराष्ट्र नीति लुईस चौदहवें की शक्ति को रोकना था। इस उद्देश्य को लेकर विलियम ने लीग-ऑफ आग्सबर्ग और ग्रान्ड आलायन्स बनाये जिसका मुख्य ध्येय सम्पूर्ण योरप को फ्रान्स के शासन से मुक्त करना था। सन् १६६८ ई० में विलियम ने योरोप में शक्ति-संतुलन की नीति को निर्वाह करने के विचार से लुई के साथ प्रथम बटवारे की सन्धि की। सन् १६६६ ई० में बवेरिया के राजकुमार की मृत्यु

हो गई। इसलिए सन् १७०० ई० में द्वितीय बटवारे की सन्धि हुई। चार्ल्स द्वितीय ने मरते समय लुई चौदहवें के पोते ड्यूक ऑफ अंजाऊ को अपने सम्पूर्ण राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। लुई ने सन्धि की शर्तों को ठुकरा दिया। लुई के अपने वचन भंग करने से योरप में सनसनी फैल गयी। विलियम ने लुई के विरुद्ध ग्रान्ड अलायन्स बनाया जिसमें जर्मनी के सम्राट्, इंग्लैण्ड-हालैण्ड और जर्मनी के प्रमुख राजकुमार सम्मिलित थे। सन् १७०२ई० में मृत्यु हो जाने से विलियम इस युद्ध का नेतृत्व न कर सका।

रानी ऐन—सन् १७०२ ई० में विलियम तृतीय के मृत्यु के बाद उत्तराधिकार-निर्णय-नियम के अनुसार रानी ऐन इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठी। इंग्लैण्ड के इतिहास में उसके शासन-काल का विशेष महत्व है। उसके राज्य-काल की मुख्य घटना स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध है। इसके कई कारण थे। (क) जैसा कि आगे बतलाया जा चुका है, स्पेन के राजा चार्ल्स द्वितीय ने मरते समय ड्यूक आफ अंजाऊ को अपने सम्पूर्ण राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। लुई चौदहवें ने सन्धि की शर्तों को ठुकरा दिया। स्पेन और फ्रान्स के सम्मिलित हो जाने से सम्पूर्ण योरप को भय था। (ख) लुई ने रिजविक की सन्धि में विलियम को राजा स्वीकार कर लिया था लेकिन वह फिर जेम्स द्वितीय के लड़के को इंग्लैण्ड का सिंहासन प्राप्त करने में सहायता देने लगा। विलियम की मृत्यु हो जाने से ड्यूक आफ मार्लबरो ने इस युद्ध में प्रमुख भाग लिया। प्रिन्स यूजीन की सहायता से मार्लबरो ने फ्रान्सीसीयों को ब्लेनहम नामक स्थान पर हराया। सन् १७०६ ई० में मार्लबरो ने रेमीलस और प्रिन्स यूजीन ने ट्यूरीन के युद्धों में फ्रान्सीसीयों को परास्त किया। जल-युद्धों में स्पेन वालों को अल्मान्जा के युद्ध में हार खानी पड़ी। सन् १७११ ई० में इंग्लैण्ड में टोरी दल की विजय हुई जो शान्ति के इच्छुक थे। इसी वर्ष आर्क ड्यूक चार्ल्स आष्ट्रिया का सम्राट् हुआ। इन सब कारणों से स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध का अवसान हुआ और यूट्रेक्ट (Utrecht) की सन्धि हुई। इस युद्ध से इंग्लैण्ड का मान बढ़ गया और जिब्राल्टर, माइनार्का, न्यूफाउन्डलैण्ड नोवास्कोटिया तथ हडसन की खाड़ी के मिल जाने से इंग्लैण्ड के औपनिवेशिक कार्यों में काफी प्रोत्साहन मिला।

रानी ऐन के शासन काल में राजनीतिक दलों की भी उत्पत्ति हुई। सन् १७०७ ई० में संयोग-नियम (Act of Union) पास किया गया जिसके अनुसार स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड का शासन एक हो गया। सन् १७१४ ई० में रानी ऐन की मृत्यु हो गई।

प्रश्नोत्तर

1. What were the main points of dispute between the Parliament and the first two Stuarts ?

(देखिये—पृष्ठ ४५, ४६, ४७, ४८, ४९)

2. "Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad". Discuss.

(देखिये—पृष्ठ ५०)

3. Enumerate the causes of the Glorious Revolution of 1688. Discuss its importance.

(देखिये—पृष्ठ ५२, ५३,)

4. What were the causes of the War of Spanish Succession ? What England gained from the treaty that followed ?

(देखिये—पृष्ठ ५५)

5. Write short notes on:—

(a) Gunpowder plot (b) Long Parliament (c) Clarendon Code (d) Cabal (e) Petition of Rights (f) Bill of Rights (g) Test Act.

(देखिये—पृष्ठ ४५, ४८, ५०, ५१)

नवां पाठ

फ्रान्स की प्रधानता

हेनरी चतुर्थ—सोलहवीं शताब्दी में जब स्पेन योरप का प्रधान देश था, उस समय फ्रान्स को विदेशी आक्रमणों तथा घरेलू युद्धों का भय लगा रहता था। ये खतरे स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय की मृत्यु तक बने रहे। सन् १५९८ ई० में ह्यूगनॉटस को धार्मिक स्वतन्त्रा दी गई। जिससे देश में शान्ति स्थापित हुई। इसी वर्ष एक सन्धि (Treaty of Vervins) स्पेन के साथ हुई जिससे फ्रान्स को विदेशी आक्रमणों का भय जाता रहा। इस प्रकार की शान्ति स्थापित करने वाला प्रथम राजा हेनरी चतुर्थ था और हेनरी चतुर्थ ने ही सत्तरहवीं शताब्दी में फ्रान्स की प्रधानता की नींव डाली।

हेनरी चतुर्थ एक योग्य शासक था। वह अपने प्रजा की उन्नति चाहता था। उसके मित्र उसे स्वार्थी और लोभी समझते थे लेकिन उसके विचार ऊँचे होते थे। इसके अतिरिक्त उसमें सैनिक के सभी गुण वर्तमान थे। उसमें धार्मिक हठ न था और वह सबको धार्मिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में था। उसने फ्रान्स की अशान्ति का अन्त किया और राष्ट्रीय उन्नति का बीजारोपण किया। उसने स्पेन के सभी उद्देश्यों को नष्ट किया और स्वयं अपने को एक राष्ट्रीय नेता बनाया। और आगे चलकर उसकी नीति को कार्डीनल रिचलू और मेज़ारिन ने अपनाया और इसीलिए कहा जाता है कि "But for the Government of Henry IV, there could have been no age of Louis XIV"

हेनरी चतुर्थ की गृह-नीति—हेनरी चतुर्थ ने अपनी गृह-नीति में चार प्रमुख कार्य किया—धार्मिक समस्या को सुलझाया, खेती की उन्नति की, वाणिज्य को प्रोत्साहित किया और वैधानिक सुधार किया।

सन् १५९८ ई० में एक आज्ञा (Edict of Nantes) प्रकाशित किया गया। जिसके अनुसार ह्यूगनाट्स को धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई। इस आज्ञा का वर्तमान धार्मिक स्वतन्त्रता के इतिहास में विशेष महत्त्व है। इससे—

(क) फ्रान्स के प्रॉटेस्टेटों को सार्वजनिक पूजा (Public worship) करने की आज्ञा मिल गई ।

(ख) प्रॉटेस्टेन्ट स्कूलों को आर्थिक सहायता देने का वचन दिया गया ।

(ग) प्रोटेस्टेन्टों को सभी राजनीतिक और सामाजिक अधिकार दिये गये ।

(घ) प्रोटेस्टेन्ट पुस्तकों का प्रकाशन स्वीकार कर लिया गया ।

(ङ) प्रॉटेस्टेन्टों को सभा करने का अधिकार मिल गया और वे न्याय सम्बन्धी अधिकारों का प्रयोग कर सकते थे ।

हेनरी चतुर्थ ने आर्थिक सुधार भी किया और खेती की उन्नति की । इस कार्य में उसे अपने मत्री सूली से विशेष सहायता मिली । सूली विश्वास करता था कि राज्य की वास्तविक सम्पत्ति खेती ही है और इसलिए खेती की उन्नति करनी चाहिये और यदि आवश्यक हो तो दस्तकारी और व्यापार की भी अवहेलना की जा सकती है । खेती की उन्नति के लिए जंगलों को सुरक्षित किया गया, पुल और सड़कों की मरम्मत की गई और एक बड़े पैमाने पर नहर की योजना तैयार की गई । एक ओर खेती की उन्नति हो रही थी दूसरी ओर हेनरी चतुर्थ मध्यम श्रेणी को प्रोत्साहित करने में लगा हुआ था । हेनरी चतुर्थ ने शिल्पजीविओं को पालने तथा सहतूत के पेड़ लगाने के कार्य का प्रचार किया और इस प्रकार उसने एक ऐसे व्यवसाय की प्रेरणा दी जो आगे चलकर फ्रान्स का एक मुख्य व्यवसाय हो गया ।

हेनरी ने वाणिज्य को भी प्रोत्साहित किया—राज्य की सहायता से फ्रान्स के व्यापारिकों के लिए एक जहाज तैयार किया गया । फ्रान्सीसीयों ने धीरे-धीरे स्पेन के व्यापारिक एकाधिकार पर धावा बोलना आरम्भ किया और फ्रान्स व्यापार सम्बन्धी मामलों में स्पेन और डच का बराबरी करने लगा । भारतवर्ष में व्यापारिक केन्द्र खोले गये और उत्तरी अमेरिका में फ्रान्सीसी उपनिवेश स्थापित करने के लिए 'चाम्प्लेन' नामक जहाज भेजा गया ।

हेनरी ने वैधानिक सुधार भी किया—राजा की शक्ति कम हो गई थी। उसको उसने फिर से स्थापित किया ! फ्रान्स की पार्लियामेन्ट जो स्टेट-जनरल कहलाती थी, फ्रान्स में शासन करती थी । यह सोचकर कि स्टेट-जनरल उसकी शक्ति को कम न कर सके, कभी-कभी बुलाता था । इस प्रकार उसने अपनी

शक्ति को दृढ़ किया। इसके अतिरिक्त उसने एक संघ स्थापित किया जिसके सदस्य (Notables) कहलाते थे और जो राजा पर पूर्णरूप से आश्रित होते थे। उसने पार्लियामेन्ट के कार्यों को भी कम कर दिया।

हेनरी चतुर्थ की परराष्ट्र नीति—गृह-युद्ध के कारण फ्रान्स का मान अन्तराष्ट्रीय मामलों में कम हो गया था। फ्रान्स की शक्ति को बढ़ाना ही उसका प्रधान लक्ष्य था। सन् १५९८ ई० में उसने स्पेन के साथ वरविन्स की सन्धि की जिसके अनुसार हेनरी चतुर्थ फ्रान्स का यथायोग्य शासक घोषित किया गया अर्थात स्पेन ने हेनरी को फ्रान्स का राजा स्वीकार कर लिया। मेट्ज़, टाउल (Toul) और वेरान पर फ्रान्स का अधिकार हो गया। उसने फ्रान्स की सीमा को राइन नदी तक फैलाने का प्रयत्न किया।

कार्डीनल रिचलू—सन् १६१० ई० में धर्म से प्रेरित होकर किसी व्यक्ति ने हेनरी चतुर्थ को मार डाला। हेनरी की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी (Marie Medici) जो एक अति लालसा रखने वाली लेकिन अयोग्य स्त्री थी, सूली को पदच्युत कर दिया और नव वर्षीय बालक—लुईस तेरहवां का संरक्षक बन कर कार्य करने लगी।

कार्डीनल रिचलू पायटाय (Poitou) के एक प्रतिष्ठित कुल में पैदा हुआ था। उसे प्रारम्भ से ही ऐसी धार्मिक शिक्षा मिली थी और एक्कीस वर्ष की अवस्था में वह ल्यूकन का विशप नियुक्त हुआ। उसकी वक्तृत्वशक्ति और सूक्ष्मबुद्धि ने जब रिचलू सन् १६१४ ई० के स्टेट-जनरल में एक प्रतिनिधि के रूप में बोल रहा था मेरी डी मेडीसी को आकर्षित कर लिया। मेरी डी मेडीसी ने उसे राजकीय कौंसिल में एक स्थान दिया और उसे रोम के चर्च का कार्डीनल नियुक्त किया। सदैव मर्मज्ञ और विचारवान् होने के कारण वह बराबर उन्नति करता गया। पहले वह रानी का संरक्षक और बाद में लुई तेरहवें का संरक्षक हो गया। १६२४ ई० में वह प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।

कार्डीनल रिचलू के उद्देश्य—कार्डीनल रिचलू के चार मुख्य उद्देश्य थे*

*"I promise", Richelieu told Louis XIII in 1624, "to devote all my energy and all the authority that it may please you to place in my hands to destroying the huguenots, abasing the

(क) ह्यूगनाट्स की शक्ति को कुचलना (ख) नौबुल्स के प्रभाव को कम करना (ग) फ्रान्स के शासन को फिर से संगठित करना (घ) यौरप के देशों में फ्रान्स को एक उच्च स्थान देना। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने अटल स्वदेश भक्ति और उद्धत अभिलाषा से अपने जीवन के अन्तिम अट्ठारह वर्ष व्यतीत किया।

कार्डीनल रिचलू की गृह-नीति—(क) सर्वप्रथम रिचलू घरेलू अशान्ति बनाने वाले ह्यूगनाट्स को दबाना चाहा। वह एक धर्मोपदेशक की अपेक्षा एक योग्य राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी था। यद्यपि उसका जन्म धर्मोन्माद के युद्ध में हुआ था लेकिन वह अपने धर्म में हठधर्मी न था। राजनीतिक कारणों से ही उसने फ्रान्स के प्रोटेस्टेन्टों पर आक्रमण किया।

फ्रान्स में प्रोटेस्टेन्ट धर्म का अर्थ केवल धर्म से ही नहीं बल्कि एक प्रभावशाली राजनीतिक दल से था। फ्रान्स में प्रोटेस्टेन्ट धर्म अशान्ति और झगड़ों का हेतु बन गया था। जब से हेनरी चतुर्थ ने (Edict of Nantes) प्रकाशित किया, प्रोटेस्टेन्टों के पास सभायें, अफसर, न्यायध्यक्ष और सुरक्षित नगर होने लगे थे। वे प्रायः राजकीय आज्ञाओं का अवहेलना किया करते थे। रिचलू उनको धार्मिक अधिकार से वंचित करना नहीं चाहता था लेकिन वह चाहता था कि वे राजनीतिक मामलों में राजा की आज्ञाओं का पालन करें। सन् १६२५ ई० में प्रोटेस्टेन्टों ने विद्रोह किया। विद्रोह सफलतापूर्वक दबा दिया गया और सन् १६२६ ई० में एक आज्ञा प्रकाशित की गई जिसके अनुसार नगरों पर से उनका अधिकार जाता रहा और राजनीतिक सभा करने के अधिकार से वंचित कर दिये गये। धार्मिक अधिकार पहले की तरह बने रहें।

(ख) नौबुल्स के प्रभाव को कम करने में रिचलू को ह्यूगनाट्स की अपेक्षा अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। नौबुल्स प्रान्तों के गवर्नर होते

pride of the great nobles, restoring all your subjects to their duty and raising the name of your majesty among foreign nations to its rightful place."

(Quoted from Hayes' Modern Europe)

थे। धीरे-धीरे वे शासकों के स्थान पर प्रान्तों के स्वामी हो गये थे। सेना पर उनका अधिकार था और वे बारम्बार और स्वच्छन्द से राजा की आज्ञाओं का उलंघन करते थे। रिचलू इस असह्य स्थिति से छुटकारा पाना चाहता था।

रिचलू ने राजसैनिकों में भय पैदा कर दी। गुप्तचरों की सहायता तथा छल-कपट से रिचलू ने षड्यन्त्रों का पता लगाया और उनके नेताओं को प्राण दण्ड दिया। विद्रोह के सभी प्रयत्न क्रूरतापूर्वक दबा दिये गये। सन् १६२६ ई० में एक आज्ञा प्रकाशित करके उसने विदेशी आक्रमणों से बचने के कार्य में न आने वाले किलों को नष्ट कर दिया। इस कार्य में रिचलू को किसानों और नागरिकों से विशेष सहायता मिली।

(ग) रिचलू का दूसरा स्थायी कीर्ति-स्तम्भ फ्रान्स के शासन का पुनः संगठन करना है। रिचलू अभिमानी और स्वतंत्र गवर्नरों के व्यवहारों से तंग आ गया था। उसने उनके अधिकारों को दूसरे अफसरों को जो इनटेन्डेन्ट कहलाते थे दे दिया। ये अफसर राजा के द्वारा मध्यम श्रेणी के लोगों में से चुने जाते थे। प्रत्येक को एक जिला दिया जाता था और उनको राजकीय कर निर्धारित और एकत्र करना पड़ता था। वे स्थानीय पुलिस या सेना का संगठन करते थे और न्यायालयों की देखभाल करते थे। उनकी संख्या लगभग तीस थी और उन्हें पुलिस कर लगाने व वसूल करने तथा न्याय सम्बन्धी अधिकार प्राप्त थे। अधिकारों की अदला-बदली से गवर्नरों का प्रभुत्व कम हो गया और इनटेन्डेन्ट अफसरों का जो अपने पद के लिए राजा पर पूर्ण रूप से आश्रित थे, प्रभाव धीरे धीरे बढ़ने लगा। इस प्रकार राजा की शक्ति में वृद्धि हुई और फ्रान्स में एकात्मक सरकार की स्थापना हुई।

कार्डीनल रिचलू की परराष्ट्र नीति—परराष्ट्र नीति में रिचलू के दो प्रधान लक्ष्य थे—पहला योरप के देशों में फ्रान्स को एक उच्च स्थान देना, और दूसरा फ्रान्स की सीमा में विस्तार करना। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने सफलतापूर्वक तीस वर्षीय युद्ध में भाग लिया।

आस्ट्रिया और स्पेन उसके प्रधान शत्रु थे। सर्वप्रथम उसने प्रोटेस्टेन्ट जर्मनी, स्वीडन और डच की सहायता की जो स्पेन और आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। सन् १६३५ ई० में जब अप्रत्यक्ष सहायता सफल सिद्ध न हुई

तो रिचलू ने तीस वर्षीय युद्ध में स्वयं हस्तक्षेप करना उचित समझा। रिचलू आस्ट्रिया के हाब्सबर्ग वंशको नीचा दिखलाना चाहता था।

पहले स्पेन की सेना फ्रान्स की अपेक्षा श्रेष्ठ जान पड़ी। सन् १६३६ ई० में स्पेन की एक सेना ने उत्तरी फ्रान्स पर आक्रमण किया और पेरिस तक आ पहुँची। स्पेन की दूसरी सेना ने पिरेनीज को पार करके दक्षिणी फ्रान्स पर आक्रमण किया। फ्रान्स के भाग्य ने पल्टा खाया और उसकी सेना ने नीदरलैण्ड, राईनलैण्ड, उत्तरी इटली और दक्षिणी फान्स से स्पेन वालों को हटाना आरम्भ किया। नीदरलैण्ड और पुर्तगाल वालों ने फ्रान्स का साथ दिया। रोक्राय नामक स्थान पर फ्रान्सीसीयों ने स्पेन की सेना पर विजय पाई।

सन् १६४२ में कार्डीनल रिचलू का देहान्त हो गया। वह तीस-वर्षीय युद्ध के परिणाम को देख न सका। उसकी मृत्यु के छः वर्ष पश्चात् सन् १६४८ ई० में वेस्टफालिया की सन्धि हुई और सत्रह वर्ष बाद पिरेनीज की सन्धि हुई। वेस्टफालिया की सन्धि से स्ट्रासबर्ग नगर छोड़कर सम्पूर्ण अलैसक फ्रान्स को मिला और मेटज़, टाउल और वरडन पर फ्रान्स का अधिकार हो गया। फ्रान्स जर्मनी की राजपरिषद् का सदस्य हो गया। पिरेनीज़ की सन्धि से फ्रान्स को रोसीलान और बेल्जियम का एक भाग मिला। ये सब कार्डीनल रिचलू की परराष्ट्र नीति का फल था।

कार्डीनल मेजारीन—सन् १६४३ई० में लुईस तेरहवें का देहान्त हो गया। उसकी मृत्यु के बाद लुई चौदहवाँ जो केवल पांच वर्ष का था, फ्रान्स का राजा हुआ। लुई चौदहवाँ लुईस तेहरवें और ऐन का पुत्र और स्पेन के फिलिप चतुर्थ का भतीजा था।

लुई चौदहवें के बाल्यावस्था में काडीनल मेजारीन संरक्षक के रूप में कार्य करता था। वह इटली का निवासी था। उसने स्पेन और रोम में धार्मिक शिक्षा पाई थी। यद्यपि वह विदेशी था और फ्रांसीसी भाषा बोल नहीं सकता था लेकिन उसने अपने नये देश में काफी उन्नति की। वह कार्डीनल बन गया और लोग उसे रिचलू का शिष्य और उत्तराधिकारी समझने लगे। रिचलू की मृत्यु के बाद से लेकर अपनी मृत्यु तक—सन् १६४२ ई० से सन् १६६१ ई०—मेजारिन फ्रांस का प्रधान मन्त्री बना रहा।

उसकी परराष्ट्र नीति स्पेन और आस्ट्रिया को नीचा दिखाना था। इस लिए उसने रिचलू के युद्ध को जारी रखा। उसके शासन काल में दो सन्धियाँ हुई। वेस्टफालिया की सन्धि और पिरनीज़ की सन्धि। इन सन्धियों से फ्रान्स का मान बढ़ गया।

अपनी गृह नीति में मेजारिन को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विदेशी होने के कारण वह लोगों का प्रिय न बन सका। उसकी परराष्ट्र नीति लोगों को अप्रिय थी जिसके परिणाम स्वरूप फ्रांन्ड का जन्म हुआ। फ्रांन्ड नोबुलों का अन्तिम विद्रोह था। इस विद्रोह को राजनीतिक रूप दिया गया था। इसमें स्वार्थ की मात्रा अधिक थी। नोबुल्स अपने खोये हुए अधिकारों को पुनः प्राप्त करना चाहते थे। जनता भी इस विद्रोह के पक्ष में थी। यह फ्रान्ड कई वर्ष तक चलता रहा। ट्यूरेन ने पहले विद्रोह के प्रति सहानुभूति दिखलाया लेकिन अन्त में मेजारिन को सैनिक सहायता पहुँचाई। कान्डे ने मेजारिन के विरुद्ध विद्रोह किया और फ्रान्स के विरुद्ध स्पेन से जा मिला। कान्डे फ्रांन्ड के अन्त होने पर फ्रान्स लौटा। फ्रांन्ड का परिणाम यह हुआ कि (क) नोबुल्स पहले की अपेक्षा अधिक अविश्वासनीय हो गये। (ख) पार्लिमेन्ट अपने राजनीतिक और आर्थिक अधिकार से वंचित हो गई। (ग) पेरिस अपने म्युनिसिपल अफसर नियुक्त करने के अधिकार को खो बैठा। (घ) राजा की शक्ति पहले की अपेक्षा अधिक दृढ़ हो गई। इस प्रकार हेनरी चतुर्थ रिचलू और मेजारिन ने लुईस चौदहवें के निरंकुश शासन की नींव डाली।

चौदहवाँ लुई—कार्डिनल मेजारिन की मृत्यु के बाद सन् १६६१ ई० में लुई चौदहवें ने शासन भार को अपने हाथों में ले लिया। हेनरी चतुर्थ, सूली, रिचलू और मेजारिन के कार्यों से उसको काफी लाभ हुआ। जब वह सिंहासन पर बैठा उस समय फ्रान्स उन्नति की अवस्था में था। प्रोटेस्टेन्टों के हुगूनोट्स और नोबुलों के विद्रोह का अन्त हो चुका था। स्टेट्स-जनरल की शक्ति कम थी। स्थानीय शासन इन्टेन्डेन्टों के द्वारा संचालित होता था। फ्रान्स के सभी विदेशी शत्रु परास्त हो चुके थे।

लुई चौदहवाँ एक बड़ा प्रतापी राजा था और उसको लोग 'ग्रान्

मानर्क" कहते थे। उसका समय "लुई चौदहवें का युग" के नाम से प्रसिद्ध है।

चौदहवें लुई का सिद्धान्त—चौदहवां लुई निरंकुश राजसत्ता में विश्वास करता था। वह देश पर निरंकुश शासक के रूप में राज्य करना चाहता था। वह वैधानिक नियमों को नहीं मानता था।* और न वह रिचलू या मेजारिन जैसे प्रभावशाली मन्त्रियों के अधीन ही रहना चाहता था। वह राजनीति का संचालक बनना चाहता था। वह अपने मन्त्रियों का सेवक समझता था। जिसका मुख्य कार्य उसके आज्ञाओं का पालन करना वह अपने को राज्य कहा करता था ('I am the State') और उसका कहना था कि उसे शासन करने का अधिकार ईश्वर से मिला और वह अपने कार्यों के लिए ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है। राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धान्त में अटल विश्वास था।

चौदहवें लुई की गृह-नीति—चौदहवें लुई ने केन्द्रीय सरकार का संगठन किया। उसने अर्थ, सेना, जन सम्बन्धी कार्यों के लिए मार्ग मण्डल स्थापित किया। प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष की नियुक्ति लुई स्वयं करता था। राजा उनके कार्यों को निर्धारित करता था। राजा की आज्ञाओं का पालन करना ही प्रत्येक विभाग के मन्त्रियों का मुख्य कार्य था। मन्त्रियों की सहायता के लिए सहायक और सचिव हुआ करते थे जो मन्त्रियों के कार्यों में सहायता पहुँचाते थे। स्थानीय अफसरों की नियुक्ति राजा ही करता था। वे प्रायः केन्द्रीय मन्त्रियों के अधीन रहते थे।

---

* "The theor[illegible] which Louis held and acted upon was nicely [illegible]y elaborated, fairly early in his personal reign, by a learned French bishop, the celebrated Bossuet (1627-1704), whom the king employed as mentor for his son and heir. Government, according to Bossuet, is divinely ordained in order that men may satisfy the God-given natural instinct of living together in organized political society. Under God, monarchy is of all forms of Government, the most usual and the most ancient and therefore the most natural. It is likewise the strongest and most efficient, therefore the best."
—*Hayes, Modern Europe*

अपनी आर्थिक नीति में लुई चौदहवें को कालबर्ट से विशेष सहायता मिली। कालबर्ट एक व्यापारी का पुत्र था और मध्यम श्रेणी में विशेष रुचि लेता था। युद्ध के विभाग को छोड़कर प्रत्येक विभाग में उसका प्रभाव था। लुई के शासन काल में वह अर्थ मन्त्री नियुक्त हुआ। कर निर्धारण में बहुत सी बुराइयाँ आ गई थीं। जो कर लगाये जाते थे उनमें से आधा ही राजकीय कोष तक पहुँच पाता था। कर एकत्र करने वालों को काफी लाभ होता था। कालबर्ट ने कर-निर्धारण नियम में सुधार किया और वार्षिक घाटा के स्थान पर बचत होने लगा। रिचलू और विशेषकर मेजारिन के समय में लोक सम्बन्धी खर्चे अधिक हो गये थे। नोबुल्स अधिकतर करों से मुक्त थे और करों का भार गरीबों पर पड़ता था। कालबर्ट ने लोक सम्बन्धी खर्चों को कम किया और राजकर सम्बन्धी कार्य कर्त्ताओं की नियुक्ति की। वह प्रत्यक्ष भूमिकर—"टेली" लगाने में असफल रहा लेकिन उसने अप्रत्यक्ष करों की संख्या में वृद्धि की। किसानों के भार को कम करने के लिए कालबर्ट ने खेती को प्रोत्साहित किया। उसने नियम बनाया कि किसान ऋणी होने के कारण अपने औजारों से वंचित नहीं किये जा सकते। सड़कों की मरम्मत की गई और आयात के साधनों में सुधार किया गया।

इसके अतिरिक्त कालबर्ट ने दस्तकारी और वाणिज्य को हर प्रकार से प्रोत्साहन दिया। नये नये उद्योग धन्धे खोले गए। आविष्कारों की रक्षा की गई दूसरे देशों के कारीगरों को आमंत्रित किया गया। अपने देश के कारीगरों को फ्रान्स छोड़ने की आज्ञा नहीं दी गई। दस्तकारों और व्यापारियों को लाभ पहुँचाने तथा छोटे व्यवसायों की रक्षा के लिए विदेशों से आने वाली वस्तुओं पर भारी कर लगाया गया। वाणिज्य में लगे हुए फ्रान्सीसी जहाजों को राजकीय सहायता दी गई और विदेशी जहाजों को फ्रान्सीसी बन्दरगाहों का प्रयोग करने के कारण भारी कर देने के लिए बाध्य किया गया।

व्यापार और वाणिज्य की उन्नति के साथ साथ कालबर्ट ने एक जहाजी बेड़ा तैयार किया। उसने टोलान के जहाज से माल चढ़ाने और उतारने के स्थान तथा शस्त्रगृह की मरम्मत कराया। रोशेफोर्ट, कैले, ब्रेस्ट और हावरे आदि नगरों में जहाज के मरम्मत करने के केन्द्र खोले गये।

कालवर्ट की आर्थिक नीति आज की आर्थिक नीति से बिलकुल भिन्न थी। लेकिन फिर भी उसकी नीति के फल-स्वरूप फ्रान्स के उद्योग-धन्धों को काफी प्रोत्साहन मिला। इसके आर्थिक सुधारों से लोग सुखी और समृद्धि हो गये। ये सुधार बहुत ही शीघ्र और बलपूर्वक किया गया था इसलिए इन सुधारों का प्रभाव स्थानीय हो सका।

चौदहवें लुई की परराष्ट्र नीति—फ्रान्स को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना ही लुई की परराष्ट्र नीति का मुख्य उद्देश्य था। वह अपने पड़ोसियों की कमजोरी से लाभ उठाकर फ्रान्स की सीमा में विस्तार करना चाहता था। वह स्पेन को जीतने तथा स्पेन के सिंहासन पर एक बोरबां को बैठाने का स्वप्न देख रहा था। इसके अतिरिक्त वह स्पेनिश नीदरलैंएड पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। स्पेन को असहाय करने के लिए उसने पुर्तगाल वालों को उनके स्वतंत्रता के युद्धों में गुप्तरूप से सहायता की और पुर्तगाल की राजकुमारी (Infanta) का विवाह इंग्लैंएड के राजा चार्ल्स द्वितीय के साथ करने के लिए उत्साहित किया। आर्थिक सहायता देकर लुई ने चार्ल्स द्वितीय को अपने हाथ की कठपुतली बना लिया।

सन् १६६१ ई० में योरप की स्थिति भी उसकी नीति के अनुकूल थी। तीस-वर्षीय युद्ध समाप्त हो चुका था। जर्मनी छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों मेंविभक्त था जिनमें पारस्परिक द्वेष और ईर्ष्या था जिससे वे बाहरी शत्रुओं से जर्मनी की रक्षा करने में बिलकुल असमर्थ थे। स्पेन का सितारा अस्त हो रहा था। इंग्लैंएड और हालैंएड में शत्रुता थी और वे एक दूसरे के पतन की बाट देखते थे।

लुई को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चार मुख्य लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं—(क) डीवोल्यूसन का युद्ध (ख) डचों का युद्ध (ग) लीग आफ आग्सबर्ग का युद्ध (घ) स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध।

(क) डीवोल्यूसन का युद्ध-डीवोल्यूसन का युद्ध लुई का बेल्जियम जीतने का एक प्रयत्न था। जैसा आगे बतलाया जा चुका है पैरीनीज की सन्धि के अनुसार लुई ने स्पेन के राजा फिलिप चतुर्थ की पुत्री मेरिया थेरिसा से विवाह कर लिया था। एक दूसरे विवाह से फिलिप चतुर्थ को एक पुत्र पैदा हुआ था

जो सन् १६६५ ई० में चार्ल्स द्वितीय के नाम से स्पेन के सिंहासन पर बैठा। फिलिप चतुर्थ की मृत्यु के बाद लुई ने अपनी स्त्री की ओर से स्पेनिश नीदरलैण्ड पर अधिकार जमाना चाहा। लुई का यह अधिकार एक विचित्र रीति-रिवाज पर निर्भर था। लुई चौदहवाँ इस रीति रिवाज पर जो डीवोल्यूसन कहलाता था अड़ा रहा। लुई का यह अधिकार युद्ध करने का एक मात्र बहाना था। चार्ल्स द्वितीय ने लुईस के अधिकार को मानने से इन्कार कर दिया।

डीवोल्यूसन का युद्ध एक वर्ष (१६६७-६८) तक चलता रहा। लुई की योग्य और शिक्षित सेना ने स्पेनिश नीदरलैण्ड के सीमावर्ती किलों को जीत लिया। इस समय तक व्यापारिक युद्ध जो इंग्लैण्ड और हालैण्ड में चल रहा था समाप्त हो चुका था। लुई की सफलताओं ने हालैण्ड में चेतना पैदा कर दी। हालैण्ड ने फ्रान्सीसी सेना की गतिविधि को रोकने के लिए इंग्लैण्ड और स्वीडन से मिलकर (Triple Alliance) बनाया।

(Triple Alliance) से भयभीत होकर लुई को एक्स-ला-चपले की सन्धि करनी पड़ी जिसके अनुसार फ्रान्चे-कान्टे स्पेन के अधीन रहा लेकिन स्पेनिश नीदरलैण्ड में जीते हुए प्रदेशों पर चौदहवें लुई का अधिकार स्थापित हो गया।

(ख) डचों का युद्ध-उसके उद्देश्यों में विघ्न पहुँचाने के कारण लुई डचों से क्रुद्ध हो गया था। (Triple Alliance) डचों के प्रयत्न का फल था। इसलिए लु ने डचों से बदला लेना चाहा। इसके अतिरिक्त डचों के विरुद्ध युद्ध करने के कई एक और कारण थे। डच प्रोटेस्टेन्ट थे और धार्मिक अत्याचार से भागे हुए ह्यूगनाट्स को अपने यहाँ शरण दे रखा था। लुई फ्रान्स की व्यापारिक शक्ति को बढ़ाना चाहता था। इस क्षेत्र में डचों की प्रधानता थी। इसलिए जब तक डचों की शक्ति नष्ट नहीं की जाती फ्रान्स की उन्नति होना असम्भव था।

युद्ध घोषित करने के पहले लुई ने इंग्लैण्ड को उसके मित्रों से वंचित करना चाहा। उसने चार्ल्स द्वितीय से डोवर की गुप्त सन्धि की और इंग्लैण्ड को हालैण्ड का साथ न देने के लिए बाध्य किया। स्वीडन को घूस देकर उसने अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार (Triple Alliance) भंग हो

गया और हालैण्ड और स्वीडन से सहायता की आशा जाती रही। सन् १६७२ ई० में युद्ध आरम्भ हुआ।

फ्रान्सीसी सेना ने लोरेन को जीत लिया। इसके बाद फ्रान्स ने हालैण्ड पर आक्रमण किया और अमसटर्डम को जीत लेने के लिए भयभीत किया। डचों ने जान डिविट (John Dewitt) को अपनी असफलताओं का हेतु बतलाकर मार डाला और उसके स्थान पर विलियम तृतीय को अपना नेता बनाया। उन्होंने बाँधों (Dykes) को काट दिया और उत्तरी हालैण्ड को जल से पूरित कर दिया। उनके इन कार्यों से फ्रान्सीसी आगे बढ़ न सके।

लुई की अभिलाषाओं ने सम्पूर्ण योरप में जाग्रति पैदा कर दी। सम्राट ल्यूपाल्ड और ब्रान्डेनबर्ग के ग्रेट इलेक्टर ने हालैण्ड से सन्धि कर ली। इंग्लैण्ड की जनता ने चार्ल्स द्वितीय को डचों से सन्धि करने के लिए बाध्य किया। इस प्रकार यह युद्ध एक योरपीय युद्ध हो गया। फ्रान्स को अपने शत्रुओं से अकेला ही लड़ना पड़ा। अन्त में सन् १६७८ ई० में युद्ध से तंग आकर दोनों देशों में सन्धि हो गई जो निमवेगेन की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है। इस सन्धि के अनुसार फ्रान्स को स्पेन से फ्रान्के-फ्रान्टे मिला लेकिन हालैण्ड को प्रदेश सम्बन्धी कोई हानि नहीं उठानी पड़ी।

(ग) लीग आफ आग्सबर्ग का युद्ध—डचों से सन्धि हो जाने के बाद लुई ने सोचा कि मध्य कालीन युग में जब जागीर-प्रथा प्रचलित थी कुछ ऐसे जागीर थे जो फ्रान्स के अधीन थे लेकिन फ्रान्स में सम्मिलित नहीं किये गये थे। फ्रान्स की सीमा में विस्तार करने के उद्देश्य को लेकर लुई ने इन जागीरों को मिलाने की सोची। इसकी पूर्ति के लिए उसने "चैम्बर्स आफ री-यूनियन" की स्थापना की। इसमें लुई के ही जज होते थे जिनका मुख्य कार्य, कौन-कौन से प्रदेश फ्रान्स में मिलाये जाने चाहिए, इसका निर्णय करना था। इस प्रकार लगभग बीस मुख्य नगरें—ल्यूजेमबर्ग और स्ट्रासबर्ग को लेकर जो रोम के साम्राज्य में पड़ता था—फ्रांस में मिला दिये गए।

"चैम्बर्स आफ री-यूनियन" के कार्यों से तथा स्ट्रासबर्ग और ल्यूजेम-बर्ग के मिलाये जाने से योरपीय शक्तियों में फ्रान्स के प्रति असन्तोष फैल गया। इसके अतिरिक्त लुई ने (Edict of Nantes) को मानने से इन्कार कर

दिया और पोप से झगड़ा हो जाने के कारण फ्रान्स के प्रति कैथोलिकों की रही-सही सहानुभूति भी जाती रही। सन् १६८६ में विलियम आफ आरेन्ज के कहने पर हालैण्ड, स्पेन, स्वीडन और जर्मनी के सम्राट् ने फ्रान्स के विरुद्ध एक संघ बनाया जो आग्सबर्ग का संघ कहलाता है। विलियम चौदहवें लुईस का घोर शत्रु था और "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" के पश्चात् जब वह इंग्लैण्ड का राजा घोषित हुआ इंग्लैण्ड को भी इस संघ में सम्मिलित कर लिया।

लीग आफ आग्सबर्ग का युद्ध जो लुई का तीसरा युद्ध था सन् १६८८ ई० में आरम्भ हुआ और सन् १६९७ ई० तक चलता रहा। लुई स्थल-युद्धों में जीतता रहा और विलियम को स्टेनकर्क नामक स्थान पर हराया। लेकिन लुई स्थल युद्धों की तरह जल-युद्धों में सफल नहीं हुआ और लाहेग के युद्ध में अंग्रेजों के हाथ करारी हार खानी पड़ी। विलियम भी नामूर के गढ़ को जीतने में सफल हुआ। यह युद्ध आठ वर्षों तक चलता रहा और अन्त में लुई ने सन्धि के लिए प्रार्थना की।

सन् १६९७ ई० में रिजविक की सन्धि हुई जिसके अनुसार (क) लुई को स्ट्रासबर्ग छोड़कर सभी जागीरों को, जो "चेम्बर्स आफ री-यूनियन" के द्वारा फ्रान्स में मिलाये गये थे, स्वतन्त्र करना पड़ा। (ख) डचों को अपने सीमावर्ती किलों में फ्रान्स के विरुद्ध सैना रखने की आज्ञा मिल गई। (ग) फ्रान्स ने डचों के साथ एक व्यापारिक सन्धि करली। (घ) पलाटिनेट से लुई को अपना अधिकार हटाना पड़ा। (ङ) विलियम तृतीय को इंग्लैण्ड का राजा स्वीकार कर लिया गया और लुई ने विलियम के विरुद्ध जेम्स के पुत्र की सहायता न करने का वचन दिया।

रिजविक की सन्धि से लुई के अभिमान और शक्ति को काफी धक्का पहुँचा। फ्रान्स के पतन की ओर यह पहला कदम था। उसके जहाजी बेड़े नष्ट कर दिये गए और लुई को अपने घोर शत्रु विलियम को इंग्लैण्ड का राजा स्वीकार करना पड़ा। लीग आफ आग्सबर्ग पहला युद्ध था जिससे फ्रान्स को कोई लाभ नहीं हुआ।

स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध--स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय जन्म से ही कमज़ोर था और किसी भी समय उसकी मृत्यु हो जाने की सम्भावना थी। उसके कोई सन्तान न थी। ऐसी अवस्था में यदि उसकी मृत्यु हो जाती तो यह निश्चय था कि यौरप के देश उसके राज्य को हड़प लेने के लिए झगड़ पड़ते। इसलिए स्पेनिश उत्तराधिकारी का प्रश्न एक योरपीय प्रश्न हो गया था। चार्ल्स की दो बहनें—मेरिया थेरिसा और मारगरेट थेरिसा थीं जो उत्तराधिकारिणी हो सकती थीं। मेरिया थेरिसा का विवाह फ्रान्स के राजा लुई से और मारगरेट थेरिसा का विवाह आस्ट्रिया के सम्राट् ल्यूपाल्ड से हुआ था। यदि फ्रान्स और आस्ट्रिया में से किसी के राजवंश को स्पेन की गद्दी मिल जाती तो योरपीय शक्ति-सन्तुलन के सिद्धान्त में बड़ी बाधा पड़ती। ऐसी स्थिति में विलियम ने आस्ट्रिया और फ्रान्स से बातचीत करके दो बार बटवारे की सन्धि की जिसके अनुसार स्पेनिश साम्राज्य को उन दोनों राज्यों में विभक्त करना निश्चित हुआ। इसके थोड़े ही दिन पश्चात् सन् १७०० ई० में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु होगई। उसने अपने वसीयत में लुई चौदहवें के पोते फिलिप को अपने समस्त साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। यह समाचार पाते ही लुई ने बटवारे की सन्धियों को मानने से इन्कार कर दिया। इसके अतिरिक्त स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध का एक और कारण था। रिज़्विक की सन्धि में लुई ने विलियम को इंग्लैण्ड का राजा स्वीकार कर लिया था लेकिन अपनी शक्ति के मद में आकर वह फिर जेम्स के पुत्र को इंग्लैण्ड का सिंहासन प्राप्त करने के लिए सहायता देने लगा। ऐसी स्थिति में विलियम तृतीय ने फ्रान्स के विरुद्ध एक संघ (Grand Alliance) बनाया जिसमें इंग्लैण्ड, हालैण्ड आस्ट्रिया और ब्रान्डेनबर्ग प्रशीया, हनोवर और पलाटिनेट के इलेक्टर्स सम्मिलित थे।

स्पेनिश उत्तराधिकारी का युद्ध जो लुई का चौथा और अन्तिम युद्ध था सन् १७०१ ई० में आरम्भ हुआ। युद्ध के शुरू में ही विलियम की मृत्यु हो गई। लेकिन उसकी नीति को रानी ऐन ने अपनाई। मार्लबरो (Marlborough) और प्रिंस यूजेन की संयुक्त सेनाओं ने ब्लेनहम के युद्ध में फ्रान्सीसियों को हराया और वियना को फ्रान्सीसियों के आक्रमण से बचाया।

सन् १७०४ में जिब्राल्टर (Gibralter) पर अधिकार हो जाने से इंगलैण्ड को स्पेन में पैर रखने का आश्रय मिल गया। सन् १७०६ में मार्लबरो ने नीदरलैण्ड में रेमोल्स नामक स्थान पर विजय पाया और प्रिन्स यूजेन ने ट्यूरीन के युद्ध में फ्रान्सीसीयों को परास्त किया। इन सब विजयों के कारण फ्रान्सीसीयों को नीदरलैण्ड छोड़ना पड़ा। जल-युद्धों में स्पेन को अलमान्जा के युद्ध में हार खानी पड़ी।

दो कारणों से इस युद्ध का अवसान हुआ। पहला सन् १७१० ई० में ह्विग मन्त्रिमण्डल हार गई और उसके स्थान पर टोरी मन्त्रिमण्डल हुआ जो शान्ति संस्थापना चाहती थी। दूसरा, सन् १७११ में सम्राट् की मृत्यु के बाद जोसेफ चार्ल्स षष्ठम् के नाम से आस्ट्रिया का सम्राट हुआ। इन कारणों से इंग्लैण्ड और हालैण्ड संघ से अलग हो गये और लुई भी जो असफलताओं से हताश होगया था समझौता करना चाहता था। अतः सन् १७१३ ई० में यूट्रेक्ट की सन्धि हुई जिससे इस युद्ध का अन्त हुआ।

इस सन्धि के अनुसार (क) फ्रान्स के राजकुमार फिलिप पंचम को स्पेन का राजा मान लिया गया, परन्तु साथ ही साथ यह भी निश्चित कर दिया गया कि फ्रान्स और स्पेन के राष्ट्र एक दूसरे से पृथक रहेंगे। (ख)आस्ट्रिया को मीलन, नेपील्स और स्पेनिश नीदरलैण्ड मिला। (ग) सेवाय के ड्यूक को सिसिली और राजा की पदवी मिली। (घ) प्रशीया एक स्वतन्त्र राष्ट्र मान लिया गया। (ङ)हालैण्ड को अपने सीमावर्ती-किलों में सेना रखने की आज्ञा मिल गई। (च) फ्रान्स को अलासक और स्ट्रासबर्ग को छोड़कर राईन नदी के सभी गढ़ों को देना पड़ा। (छ) इंग्लैण्ड को स्पेन से जिब्राल्टर और माइनार्का और फ्रान्स से न्यूफाउन्डलैण्ड, नोवास्कोटिया और हडसन की खाड़ी प्राप्त हुआ।

इस सन्धि से लुई की सभी अभिलाषायें जाती रहीं और फ्रान्स शक्तिहीन हो गया। योरप में शक्ति-सन्तुलन की नीति फिर से स्थापित की गई। जिब्राल्टर के मिल जाने से "भूमध्यसागर का फाटक" इङ्गलैण्ड को प्राप्त हुआ

और अमेरिका में कुछ उपनिवेश तथा दास-व्यापार का एकाधिकार मिल जाने से अमेरिका के समुद्रों पर भी इङ्गलैण्ड का यथेष्ट अधिकार हो गया।*

चौदहवाँ लुई और फ्रान्स का पतन—चौदहवाँ लुई जब फ्रान्स का राजा हुआ उस समय फ्रान्स अपनी उन्नति की चोटी पर पहुँच चुका थी। हेनरी चतुर्थ, रिचलू और मेज़ारिन के प्रयत्नों से केन्द्रीय सरकार का संगठन हो चुका था। वेस्टफालिया और पिरेनीज़ की सन्धियों से फ्रान्स का मान बढ़ गया था। इन सबसे लाभ उठाकर चौदहवाँ लुइ फ्रान्स में स्थायी उन्नति का बीजारोपण कर सकता था लेकिन उसकी अभिलाषाओं ने उसे धोखा दिया। खज़ाना खाली हो गया। लोगों को अधिक कर देने पड़े जिससे फ्रान्स अवनति की ओर अग्रसर होने लगा। ऐसी स्थिति में फ्रान्स का पतन होना अवश्यम्भावी था।

प्रश्नोत्तर

1. "But for the Government of Henry IV there could have been no age of Louis XIV." Explain.

(*Calcutta*-1929)

(देखिये पृष्ठ ६३, ६४, ६५, ६८)

2. Give in brief the achievements of Henry IV of France.

(देखिये—प्रश्न १ का उत्तर)

3. Form an estimate of Cardinal Richelieu's home and foreign policy.

(*Benares*-1947)

(देखिये—पृष्ठ ६०, ६१, ६२,)

4. What were the aims and achievements of Cardinal Richlieuas a Statesman?

---

*"If the treaty of Westphalia marks the decline of the house of Habsburg and the rise of France, the treaty of Utrecht marks the decline of France and the rise of England"

(देखिये—प्रश्न ३ का उत्तर)

5. How far Cardinal Mazarin was the successor and the imitator of Cardinal Richelieu ?

(देखिये, ६२, ६३)

6. Describe the economic reforms of Colbert, the finance minister of Louis XIV.

(देखिये—६६)

7. Describe the parts played by England and Holland in resisting the establishment of Louis XIV's Supremacy over Europe. How far was the "balance of power" secured by the Treaty of Utrecht ?

(देखिये—पृष्ठ ६७, ६८, ६९, ७०, ७१)

8. Whom do you consider the greatest national leader in Europe during the period 1572-1646. Give reasons for your opinion. (*Nagpur*)

(देखिये—प्रश्न ४ का उत्तर)

9. What aims did Louis XIV try to carry out in his foreign policy ? How far did he realize them ?

(*Benares* 1949)

(देखिये—पृष्ठ ६६, ६७, ६८, ६९)

10. How far was Louis XIV responsible for the subequent downfall of the French monarchy.

(*Allahabad* 1929)

(देखिये—पृष्ठ ६७, ७१)

दसवाँ पाठ

स्वीडन

स्वीडन की उन्नति के कारण—गस्टावस वासा ने स्वीडन को राजनीतिक मामलों में डैनमार्क से स्वतन्त्र किया था और बाद में धार्मिक मामलों में भी स्वीडन रोम से स्वतन्त्र हो गया। स्वीडन के जितने राजा सिंहासन पर बैठे सभी योग्य और प्रतापी थे जिसके कारण स्वीडन की उन्नति बराबर होती रही। सत्तरहवीं शताब्दी में स्वीडन एक महान् शक्ति हो गया।

गस्टावस अडाल्फस की नीति—वासा वंश का सबसे प्रतापी राजा गस्टावस अडाल्फस था जो अपनी योग्यता के कारण "उत्तर का शेर" ("Lion of the North") कहा जाता था। गस्टावस अडाल्फस ने स्वीडन को एक प्रथम-श्रेणी की शक्ति बना दिया और उत्तरी योरप में स्वीडन की धाक जम गई। जब वह स्वीडन के सिंहासन पर बैठा उस समय स्वीडन को पोलैण्ड, डैनमार्क और रूस से भय था। लेकिन उसमें अपने शत्रुओं से अधिक योग्यता थी और वह सफलतापूर्वक दस वर्ष तक उनके विरुद्ध युद्ध करता रहा। उसने रूस से इनग्रीया और केरीलिया और पोलैण्ड से लिवोनिया जीता। इसके अतिरिक्त उसने प्रोटेस्टेन्टों का पक्ष लेकर तीस-वर्षीय युद्ध में सक्रिय भाग लिया तीस-वर्षीय युद्ध में भाग लेने के उसके दो मुख्य उद्देश्य थे—पहला वह बाल्टिक सागर पर स्वीडन का अधिकार जमाना चाहता था और इसीलिए वह पोलैण्ड से युद्ध कर रहा था, दूसरा वह प्रोटेस्टेन्ट धर्म का कट्टर अनुयायी था और वह सदा प्रोटेस्टेन्ट धर्म को ऊँचा देखना चाहता था। गस्टावस ने फ्रान्स से सन्धि कर ली। जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों ने भी गस्टावस का साथ दिया। गस्टावस ने कैथोलिक सन्धि के नेता टिली को लिपजिग (Leipzig) के निकट ब्रीटेनफेल्ड के युद्ध में पराजित किया। इसके बाद गस्टावस ने बवेरिया पर भी आक्रमण किया। टिली गस्टावस के आक्रमण को रोक न सका और वह सन् १६३२ ई० में लेच नामक स्थान पर

मारा गया । गस्टावस की सफलताओं से भयभीत होकर फरडीनाण्ड द्वितीय को अपनी रक्षा के लिए वालेन्स्टेन को बुलाना पड़ा । सन् १६३२ ई० में ल्युट्ज़ेन के युद्ध में वालेन्स्टेन पराजित हुआ लेकिन गस्टावस इस युद्ध में मारा गया । गस्टावस की मृत्यु के पश्चात् उसके मन्त्री (Oxestiern) ने उसकी राजनीतिक नीति को अपनाया । सन् १६४८ ई० में वेस्टफालिया की सन्धि (Treaty of Westphatia) हुई जिससे योरपीय राजनीति में स्वीडन का नाम बढ़ गया । (क) स्वीडन को पश्चिमी पोमेरानिया मिला । (ख) ओडर, एल्ब और वेसर नदियों के मुहानों के मिल जाने से बाल्टिक सागर पर स्वीडन का आधिपत्य स्थापित हो गया । (ग) स्वीडन को प्रथम श्रेणी की शक्ति स्वीकार कर ली गई । (घ) स्वीडन जर्मनी की राजपरिषद् का सदस्य हो गया जिससे स्वीडन का प्रभाव जर्मनी के मामलों में बढ़ गया । इस प्रकार गस्टावस अडाल्फस की नीति स्वीडन को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध हुई ।

बारहवें चार्ल्स की नीति—ग्यारहवें चार्ल्स की मृत्यु के बाद सन् १६९७ ई० में पन्द्रह वर्षीय बालक बारहवाँ चार्ल्स स्पेन के सिंहासन पर बैठा । बारहवाँ चार्ल्स शिक्षित था और बचपन से ही सैनिक शिक्षा में रुचि लेता था । यद्यपि वह एक उद्विग्न और सूक्ष्मग्राही बालक था लेकिन उसमें वंशीय पराक्रम और सैनिक दृढ़ता थी । उसमें विचार शक्ति का अभाव था जिससे उसे "उत्तर का पागल मनुष्य" कहा जाता है । कुछ लेखकों ने उसकी समता डान क्वीजाट से भी की है ।

कठिनाई से उसे तीन वर्ष व्यतीत हुए होंगे कि चार्ल्स को उत्तरी देशों का सामना करना पड़ा । स्वीडन के निकटवर्ती देशों ने स्वीडन को आपस में बाँट लेना चाहा । सन् १६८७ ई० में जार पिटर ने पोलैण्ड के बादशाह अगस्टस द्वितीय से बात-चीत करके स्वीडन के बटवारे की एक योजना तैयार किया । इस योजना के अनुसार पोलैण्ड को लिवोनिया और इस्टोनिया मिलता, इनग्रीया केरीलिया और बाल्टिक सागर का एक बन्दरगाह रूस को मिलता, पश्चिमी पोमेरानिया ब्रान्डेनबर्ग में मिला ली जाती और डेनमार्क का [illegible] और एल्ब तथा वेसर नदियों के मुहानों पर अधिकार हो जाता । कैनडोनिया और

फिनलैंएड ही केवल चार्ल्स के अधीन रहता। सन् १६६६ में सकसोनी डेनमार्क और रूस ने मिलकर एक संघ बनाया।

बारहवें चार्ल्स को जब इस सन्धि का पता चला तो उसने सर्व प्रथम डेनमार्क पर आक्रमण किया और डेनमार्क के राजा को सन् १७०० ई० में सन्धि करने के लिए बाध्य किया। इसके पश्चात् चार्ल्स बाल्टिक सागर को पार करके इस्टोनिया पहुँचा और रूस की सेना को जो नार्वा के गढ़ को घेरे हुए थी परास्त किया। इसके बाद उसने पोलैएड के राजा अगस्टस पर आक्रमण किया और वारसाव को जीत लिया। अगस्टस को सकसोनी भाग जाना पड़ा। इस प्रकार बारहवें चार्ल्स ने सन्धि के सभी सदस्यों को पराजित किया और उसकी सैनिक योग्यता ने सम्पूर्ण योरप को चकित कर दिया।

चार्ल्स पोलैएड के बादशाह को परास्त करके ही सन्तुष्ट हुआ। वह अगस्टस को अपना व्यक्तिगत शत्रु समझता था और इसलिए उसे राज्य से वंचित करके अपने नियुक्त व्युक्ति को (Stanislaus) पोलैएड का राजा बनाना चाहता था। अगस्टस को अन्त में हार मानना पड़ा। वह पोलैएड के गद्दी से हटा दिया गया और उसके स्थान पर चार्ल्स का व्यक्ति (Stanislaus) पोलैएड का राजा हुआ। इसी समय चौदहवाँ लुई स्वीडन से सन्धि करने के लिए इच्छुक था। पिटर भी शान्ति चाहता था और यदि उसे फिनलैएड की खाड़ी में एक बन्दरगाह दे दिया जाता तो वह अपनी बाल्टिक विजयों को लौटा देने के लिए तैयार था। चार्ल्स अपनी शक्ति के मद में आकर लुई और पिटर के प्रस्तावों को टुकरा दिया।

चार्ल्स ने पोलैएड के साथ युद्ध करके एक बड़ी भारी भूल किया। पोलैएड के युद्धों से पिटर को अपनी सेना में सुधार करने का अच्छा अवसर मिला। इसके अतिरिक्त चार्ल्स सीधा मास्को पर आक्रमण करना चाहता था जो उसका भूल था और जो आगे चलकर नेपोलियन के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। सन् १७०८ ई० में पुल्टावा नामक स्थान पर रूसी सेना से चार्ल्स की मुठभेड़ हुई। चार्ल्स हार गया और वह अपने कुछ साथियों के साथ टर्की भागा। बाल्टिक पर रूस का अधिकार हो गया। पिटर ने टर्की सुल्तान से एक सन्धि किया।

और एजीव नगर देना स्वीकार किया। अन्त में चार्ल्स को इटली छोड़ना पड़ा और जब वह स्वीडन लौटा उसने अपने को शत्रुओं से घिरा हुआ पाया। सन् १७१८ ई० में जब वह फ्रेड्रिकसाल जीत रहा था मारा गया। चार्ल्स की मृत्यु के बाद नाइस्टाड की सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार हनोवर को ब्रीमेन और वरडेन मिला, प्रशीया को स्वीडिश पोमेरानिया मिला और डेनमार्क को स्कलेसविग मिलाने की आज्ञा मिल गई। अगस्टस को पोलैण्ड का राजा स्वीकार कर लिया गया। रूस को केरीलिया, इनग्रीया, इस्थोनिया और लिवोनिया के मिल जाने से "पच्छिम की खिड़की" (Window to the West") मिल गया। नाइस्टाड की सन्धि रूस की उन्नति और स्वीडन के पतन का चिह्न है।

स्वीडन के पतन के कारण—जिस वेग के साथ स्वीडन की उन्नति हुई उसी प्रकार उसकी अवनति भी हुई। इसके तीन मुख्य कारण थे। (क) स्वीडन के पतन का पहला मुख्य कारण चार्ल्स की अदूरदर्शी नीति है। उसमें सैनिक योग्यता थी और उसने अपने शत्रुओं को नीचा दिखलाया लेकिन वह एक दूरदर्शी शासक की भाँति अपने विजयों से लाभ न उठा सका। लुई और पिटर के प्रस्तावों को ठुकरा कर उसने एक बड़ी भारी भूल किया। उसने पोलैण्ड के युद्धों में अपनी बहुमूल्य समय और शक्ति को व्यर्थ नष्ट किया जिससे पिटर को अपनी शक्ति को दृढ़ करने का अच्छा अवसर मिला (ख) गस्टावस अडाल्फस से लेकर बारहवें चार्ल्स तक स्वीडन की उन्नति का मुख्य कारण राजाओं की व्यक्तिगत योग्यता थी। उनके राज्यों में भिन्न भिन्न देश के लोग रहा करते थे जिनमें जातीय भिन्नता थी। उनके धर्म, भाषा और संस्कृति भिन्न थे इसलिए उनमें एकता का अभाव था। ऐसे राज्य पर केवल सैनिक सहायता से शासन किया जा सकता था जो स्वीडन जैसे छोटे देश के लिए असम्भव था। (ग) स्वीडन की विदेशी सम्पत्ति अधिकतर बाल्टिक सागर के किनारों पर थी और जिसकी रक्षा के लिए एक शक्तिशाली जहाजी बेड़ा परमावश्यक था। स्वीडन ने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया और जब रूस और प्रशीया ने अपनी जल शक्ति को बढ़ा ली तो उनके सामने स्वीडन का टिकना असम्भव हो गया।

प्रश्नोत्तर

1. Attempt an estimate of the character and work of Gustavus Adolphus. (*Calcutta*-1916)

(देखिये—पृष्ठ ७४, ७५)

2. "Charles XII of Sweden was a Don Quixote promoted to the throne", do you agree? (*Calcutta*-1924)

(देखिये—पृष्ठ ७५, ७६, ७७,)

3. Review the career of Charles XII of Sweden. What were the causes of his disastrous end. (*Calcutta* 1936)

(देखिये—प्रश्न २ का उत्तर)

4. Trace briefly the part played by Sweden in European affairs under Gustavus Adolphus and Charles XII.

(*Benares*. (1947)

(देखिये—पृष्ठ ७७, ७८, ७९, ८०)

5. Explain the meteoric rise of Sweden in the Seventeenth century and her sudden fall in the beginning of the eighteenth century. (*Benares* 1948)

(देखिये—पृष्ठ ७७, ७८, ७९, ८०)

6. Account for the rise and fall of Sweden as a great power. (*Benares* 1950)

(देखिये—प्रश्न ५ का उत्तर)

ग्यारहवाँ पाठ

रूस की उन्नति

रूस का जन्म—रूस का जन्म अन्य देशों की अपेक्षा बहुत देर में हुआ। जब योरपीय देशों में धार्मिक और राजनीतिक उथल-पुथल मच रहे थे और जब अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें उनको एक सूत्र में बांध रही थी उस समय रूस का अन्य देशों से विच्छेद था और उसमें अराजकता का साम्राज्य फैला हुआ था।

सातवीं शताब्दी में रूरिक वंश ने रूसवालों का संगठन किया था। तेरहवीं शताब्दी में रूस मंगोलों के अधीन हो गया। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में इवान महान् ने रूस को मंगोलों से स्वतन्त्र किया और रूस साम्राज्य की नींव डाली। इवान चतुर्थ जो "टेरीबिल" के नाम से प्रसिद्ध है, टारटारों से अस्ट्राखन जीत कर रूस की सीमा को दक्षिण की ओर कैस्पियन सागर तक फैलाया। सन् १५-६८ ई० में रूरिक वंश का अन्त हो गया और रूस में अराजकता फैल गई। स्वीडन और पोलैण्ड ने रूस की अशान्ति से लाभ उठाना चाहा। अन्त में सन् १६१३ ई० में रूस की रास्ट्रीय पार्टी ने मिचाइल रोमानोफ को रूस का राजा बनाया जिसने एक नये वंश की स्थापना की। रोमानोफ वंश के अधीन रूस ने काफी उन्नति की। स्वीडन और पोलैण्ड के आक्रमणों का भय जाता रहा और साइ-बेरिया (Siberia) रूस में सम्मिलित कर लिया गया था।

पिटर के पहले रूस की स्थिति—सत्रहवीं शताब्दी में रूस का कोई विशेष महत्त्व न था। वह योरोपीय देशों से विच्छेद था। बाल्टिक सागर पर स्वीडन का अधिकार था और काला सागर का लगभग उत्तरी किनारा टर्की के अधीन हो गया था। रूस का समुद्र पर कोई अधिकार न था। पश्चिम और दक्षिण में रूस स्वीडन पोलैण्ड, टर्की और परसिया आदि शक्तिशाली देशों से घिरा हुआ।

* "Russia is the last born child of European Civilisation"

था। रूस वालों का जीवन और रहन सहन एशिया वालों से मिलता जुलता था और वे प्रायः ईसाई धर्म के अनुयायी थे।

रूस में निरंकुश राजसत्ता थी। राजाओं की शक्ति पर दो रुकावटें थी। पहला, चर्च जिसका प्रभाव धार्मिक मामलों में अधिक था, दूसरा स्ट्रिल्टसी (Streltsi) जो ज़ार के शरीर-रक्षक होते थे।

पिटर महान्—पिटर महान् मिचाइल रोमानोफ का पौत्र था और वर्तमान रूस का राष्ट्रपिता कहलाता है। अपने बड़े भाई की मृत्यु के बाद सन् १६८६ ई० में पिटर रूस के सिंहासन पर प्रतिष्ठित हुआ। बचपन से ही पिटर को यन्त्र सम्बन्धी औजारों और अविष्कारों में और विशेषतयः नाव बनाने में रुचि थी। जहाज बनाना और जहाज चलाना उसके मनोविनोद के साधन बन गये थे। जब वह केवल इक्कीस वर्ष का था आरचंगेल पहुँचा एक ऐसे जहाज पर जिसको उसने स्वयं बनाया था। सन् १६९६ ई० में जब वह रूस का ज़ार हुआ एक जहाजी, बेड़ा तैयार किया और तुर्कों को काले सागर पर पराजित किया और एजोव बन्दरगाह पर कब्जा कर लिया। पश्चिमी सभ्यता और सरकार का अध्ययन करने के लिए उसने जर्मनी हालैण्ड और इंग्लैण्ड की यात्रा किया। हालैण्ड में उसने जहाज बनाने, शरीर रचना शास्त्र और नकाशी की शिक्षा पाई। इंग्लैण्ड में उसने व्यवसाय और वाणिज्य का अनुसन्धान किया और प्रसीया की सैनिक व्यवस्था का भलीभाँति निरक्षण किया। सभी स्थानों में जहाँ कहीं उसने भ्रमण किया, मल्लाहों शिल्पकारों यन्त्रकारों दूसरे कारीगरों को एकत्र किया और अपने देशवासियों को शिक्षा देने के लिए और उनको रूस भेजा।

पिटर की गृह नीति—पिटर का राज्यकाल निरंकुश राजसत्ता के रुकावटों के हटाये जाने के लिए प्रसिद्ध है। उसके शासन-काल में निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना की गई जो रूस में स्वैराधिराज्य (Autocracy) कहलाता है। उसकी गृह-नीति के पांच मुख्य उद्देश्य थे—(क) स्ट्रिल्टसी (Streltsi) का दमन करना (ख) चर्च के प्रभाव से राज्य को मुक्त करना (ग) रूस में एकात्मक सरकार की स्थापना करना (घ) पश्चिमी सभ्यता का प्रचार करना—(ङ) आर्थिक उन्नति करना।

(क) स्ट्रिल्टसी का दमन करना—पिटर सैनिक युद्ध विद्या का अध्ययन करने वाला स्वेच्छाचारी शासक था। वह रूस में एक शक्तिशाली सेना बनाकर स्ट्रिल्टसी के प्रभाव को कम करना चाहता था। उसने रूस वालों की एक सेना तैयार किया जो विदेशियों द्वारा अधिकृत और अनुशासित की जाती थी। ये विदेशी पूर्णरूप से पिटर पर आश्रित होते थे। इस प्रकार उसने स्ट्रिल्टसी के स्थान पर एक सेना तैयार किया जो उसकी युद्ध-नीति को सफल बनाने में सहायक सिद्ध हुई।

सैनिक व्यवस्था के खर्चे के लिए पिटर ने रुपया लेना आरम्भ किया। स्थानीय और केन्द्रीय सरकारों से पर्याप्त धन न मिलने के कारण पिटर ने उनको विघटित कर दिया। और सम्पूर्ण देश को "सरकारों" (Gubernii) या "प्रान्तों" में विभाजित किया। हर एक "सरकार" और "प्रान्त" को एक सैनिक अफसर के आधीन रखा गया जिनका मुख्य कार्य अपनी नियत सैन्य-दल के खर्चे के लिए जनता से पर्याप्त धन वसूल करना था।

(ख) चर्च के प्रभाव से राज्य को मुक्त करना—स्ट्रिल्टसी के प्रभाव को कम करने के पश्चात् पिटर ने चर्च के प्रभाव को भी कम करना चाहा। वह चर्च के प्रभाव से भली भाँति परिचित था। वह चाहता था कि चर्च में भी स्वराधिराज्य स्थापित किया जाय। अतः उसने ऐसी नीति को अपनाया जिसके द्वारा चर्च सरकार का एक हितकारी संस्था बन जाय। एक ओर तो उसने प्राचीन धर्म के साथ सहानुभूति दिखलाया और नास्तिकों और अन्य मतावलाम्बियों को कष्ट पहुँचाया और दूसरी ओर उसने चर्च को अपने अधीन किया। उसने मास्को के पादड़ी को धार्मिक संस्था के अध्यक्ष पद से वंचित कर दिया। चर्च की सम्पूर्ण शक्ति को एक संस्था में जो होली साइनाड कहलाती थी सन्निहित कर दी गई। इस संस्था के सभी सदस्य पादड़ी होते थे और उनकी नियुक्ति जार स्वयं करता था। इस संस्था की अनुमति के बिना धार्मिक पदों पर कोई नियुक्ति नहीं हो सकती थी। धर्मोपदेश देने तथा पुस्तकों के प्रकाशन के लिए भी इस संस्था की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक था।

(ग) रूस में एकात्मक सरकार की स्थापना करना—राज्य का प्रधान जार सम्राट् होता था जिसकी शक्ति अपरिमित और निरंकुश होती थी।

नोबुलों की मध्यकालीन सभा जो पहले नियम सम्बन्धी अधिकारों का प्रयोग करती थी नष्ट कर दी गई और उसके स्थान पर एक कौंसिल की नियुक्ति की गई जिसका मुख्य कार्य जार को सलाह देना था। कौंसिल के सदस्यों की नियुक्ति जार करता था। उसने स्थानीय सरकारों को भी नष्ट किया और देश का शासन जार के व्यक्तिगत सलाहकारों द्वारा होने लगा। अपनी इच्छाओं को कार्य के रूप में परिणत करने के लिए वह विशेषतया अपनी नई सेना पर निर्भर करता था।

(घ) पश्चिमी सभ्यता का प्रचार करना—पिटर रूस में पश्चिमी सभ्यता का प्रचार करना चाहता था। वह चाहता था कि रूस वाले पश्चिमी रीति रिवाजों को अपनावें। इस उद्देश्य को लेकर उसने कई नियम बनाये। दाढ़ी रखने वालों पर भारी कर लगाया गया। इस कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए उसने अपनी दाढ़ी और मोछों को भी साफ करवा डाला। रूसी पोशाक के स्थान पर फ्रान्स और जर्मनी की पोशाकों का प्रयोग किया जाने लगा। तम्बाकू का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया। पर्दा की प्रथा को भी हटा दिया गया और दरबार के सभी उत्सवों में स्त्री पुरुष आपस में मिल जुल सकते थे। इन सब सुधारों का प्रभाव जनता पर बहुत कम पड़ा लेकिन भविष्य में इन सुधारों का बहुत ही अच्छा परिणाम निकला।

(ङ) पिटर ने देश की आर्थिक स्थिति की ओर भी ध्यान दिया। उसने खेती की उन्नति करने के लिए प्रयत्न किया। व्यापार और व्यवसाय को प्रोत्साहित करके उसने मध्यम श्रेणी को दृढ़ किया। इसके अतिरिक्त उसने कई व्यवसायों की स्थापना किया। वह जर्मनी की संघ-प्रथा का भी रूस में प्रचार करना चाहता था। सेना और युद्ध में बहुत अधिक अभिरुचि होने के कारण उसका प्रयत्न असफल रहा।

पिटर की परराष्ट्र नीति—परराष्ट्र नीति में पिटर के दो मुख्य उद्देश्य थे। पहला रूस की सीमा को कैस्पियन सागर (Caspian sea) और इरान तक फैलाना दूसरा काला सागर और बाल्टिक सागर पर अधिकार करके रूस और योरप के व्यापारिक सम्बन्ध को दृढ़ किया।

इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में स्वीडन और टर्की साम्राज्य की बाधायें पड़ती

थी। इसलिए पिटर महान को इन देशों के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा। स्वीडन के विरुद्ध उसे अधिक सफलता मिली लेकिन तुर्कों के विरुद्ध उसकी नीति अधिक सफल न हुई।

सन् १६९७ ई० में जब बारहवाँ चार्ल्स स्वीडन का राजा हुआ, पिटर ने पोलैण्ड के बादशाह आगस्टस द्वितीय से मिलकर एक योजना तैयार किया जिसके अनुसार स्वीडन का बटवारा करने का निश्चय हुआ। अन्त में सन् १६९९ ई० में पिटर ने एक संघ बनाया जिसमें सक्सोनी, डेनमार्क और रूस सम्मिलित थे। सन् १७०० ई० में बारहवें चार्ल्स ने डेनमार्क के बादशाह को सन्धि करने के लिए विवश किया। इसके बाद उसने रूसी सेना को नार्वा के युद्ध में परास्त किया। इसी प्रकार आगस्टस भी हारा, वारसाव छीन लिया गया और उसे पोलैण्ड छोड़कर सक्सोनी भाग जाना पड़ा। इस प्रकार संघ के प्रत्येक सदस्य को हार खानी पड़ी और संघ छिन्न भिन्न हो गया।

शीघ्र ही पिटर के भाग्य ने पलटा खाया। जब बारहवाँ चार्ल्स पोलैण्ड के विरुद्ध युद्ध करने में व्यस्त था पिटर को अपनी सेना में सुधार करने का अच्छा मौका मिला। उसने चार्ल्स का मास्को (Moscow) जीतने के प्रयत्न को विफल किया और सन् १७०९ ई० में पल्टावा नामक स्थान पर स्वीडन की सेना को हराया। स्वीडन की सेना नष्ट कर दी गई और बाल्टिक सागर पर रूस का अधिकार हो गया। सन् १७१८ ई० में बारहवाँ चार्ल्स मारा गया और उसकी मृत्यु के पश्चात् स्वीडन ने रूस के साथ नाइस्टाड की सन्धि किया जो रूस की उन्नति और स्वीडन के पतन का चिन्ह था। इस सन्धि से रूस को केरीलिया, इनग्रीया, इस्टोनिया और लिवोनिया मिला। इस सन्धि का रूस के इतिहास में विशेष महत्व है।

तुर्कों के विरुद्ध पिटर को विशेष सफलता नहीं मिली। पिटर ने तुर्कों पर कई आक्रमण किये लेकिन उसके सभी प्रयत्न विफल रहे। अन्त में पिटर ने तुर्कों से सन्धि कर ली जिसके अनुसार पिटर ने एजोव नगर देना स्वीकार कर लिया। सन् १७२७ ई० में पिटर की मृत्यु हो गई।

कैथरीन महान् (द्वितीय)—सन् १७६२ में कैथरीन द्वितीय जो सामान्य रूप से कैथरीन महान कही जाती है। रूस के सिंहासन पर प्रतिष्ठित

हुई। जन्म से वह रूस की नागरिक नहीं थीं बल्कि वह प्रोटेस्टेण्ट जर्मनी की एक राजकुमारी थी। वंशीय सम्बन्धों से वह रूस की उत्तराधिकारिणी हुई।

कैथरीन की गृह-नीति—अपनी गृह नीति में कैथरीन ने "सरकारों" और "जिलों" का पुनः संगठन किया। और प्रत्येक "सरकार" और "जिलों" को क्रमशः गवर्नर और वाइस गवर्नर के अधीन। गवर्नर और वाइस गवर्नरों की नियुक्ति वह स्वयं करती थी। उसने चर्च की सम्पत्ति को लौकिक कार्यों में लगाना आरम्भ किया जिसके कारण पहाड़ी राजकीय अनुग्रह के लिए पूर्णरूप से राज्य पर निर्भर हो गये।

कैथरीन वास्तव में एक स्वेच्छाचारी शासिका थी और वह चाहती थी कि अठारहवीं शताब्दी के लोग उसे फ्रेड्रिक द्वितीय या जोसेफ द्वितीय की तरह ("Enlightened Despot") समझें। वह उसके विद्योन्नति में भी व्यक्तिगत रुचि लेती थी। विद्या की प्रसार के लिए स्कूल और कालेज खोले गए। फ्रान्सीसी भाषा को वह सभ्य समाज की भाषा बनाना चाहती थी। इसलिए उसने उच्च वर्ग के लोगों को फ्रान्सीसी भाषा का प्रयोग करने के लिए उत्साहित किया। "नई खेती" का अध्ययन करने के लिए उसने रूसी राजकुमारों को इंग्लैण्ड भेजा।

कैथरीन किसानों की स्थिति में सुधार करना नहीं चाहती थी। जो सुधार के इच्छुक थे उन्हें दण्ड दिया जाता था। उसके जनता की गरीबी और अशिक्षितता* को दूर करने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किये।

कैथरीन की परराष्ट्र नीति—व्यभिचारी और कुटिल स्त्री होते हुए भी कैथरीन की परराष्ट्र नीति सफल रही। युद्ध और विजयों से उसने रूस को महान् शक्ति दी।

---

*कैथरीन ने मास्को के गवर्नर के पास प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में जो पत्र लिखा था वह इस प्रकार था—

"My dear prince, do not complain that the Russians have no desire for instruction. If I institute schools it is not for us, it is for Europe, where we must keep our position in public

अट्ठारहवीं शताब्दी में रूस के तीन मुख्य शत्रु थे जो रूस की योरपीय विस्तार में रुकावटें थीं। ये शत्रु स्वीडन, पोलैंएड और तुर्क थे। पिटर के शासन काल में नाइस्टाड की सन्धि से स्वीडन का दमन हो चुका था। पोलैंएड और तुर्क केवल बचे हुए थे जिनसे कैथरीन को निपटना था।

अगस्टस तृतीय की मृत्यु से कैथरीन को पोलैंएड के मामलों में हस्तक्षेप करने का अच्छा अवसर मिला। वह सैक्सन (Saxon) वंश से असन्तुष्ट थी क्योंकि वह वंश आस्ट्रिया से प्रभावित था। फ्रेड्रिक द्वितीय की दत्त सहायता से कैथरीन ने पोलैंएड के नोबुलों को अपने एक नियुक्त व्यक्ति को चुन लेने के लिए प्रलोभन दिया। अतः सन् १७६४ ई० में कैथरीन का नियुक्त व्यक्ति (Stanislans Poniatowski) स्टानिशलाज द्वितीय के नाम से स्वतन्त्र-पोलैंएड का अन्तिम राजा हुआ। स्टानिशलाज द्वितीय के राजा होने पर रूस का प्रभुत्व इग्लैंएड में स्थापित हो गया।

पोलैंएड की एक कैथोलिक विद्रोह को दबाते समय रूस की सेना ने तुर्की साम्राज्य के दक्षिणी सीमा का उलंघन कर दिया जिसने युद्ध का रूप धारण कर लिया। यह युद्ध (Turkish war) ६ वर्ष (१७६८-१७७४) तक चलता रहा। रूस वालों ने एजाव (Azov) पर कब्जा कर लिया। मोल्डाविया, वालाचिया के प्रदेशों पर भी आक्रमण किया गया। बुखरेस्ट जीत लिया गया। अन्त में सन् १७७४ ई० में कुचूक केनार्जी की सन्धि (Treaty of Kuchuk Kainargi) हुई। इस सन्धि के अनुसार (१) रूस का अधिकार एजाव, [illegible] के सीमावर्ती प्रदेशों पर हो गया। (२) तुर्कों को वालाचिया, [illegible] इस शर्त पर दिया गया कि वे उनका शासन ठीक प्रकार से करेंगे। (३) रूस को तुर्की नदियों में स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने की आज्ञा मिल गई। (४) रूस को कुस्तुनतुनिया नगर के कुछ चर्चों का रक्षक स्वीकार कर लिया गया।

तुर्कों के साथ युद्ध करते समय कैथरीन ने पोलैंएड की समस्या को कभी

---

opinion. But the day when our peasants shall wish to become enlightened both you and I will lose our places.

(Quoted from Hayes, Modern Europe)

आँख से ओझल न होने दी। सन् १७७२ ई० में प्रशीया के फ्रेड्रिक द्वितीय और आस्ट्रिया की मेरिया थेरिसा ने मिलकर पोलैण्ड का प्रथम बँटवारा किया। पहले बटवारे के अनुसार रूस को डाइना और नीपर नदियों के सभी पूर्वी प्रदेश मिल गए। प्रशीया को पश्चिमी प्रशीया और आस्ट्रिया को क्राको नगर छोड़ कर गलिसिया मिला। सन् १७९३ ई० में रूस और प्रशीया ने मिल कर पोलैण्ड का द्वितीय बटवारा किया। सन् १७९५ ई० में एक नई सरकार की स्थापना करने के लिए पोलैण्ड के निवासियों ने विद्रोह किया। विद्रोह सफलतापूर्वक दबा दिया गया और उसके पश्चात् अगर रूस और प्रशीया ने मिलकर पोलैण्ड का अन्तिम और तृतीय बँटवारा किया। स्टानिशलाज द्वितीय ने त्याग पत्र दे दिया और सेन्ट पिटसबर्ग में जाकर शरण ली। पोलैण्ड का एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अन्त हो गया।

सन् १७९६ में कैथरीन की मृत्यु हो गई। कैथरीन ने भी पिटर की तरह रूस को एक महान् शक्ति बना दिया।

प्रश्नोत्तर

1. Describe the work of Peter the Great of Russia.

(Allahabad 1928

(देखिये—पृष्ठ १००, १०१, १०२, १०३, १०४)

2. Give an estimate of the character and statesmanship of Peter the Great of Russia. (Calcutta 1923)

(देखिये प्रश्न १ का उत्तर)

3. Write an account of the expansion of Russian power under Peter the Great. (Calcutta 1933)

(देखिये पृष्ठ ८४-८६)

5. Describe the reign of Empress Catherine II of Russia. Examine her claim to be considered as an apt pupil of Peter the Great.

"If it can be said of Peter that he made Russia a European power, it can be affirmed with equal truth that Catherine made Russia a great power" (Hayes, Modern Europe)

बारहवाँ पाठ

प्रशिया और आस्ट्रिया

प्रशिया का प्रारम्भिक इतिहास—अट्ठारहवीं शताब्दी में जर्मनी का सबसे विख्यात वंश होहेनजोलर्न वंश था। दसवीं शताब्दी में कुछ (Counts) जोलर्न पर्वत के एक गढ़ पर राज्य कर रहे थे जो वर्तमान स्विटजरलैण्ड के उत्तर में है। बारहवीं शताब्दी में इन लोगों ने अपनी शक्ति को काफी बढ़ा ली थी और वैवाहिक सम्बन्ध से होहेनजोलर्न वंश का न्यूरेमबर्ग नगर पर अधिकार हो गया था। सन् १४१५ ई० से होहेनजोलर्न वंश और ब्रान्डेनबर्ग का शासन एक ही व्यक्ति के अधीन होगया और होहेनजोलर्न वंश के लोग ब्रान्डेनबर्ग के इलेक्टर्स होने लगे। सोलहवीं शताब्दी में अन्य उत्तरी जर्मनी के राजकुमारों की तरह ब्रान्डेनबर्ग के होहेनजोलर्न इलेक्टर्स ने लूथर के धर्म को स्वीकार कर लिया और कैथोलिक चर्च की सम्पत्ति को जप्त कर लेने से उनकी शक्ति काफी बढ़ गई और वे रोम के चर्च से स्वतन्त्र हो गये। तीस वर्षीय युद्ध होहेन-जोलर्न वंश के अनुकूल था। युद्ध के प्रारम्भ में वैवाहिक सम्बन्ध से इस वंश को क्लीविस और पूर्वी प्रशिया के प्रदेश मिले। अतः होहेनजोलर्न वंश का सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति ब्रान्डेनबर्ग का शासक और क्लीविस और प्रशिया का ड्यूक होने लगा। तीस वर्षीय युद्ध के समाप्त होने पर होहेनजोलर्न वंश को मिनडेन मगडेबर्ग का आधा भाग मिला।

फ्रेड्रिक विलियम (दी ग्रेट इलेक्टर)—फ्रेड्रिक विलियम (१६४०-१६८८ ई०) प्रथम राजा था जिसने होहेनजोलर्न वंश की अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता को बढ़ाया। उसने तीस वर्षीय युद्ध में प्रमुख भाग लिया और वेस्टफालिया की सन्धि से उसे "ग्रेट इलेक्टर" की उपाधि मिली। स्वीडन और पोलैण्ड के युद्ध से लाभ उठाकर उसने पूर्वी प्रशिया को पोलैण्ड के राजा से स्वतन्त्र किया। विलियम ने डचों के युद्ध (१६७२-७८) में स्वीडन को पूरी तरह परास्त किया जिसकी फ्रान्स के साथ मैत्री थी।

अपनी गृहनीति में फ्रेड्रिक विलियम चौदहवें लुई के समान था जो निरंकुश शासन में अटल विश्वास करता था। जब वह सिंहासन पर बैठा उस समय उसका राज्य तीन भागों में विभाजित था—ब्रान्डेनबर्ग, क्लीविस और पूर्वी प्रशिया। इनके शासन-विधान सेना और कार्यकारिणी सभा एक दूसरे से अलग और भिन्न थे। फ्रेड्रिक ने इन सबका राष्ट्रीयकरण किया और उनका शासन प्रबन्ध एक राजकीय कौंसिल द्वारा होने लगा।

फ्रेड्रिक एक परिश्रमी शासक था। उसने व्यवसाय, खेती और कच्छ भूमि को सुखाने के कार्य को प्रोत्साहन दिया। उसने फ्रेड्रिक विलियम नहर बनाया जो ओडर और एल्ब नदियों को मिलाती है। धार्मिक अत्याचार के कारण जब ह्यूगनाट्स फ्रान्स छोड़ने लगे तो फेड्रिक ने उन्हें प्रशिया आने के लिये आमंत्रित किया जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रशिया की राजधानी बर्लिन की जन-संख्या जो प्रारम्भ में ८,००० थी उसकी मृत्यु के समय २०,००० हो गई। सन् १६८८ ई० में फ्रेड्रिक विलियम की मृत्यु हो गई।

फ्रेड्रिक प्रथम—सन १६८८ में फ्रेड्रिक विलियम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र फ्रेड्रिक प्रथम (१६८८-१७१३) प्रसीया का राजा हुआ। वह अय्याश और भोग विलासी था। अपने कर्त्तव्यों की अपेक्षा वह दरबार की शान शौकत में अधिक ध्यान देता था। उसके शासन काल की मुख्य घटना "राजा" की पदवी प्राप्त करना है। अभी तक ब्रान्डेनबर्ग-प्रसीया के शासक को राजा स्वीकार नहीं किया गया था लेकिन सन् १७०१ ई० में सम्राट् ल्यूपाल्ड प्रथम ने स्पेनिश उत्तराधिकारी के युद्ध में प्रशिया की सहायता प्राप्त करने के विचार से फ्रेड्रिक प्रथम को "राजा" की उपाधि दिया।

फ्रेड्रिक विलियम प्रथम—फ्रेड्रिक विलियम प्रथम ने फ्रेड्रिक विलियम की नीति को अपनाया। अपने राज्य के लिए वह स्वेच्छाचारी शासन को सबसे उपयुक्त समझता था। उसका शासन काल एक शक्तिशाली सेना और नौकरशाही राज्य की स्थापना के लिए प्रसिद्ध है। मितव्ययता से उसने सैनिकों की संख्या को ३८,००० से ८०,००० तक बढ़ाया। शिक्षित और अनुशासित होने के कारण प्रशिया की सैनिक शक्ति फ्रान्स और आस्ट्रिया की तरह प्रथम श्रेणी की हो गई। अपनी गृह-नीति में उसने भिन्न-भिन्न विभागों का एकीकरण किया।

एक "जनरल डाईरेक्टरी" की नियुक्ति की गई जो देश की अर्थ और शासन पद्धति की देख रेख करती थी। व्यवसाय और व्यापार की उन्नति का भी प्रयत्न किया गया यद्यपि वह वर्तमान सभ्यता में अविश्वास प्रगट करता था। उसने प्रारम्भिक शिक्षा को जनता के लिए अनिवार्य नहीं किया। वह "शान्ति" के कार्यों पर अधिक व्यय नहीं करता था। फ्रेड्रिक की परराष्ट्र नीति विशेष महत्व नहीं रखती। क्योंकि उसके शासन-काल में न तो कोई युद्ध हुआ जिसमें प्रशिया का हाथ हो और न प्रशिया का ही विस्तार हुआ।

फ्रेड्रिक महान् (द्वितीय)—फ्रेड्रिक महान् (द्वितीय) को अपने प्रारम्भिक जीवन में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। वह अपने पिता से बिलकुल विपरीत था। फ्रेड्रिक की प्रवृति साहित्य, गान, विद्या और कला की ओर था जिसके प्रति उसके पिता की बिलकुल सहानुभूति न थी और जिसको फ्रेड्रिक विलियम प्रथम घृणित और निरर्थक व्यापार या कार्य समझता था। फ्रेड्रिक का फ्रान्सीसी सभ्यता के प्रति सहानुभूति थी लेकिन उसका पिता प्रत्येक वस्तु को जिसका सम्बन्ध फ्रान्स से होता था तुच्छ समझता था। इसके अतिरिक्त फ्रेड्रिक नियम को घृणा की दृष्टि से देखता था लेकिन उसके पिता का सारा जीवन ही नियम था। ऐसी स्थिति में बाप-बेटे में मतभेद होना स्वाभाविक था। एक बार जब फ्रेड्रिक ने भाग जाने का प्रयास किया पकड़ा गया और उसके पिता ने उसे दण्ड के रूप में गुलामों की तरह राजनीतिक और सैनिक शिक्षा दिया। वह सदैव फ्रेड्रिक पर अविश्वास करता था। अपने पिता की मृत्यु के बाद सन् १७४० ई० में फ्रेड्रिक द्वितीय प्रशिया के सिंहासन पर बैठा जो योरप के इतिहास में फ्रेड्रिक महान् के नाम से प्रसिद्ध है।

फ्रेड्रिक के उद्देश्य—फ्रेड्रिक के तीन मुख्य उद्देश्य थे। पहला, वह आस्ट्रिया से सिलेसिया (Silesia) जीत कर उसे नीचा दिखलाना चाहता था, दूसरा, वह प्रशिया को योरपीय देशों में एक महत्वपूर्ण स्थान देना चाहता था, और तीसरा प्रशिया को एक आदर्श देश बनाना चाहता था। उसने अपने जीवन के छियालीस वर्ष (१७४०-८६ ई०) अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगाया और अन्त में सफल हुआ। सिलेसिया जीत लिया गया। एक्स-ला-च्पले और

पेरिस की सन्धियों से आस्ट्रिया का मान घट गया और प्रशिया की गणना योरप के शक्तिशाली देशों में होने लगा।

फ्रेड्रिक की गृह-नीति—फ्रेड्रिक द्वितीय अपनी गृह-नीति में प्रशिया को एक आदर्श देश बनाना चाहता था। उसका कहना था कि राजा देश का निरंकुश शासक ही नहीं बल्कि देश का पहला नौकर है।*

वास्तव में वह सन् १७४० ई० से लेकर सन् १७८६ ई० तक देश का पहला नौकर था। वह नियमित रूप से प्रत्येक दिन ६ बजे उठता था और शाम को ६ बजे तक राजकीय कार्य करता था। यद्यपि वह दुष्कर और आपत्ति-जनक युद्धों में व्यस्त रहता था जैसा हमें आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध से पता चलता है लेकिन फिर भी उसने आन्तरिक शासन में सुधार करने के उत्साह का परित्याग नहीं किया। वह राजकीय पदों पर योग्य और विश्वासी मनुष्यों की नियुक्ति के लिए हमेशा चिन्तित रहता था।

उसने प्रशिया की आर्थिक स्थिति में भी सुधार किया। खेती को प्रोत्साहन दिया गया। जमींदारों को वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के लिए और दलदल भूमि के सुखाने के कार्य को उत्साहित किया गया। खेती की भूमि में वृद्धि की गई और फलों के वृक्ष लगाये गये। उसने किसानों की स्थिति को भी सुधारने का प्रयत्न किया। वह करों (Taxes) से किसानों को मुक्त करना चाहता था। उसने एक नियम प्रकाशित किया जिसके अनुसार किसान टैक्स कलेक्टरों द्वारा सताये नहीं जा सकते थे।

आर्थिक सुधार के फलस्वरूप वह एक शक्तिशाली सेना रखने में सफल हुआ। उसके सैनिकों की संख्या ८०,००० से २,००,००० हो गयी जिससे वह सिलेसिया और पोलैण्ड के एक भाग को जीत सका। फ्रेड्रिक सेना पर मनमानी

*वह कहा करता था कि "The prince is to the nation he governs what the head is to the man, it is his duty to see, think and act for the whole community, that he may procure it every advantage of which it is capable. The monarch is not the absolute master, but only the first servant of the State."

Quoted From Hayes, Modern Europe

खर्च करता था क्योंकि उसको विश्वास था कि खर्च किया हुआ धन किसी न किसी रूप में देश में चला आता है।

यद्यपि कर किसी प्रकार हलका न था लेकिन जनता को विश्वास था कि राजा फजूलखर्ची नहीं है। फ्रेड्रिक दरबारियों या दरबार की स्त्रियों पर धन की बौछार करने वाला शासक न था। वह रुपये की महत्त्व को भली भाँति जानता था। वह टोडरमल की तरह परिश्रम के साथ सभी हिसाब किताब का निरक्षण करता था। उसके कर्मचारी भी फजूलखर्च करने से डरते थे।

न्याय ठीक प्रकार से नहीं होता था। समय बहुत लग जाता था और फिर भी लोगों को उसमें विश्वास नहीं होता था। अतः फ्रेड्रिक ने न्याय के शासन में भी सुधार किया। जब कभी वह जानता था कि गरीबों के साथ अन्याय किया गया है तो वह जजों को हटा देता था और उन्हें एक वर्ष कारावास का दण्ड मिलता था। वह न्यायालयों की अयोग्यता और दिखौवा आचार को नापसन्द करता था। उसके राज्यकाल में कानूनों को सरल किया गया और जनता की सूचना और न्यायालयों की सुगमता के लिए कानूनों को स्पष्ट रूप दिया गया। फौजदारी के मामलों में यातनों के दण्ड को हटा दिया गया और इसी प्रकार अन्य मानवी सुधार किये गये।

धार्मिक मामलों में फ्रेड्रिक अपने पुर्वजों लोगों से बिलकुल भिन्न था। वह सबको धार्मिक स्वतन्त्रता देना चाहता था। वह कहा करता था कि प्रत्येक अपने किसी भी रीति से स्वर्ग जाने का पूर्ण अधिकारी है। उसने केथोलिकों को भी आश्रय दिया। यहूदियों को उपनाम लेने पड़ते थे।

अपने समय की विद्योन्नति में फ्रेड्रिक ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति को लगाया उसने बर्लिन एकाडेमी आफ साईन्स को सुधारा और पुष्ट किया। जनता में शिक्षा की प्रसार के लिए स्कूलों और कालेजों की स्थापना की गई। वह फ्रान्सीसी साहित्य पर विशेषकर अनुरक्त था और उसने फ्रान्सीसी विद्वानों को बर्लिन आने के लिए आमंत्रित किया। वह स्वयं फ्रान्सीसी भाषा में इतिहास और कविता लिखता था।

फ्रेडिक की परराष्ट्र नीति—फ्रेड्रिक अपनी परराष्ट्र नीति में आस्ट्रिया को नीचा दिखलाना चाहता था। उस समय आस्ट्रिया की शासिका मेरिया

थेरिसा (१७४०-८०) थी। दोनों ही योग्य और प्रतिभाशाली शासक थे। मेरिया थेरिसा, सुन्दर, भावमय और अभिमानी थी और फ्रेड्रिकमदोद्धत, चिड़-चिड़ा और परिश्रमी था। मेरिया थेरिसा केथोलिक धर्म की पक्षपातिनी थी और फ्रेड्रिक एक प्रोटेस्टेन्ट था और हेतुवाद और आस्तिकता का अनुयायी था।

चार्ल्स षष्ठम् की मृत्यु के बाद जब मेरिया थेरिसा राजसिंहासन पर बैठी, फ्रेड्रिक ने बवेरिया और फ्रान्स से सन्धि करके आस्ट्रिया का बँटवारा करना चाहा। इस सन्धि के अनुसार बवेरिया के इलेक्टर को रोम का सम्राट् बनाया जाता. सिलेसिया प्रशिया को मिलता और आस्ट्रियन नीदरलैण्ड पर फ्रान्स का अधिकार हो जाता। इस प्रकार सिलेसिया फ्रेड्रिक द्वितीय और मेरिया थेरिसा के झगड़े का मुख्य कारण बन गया। फ्रान्स और बवेरिया के आक्रमण के भय से मेरिया थेरिसा ने हंगरी और बोहेमिया से सहायता के लिए याचना की। उसकी प्रार्थना शीघ्र सुनी गई। इस प्रकार सन् १७४० ई० में एक युद्ध आरम्भ हु आ जो आस्ट्रियन उत्तराधिकार युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

सन् १७३९ ई० में इंग्लैण्ड और स्पेन में एक व्यापारिक युद्ध छिड़ गया जिसने शीघ्र ही योरपीय रूप धारण कर लिया। इंग्लैण्ड, बेल्जियम, नीदरलैण्ड में अपने अधिकार को सुरक्षित रखना चाहता था जिसका स्पेन ने विरोध किया। एक ओर तो इंग्लैण्ड आर्थिक लाभ उठाने के अभिप्राय से मेरिया थेरिसा की सहायता करने लगा और दूसरी ओर स्पेन यूट्रेक्ट की सन्धि (१७१३) से खोये हुए इटली के प्रदेशों को पुनः प्राप्त करने के लिए आस्ट्रिया के विरुद्ध फ्रान्स की सहायता करने लगा।

इस प्रकार सन् १७४० में जब आस्ट्रियन उत्तराधिकार युद्ध आरम्भ हुआ उस समय दो दल हो गये थे। एक दल में प्रशिया फ्रान्स स्पेन और बवेरिया सम्मिलित थे और दूसरे दल में आस्ट्रिया और इंग्लैण्ड। कुछ समय बाद हालैण्ड ने आस्ट्रिया और इंग्लैण्ड का साथ दिया। मेरिया थेरिसा सिले-सिया को फ्रेड्रिक के अधिकार में जाने से न रोक सकी। उसकी सेना कई बार परास्त हुई और मेरिया थेरिसा को तीन बार फ्रेड्रिक के सिलेसिया विजय को स्वीकार करना पड़ा। अन्त में सन् १७४५ में ड्रेसडेन की सन्धि हुई जिसके

अनुसार आस्ट्रिया को सिलेसिया फ्रेड्रिक के हवाले करना पड़ा। प्रशीया अपने गुट से अलग हो गया और कुछ समय तक तटस्थ रहा।

ड्रेसडेन की सन्धि के बाद यह युद्ध कई वर्ष तक चलता रहा। अन्त में सन् १७४८ ई० में एक्स-ला-चपले की सन्धि से इस युद्ध का अन्त हुआ। इस सन्धि के अनुसार (क) आस्ट्रिया को सिलेसिया देना पड़ा। (ख) मेरिया थेरिया आस्ट्रिया की महारानी स्वीकार कर ली गई। (ग) मेरिया थेरिसा के पति—फ्रांसिसी आफ लोरेन को रोम का सम्राट् घोषित किया गया। इस सन्धि से प्रशिया की शक्ति और प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई। मेरिया थेरिसा को विशेषकर हानि उठानी पड़ी जिससे आस्ट्रिया के मान को काफी धक्का पहुँचा।

मेरिया थेरिसा अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना चाहती थी। उसने रूस की महारानी एलिजबेथ से मैत्री कर ली जो फ्रेड्रिक के व्यंगों से चिढ़ी हुई थी। मेरिया फान्स को भी अपनी ओर लाना चाहती थी। पन्द्रहवें लुई ने तो पहले आस्ट्रिया की सहायता करना अस्वीकार कर दिया लेकिन बाद में मैडम पडीम्पाडूर के कहने पर लुई ने मेरिया थेरिसा का साथ दिया। इङ्गलैंण्ड ने जर्मनी में शान्ति स्थापित करने के विचार फ्रेड्रिक से एक विशेष समझौता कर लिया और यह निश्चय हो गया कि यदि कोई युद्ध इंग्लैण्ड और फ्रान्स में हुई तो प्रशिया इंग्लैण्ड का साथ देगा। इस प्रकार जो राजनीतिक सम्बन्ध में परिवर्तन हुआ उसे "राजनीतिक क्रान्ति" कहते हैं।

सन् १७५६ में सप्त वर्षीय युद्ध आरम्भ हुआ जो सात वर्ष तक चलता रहा। युद्ध की घोषणा होने के पहले ही फ्रेड्रिक ने सक्सोनी (Saxony) जीत लिया अपने शिक्षित सेना को लेकर बोहेमिया में प्रवेश किया। उसके इस कार्य से उसके शत्रुओं ने प्रशिया पर आक्रमण कर दिया। रूसी सेना ने पूर्वी प्रशिया पर आक्रमण किया, स्वीडन ने उत्तरी ब्रान्डेन बर्ग पर, आस्ट्रिया सिलेसिया पर और फ्रान्सीसी सेना ने पश्चिम की ओर से प्रशिया पर आक्रमण किया। ऐसी स्थिति में फ्रेड्रिक द्वितीय ने उन सैनिक गुणों का प्रदर्शन किया। जिसके कारण उसकी गणना योरप के योग्य सेना पतियों में होने लगी और उसके "महान्" की उपाधि को न्याययुक्त सिद्ध किया। सन् १७५७ ई० में उसने रोसबेक के

युद्ध में फ्रान्सीसियों को हराया। इसके पश्चात् उसने सिलेसिया पर भी आक्रमण किया जिससे आस्ट्रिया की सेना को सिलेसिया छोड़ना पड़ा।

फ्रेड्रिक की विजयों ने उसकी सेना को शक्तिहीन कर दिया। लेकिन इंग्लैण्ड की सहायता से फ्रेड्रिक ने अपनी सैनिक शक्ति को पुनः प्राप्त कर लिया। सन् १७५६ में पूर्वी प्रशिया पर रूस वालों का अधिकार हो गया। गेजबेक के युद्ध के बाद फ्रान्सीसीयों ने हनोवर पर आक्रमण किया लेकिन ब्रून्सविक ने जो फ्रेड्रिक का भतीजा था फ्रान्सीसियों को परास्त किया। अमेरिका और भारतवर्ष में भी फ्रान्सीसी परास्त हुए। फ्रान्सीसियों की पराजय का परिणाम यह हुआ कि सन् १७६१ ई० में फ्रान्स, स्पेन और दो सिसिलीयां में 'एक कौटुम्बिक सन्धि' हुई और स्पेन ने इस युद्ध में (१७६२) प्रवेश किया।

सन् १७६२ में एलिज़बेथ की मृत्यु हो गई और उसके पश्चात् पिटर तृतीय रूस का राजा हुआ। पिटर तृतीय फ्रेड्रिक का प्रशंसक था। उसकी आज्ञा से रूस की सेना जो अब तक मेरिया थेरिसा की सहायता कर रही थी फ्रेड्रिक की सहायता करने लगी फ्रान्स अपने खोये हुए प्रदेशों को पुनः प्राप्त न कर सका। सन् १७६३ में ह्यूबर्टस वर्ग की सन्धि हुई जिससे सप्त-वर्षीय युद्ध का अन्त हुआ इस सन्धि के अनुसार फ्रान्स को कई उपनिवेशिक प्रदेशों को देना पड़ा और सिलेसिया सदैव के लिए प्रसीया के अधीन हो गया।

इसके अतिरिक्त फ्रेड्रिक ने पोलैण्ड का भी बँटवारा किया जो आस्ट्रिया की अपेक्षा प्रसीया के लिए अधिक अनुकूल था। उसने क्रमशः सन् १७७२, १७९२ और १७९५ ई० में तीन बार पोलैण्ड का बँटवारा किया। इन बँटवारों से प्रशिया को नये प्रदेश मिले जिससे उसकी शक्ति दृढ़ हो गई। फ्रेड्रिक की परराष्ट्र नीति का अन्तिम कार्य राजकुमारों का संघ बनाना था जिसका मुख्य उद्देश्य आस्ट्रिया के आक्रमणों से जर्मनी के छोटे छोटे राज्यों की रक्षा करना था।

आस्ट्रिया और मेरिसा-थेरिया—चार्ल्स षष्ठम् की मृत्यु के बाद मेरिया थेरिसा सन् १७४० ई० में आस्ट्रिया के सिंहासन पर प्रतिष्ठित हुई। वह अठारहवीं शताब्दी के ज्ञान प्राप्त स्वेच्छाचारी शासकों में से थी। यद्यपि वह फ्रेड्रिक या वाल्टेयर की दृष्टि में ज्ञानप्राप्त शासिका न थी लेकिन फिर भी वह जनता

की हितैषी थी। वह राज्य तथा जनता की स्थिति में सुधार करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझती थी। उसने स्थानीय सभाओं और पार्लियामेन्टों पर नियन्त्रण लगाई। वियना की मन्त्रिमण्डल का पुनः संगठन किया गया और एकात्मक सरकार की नींव डाली गई। उसने जर्मन भाषा को राजकीय भाषा बनाई। उसने जेसूट की दमन की। गानविद्या और चित्रकला में मेरिया थेरिया की विशेष रुचि थी। मेरिया थेरिसा ने विद्या की प्रसार के लिए कई स्कूल खोली।

आस्ट्रिया और जोसेफ द्वितीय—अपने माता की मृत्यु के बाद सन् १७८०ई० में जोसेफ द्वितीय आस्ट्रिया के राज्यसिंहासन पर बैठा। वह एक ज्ञान प्राप्त शासक था वह वाल्टयर और रूसो की प्रशंसा करता था। उसमें फ्रेड्रिक की अपेक्षा तर्क और सुधार की अधिक मात्रा थी। यद्यपि उसके विचार ऊँचे और हितकर होते थे लेकिन वह अपने कार्यों में प्रायः असफल रहा वह अधीर था और किसी कार्य में विलम्ब नहीं चाहता था। उसका कहना था कि चर्च राज्य के अधीन होना चाहिए। वह स्वयं बिशपों की नियुक्ति करता था। उसने चर्च की भूमि को भी जब्त कर लिया जोसेफ ने प्रचलित धार्मिक रीति रिवाजों में सुधार किया। अधिकाँश मठ नष्ट कर दिये गये। राजकीय सहायता प्राप्त स्कूलों में पादड़ियों की शिक्षा होने लगी। यहूदियों और अन्य मतावलम्बियों को धार्मिक स्वतन्त्रता ही नहीं बल्कि कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों की तरह समान अधिकार दिये गये। यद्यपि ये सुधार समय के अनुकूल थे लेकिन ये ऐसी शीघ्रता के साथ किये गये कि जनता और पादड़ी उसके विरुद्ध हो गये।

अपनी राजनीतिक नीति में भी वह असफल रहा। प्रथम वह आस्ट्रिया की सीमा का प्रसार पूर्व में काला सागर और दक्षिण में एड्रियाटिक सागर तक करना चाहता था। द्वितीय, वह प्रान्तीय सभाओं और स्थानीय स्वतन्त्र संस्थाओं से छुटकारा पाना चाहता था। वह देश का शासन अपने नियुक्त किये हुए व्यक्तियों के द्वारा करना चाहता था। तृतीय अभिमानी नोबुलों का दमन करना तथा नीच वर्ग के लोगों को उठाना चाहता था ताकि लोग उसे शक्तिशाली और हितैषी शासक समझें।

जोसेफ का प्रथम उद्देश्य विफल रहा। बवेरिया जीतने के प्रयत्न को प्रशिया के फ्रेड्रिक द्वितीय ने असफल कर दिया। सन् १७८६ ई० में रूस से मित्रता करके जोसेफ ने तुर्कों के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ा। उसकी सेना ने बेलग्रेड को जीत लिया लेकिन जोसेफ की मृत्यु के बाद बेलग्रेड भी जाता रहा। उसने अपने राज्य को तेरह प्रान्तों में बांटा। प्रत्येक प्रांत को एक सेनापति के अधीन रखा गया। प्रान्तों को जिलों और नगरों में विभाजित किया गया। सबका प्रबन्ध वियना से होता था सेना का संगठन प्रशिया की सेना के ढंग पर किया गया। जोसेफ ने जर्मन भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाया। जोसेफ की यह योजना देखने में तो बहुत ही सुन्दर प्रतीत होती थी लेकिन जब इस योजना को कार्य रूप में परिणत किया गया तो पूर्णतया असफल रहा आस्ट्रिया नीदरलैण्ड और टाइरोल ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया और हंगरी ने इसका कड़ा विरोध किया।

समाज का पुनः संगठन करने में भी जोसेफ को दुःखित होना पड़ा। उसने आदेश दिया कि दास अपने स्वामी की आज्ञा के बिना विवाह इत्यादि कर सकते हैं। दासों को अपनी सम्पत्ति बेचने का अधिकार मिल गया। सप्ताह में चार दिन अपने स्वामी के लिए परिश्रम करने के स्थान पर वे एक निश्चित कर देने लगे। नोबुलों और किसानों को भी अपने भूमि पर तेरह प्रतिशत कर देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उसमें प्रारम्भिक शिक्षा की प्रसार के लिए, व्यवसाय को प्रोत्साहन देने के लिए और जनता को सुखी और उन्नतिशील बनाने के लिए भी योजनाएं तैयार की।

नोबुल अपनी जागीरदारी के अधिकारों से वंचित किये जाने के कारण जोसेफ द्वितीय को घृणा की दृष्टि से देखते थे। मध्यम वर्ग उसकी हस्तक्षेप करने की नीति से असन्तुष्ट था। पादड़ी उसकी धार्मिक नीति के विरुद्ध प्रचार करते थे। जोसेफ ने अपनी मृत्यु के अन्तिम दिनों में अधिकांश सुधारों को रद्द कर दिया। इस प्रकार जोसेफ द्वितीय अट्ठारहवीं शताब्दी के योरपीय शासकों में सब से उत्साही और सबसे असफल शासक था।*

*उसका अन्तिम वाक्य इस प्रकार था—"Here lies the man who with the best intentions, never succeeded in any thing." (Quoted from Hayes' Modern Evrope)

अट्ठारहवीं शताब्दी के ज्ञान-प्राप्त स्वेच्छाचारी शासक—अट्ठारहवीं शताब्दी में ज्ञान-प्राप्त स्वेच्छाचारी शासकों की बहुलता थी। इन शासकों का कहना था कि राज्य को एक कुटुम्ब न समझना चाहिए जिसमें भिन्न-भिन्न प्रदेश के लोग वैवाहिक सम्बन्ध से एक कुटुम्ब की भाँति रहते हों। उनका कहना था कि इस प्रकार का कौटुम्बिक राज्य स्वैराधिराज्य न होना चाहिए बल्कि राजाओं को स्वयं परिश्रम करना चाहिए। राजा को अपने उत्तरदायित्व को समझना चाहिए और अपनी प्रजा की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

ऐसे शासकों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। फ्रान्स का चौदहवाँ लुई प्रशिया का फ्रेड्रिक द्वितीय, आस्ट्रिया की मेरिया थेरिसा और जोसेफ द्वितीय, पुर्तगाल का जोसेफ प्रथम, रूस की कथरीन द्वितीय नेपोल्स और स्पेन का चार्ल्स तृतीय, सार्डीनीया का चार्ल्स इमेन्यूअल तृतीय, इत्यादि।

इन शासकों में कुछ कमजोरियाँ भी थीं। पहला, इनके कौटुम्बिक राज्य बहुत बड़े हो गये थे जिसकी रक्षा के लिए वे प्रायः एक दूसरे से लड़ते थे। युद्ध में व्यस्त रहने के कारण वे सुधार इत्यादि नहीं कर पाते थे। दूसरा, उनकी दृष्टि अशिक्षित जनता के प्रति सराहनीय न थी वे जनता के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर कोई कार्य नहीं करते थे जिसका परिणाम यह होता था कि उनके कुछ ही सुधार स्थायी हो पाते थे। तीसरा, ऐसे राज्यों का टिकना उनके उत्तराधिकारियों की योग्यता और निरंकुशता पर निर्भर करता था। लेकिन ऐसा बहुत कम होता था।

प्रश्नोत्तर

1. Estimate the claim of Frederick William, the great Elector to be regarded as the founder of Prussian greatness. (Benares, 1947)

(देखिये पृष्ठ ८६, ९०, ९१)

2. Frederick William I was the greatest internal King Prussia." Amplify. (Calcutta, 1923)

(देखिये पृष्ठ ९०)

3. Examine the claims of Frederick the Great to be regarded as a great king. (Benares, 1948)

(देखिये पृष्ठ ८६, ९४)

4. Carlyle calls Frederik the Creat, "the last of kings." He was not the last in name but there was none after him as great as he. Do you agree? (Calcutta 1925)

(देखिये प्रश्न ३ का उत्तर)

5. "The great result of the reign of Frederick the Great was that he created a dualism between Austria and Prussia." Discuss (Calcutta 1922, 1924. Benares 1949)

(देखिये पृष्ठ ९२, ९३, ९४,)

6. "The Emperor Joseph II was one of the most pathetic figures in history." Why? (Calcutta 1925, 1926)

(देखिये पृष्ठ ९५, ९६)

7. Examine the strength and weaknesses of the "enlightened despotism" of the eighteenth century. Give illustrations. (Benares. 1949)

(देखिये पृष्ठ ९५, ९७)

8. Give a few examples of the "Enlightened Despots" of the eighteenth century Europe and point out their weaknesses.

(देखिये पृष्ठ ९५, ९७)

तेरहवाँ पाठ

पोलैण्ड का बँटवारा

पोलैंड का आरम्भिक इतिहास--सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पोलैण्ड का विस्तृत और प्रमुख राज्य था। इसमें तीन जातियाँ मिली हुई थीं पोलैण्ड के निवासी, कोरलैण्ड के निवासी और लिथुनिया के निवासी। सन् १५६१ और सन् १५६६ में क्रमशः कोरलैण्ड और पोलैण्ड के पार्लियामेन्ट और शासन-विधान मिला दिये गए। कुछ वर्षों के पश्चात लिथ्युनिया भी मिला दिया गया। इस प्रकार एक संयुक्त पोलैण्ड राज्य की नींव डाली गई। सत्तरहवीं शताब्दी में पोलैण्ड ने योरोपीय मामलों में प्रमुख भाग लिया। पोलैण्ड ने बाल्टिक सागर के बन्दरगाहों पर अधिकार करने के लिए स्वीडन से युद्ध किया, रूस के मामलों में हस्तक्षेप किया, वियना की रक्षा के लिए तुर्कों के विरुद्ध आस्ट्रिया के हाब्सबर्ग की सहायता की और अपने सीमावर्ती विस्तार के लिए प्रयत्न किया।

बंटवारे का मुख्य कारण--पोलैण्ड की उन्नति और विस्तार अन्य देशों के लिए ईर्ष्या और घृणा का विषय बन गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि अट्ठारहवीं शताब्दी में पोलैण्ड की आन्तरिक कमजोरियाँ स्पष्ट होने लगी। पोलैण्ड की जनसंख्या घनी न थी। प्रशिया, रूस और आस्ट्रिया के विरुद्ध एक विशाल और शक्ति शाली सेना स्थापित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। देश की रक्षा के लिए पोलैण्ड के पास न तो कोई दुर्ग था और न कोई पर्वत।

पोलैण्ड में अल्पसंख्यकों की संख्या की कमी न थी। अधिकांश जनता पोलैण्ड की भाषा और जाति को मानती थी और कैथोलिक धर्म ही उनका धर्म था। बहुत से नगरों में यहूदी रहते थे जिनके साथ एक विदेशी का सा व्यवहार किया जाता था। दक्षिण-पूर्वी जिलों में यूक्रेन और रूस के निवासी अधिक संख्या में थे और पश्चिमी नगरों और बाल्टिक प्रान्तों में जर्मनी के प्रोटेस्टेन्टों की बहुतायत थी। सोलहवीं शताब्दी में जान दो सिहस्की के शासन

काल में केथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों की भाँति डिसेन्टरर्स को भी धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई थी। लेकिन डिसेन्टर्स इस धार्मिक स्वतन्त्रता से असन्तुष्ट थे और अट्ठारहवीं शताब्दी में वे बहुसंख्यक केथोलिकों की तरह समानता चाहते थे। जब उनकी प्रार्थना सुनी नहीं गई तो वे विदेशी शक्तियों से सहायता माँगने लगे।

पोलैण्ड की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति भी अच्छी न थी। सत्तरहवीं शताब्दी के अन्त होते-होते पोलैंड का बालटिक सागर पर से व्यापारिक अधिकार जाता रहा जिसका देश की आर्थिक 'स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा। मध्य वर्ग की अवनति हो रही थी। नोबुलों की स्थिति अच्छी थी लेकिन वे आपस में लड़ा करते थे और किसी विदेशी शत्रु के विरुद्ध मोरचा नहीं ले सकते थे। उनके पास भूमि होती थी और वे अतिव्ययिता से जीवन व्यतीत करते थे। वे खेती की उन्नति की ओर ध्यान नहीं देते थे और अपने ही लाभ से उन्हें मतलब रहता था।

यदि पोलैण्ड में एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार होती तो बहुत सी सामाजिक बुराइयाँ दूर हो गई होती। लेकिन जिस समय योरपीय देशों में निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना हो रही थी पोलैण्ड के सभी कार्य अनियमित रूप से हो रहे थे और अराजकता का साम्राज्य फैला हुआ था। सोलहवीं शताब्दी से पोलैण्ड में राजा का निर्वाचन होता था। नोबुल जो राजाओं का निर्वाचन करते थे घूस ही नहीं बल्कि विशेष स्वीकृति भी लेते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा लोग क्रमशः नोबुल के कठपुतली बन गये और वे अपने देश की अपेक्षा दूसरे देशों में अधिक रुचि लेने लगे।

पोलैण्ड का प्रथम बटवारा—अगस्टस तृतीय की मृत्यु के बाद रूस की महारानी कैथरीन महान् (द्वितीय) ने डिसेन्टरों को धार्मिक स्वतंत्रता देने के बहाने से पोलैण्ड के मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू किया। वह सम्पूर्ण पोलैंड को रूस में मिलाना चाहती थी। इसके अतिरिक्त वह उपरान्त वंश से असंतुष्ट थी क्योंकि वह वंश आस्ट्रिया से प्रभावित था। फ्रेड्रिक द्वितीय पश्चिमी प्रशिया को मिलाना चाहता था इसलिए उसने कैथरीन की सहायता की। फ्रेड्रिक की इस सहायता से कैथरीन ने पोलैण्ड के नोबुलों को एक निर्बुद्ध व्यक्ति को चुन

लेने के लिए प्रलोभन दिया। अतः सन् १७६४ ई० में कैथरीन का नियुक्त व्यक्ति स्टानिशलाज द्वितीय के नाम से पोलैण्ड का अन्तिम बादशाह हुआ। स्टानिशलाज द्वितीय के राजा होने पर रूस का प्रभुत्व पोलैण्ड में स्थापित हो गया। रूस के प्रभाव को कम करने के लिए फ्रेड्रिक द्वितीय ने पोलैण्ड के बटवारे की एक योजना तैयार की। रूस ने इसको अस्वीकार कर दिया। इसी समय रूस और तर्की में युद्ध छिड़ गया जिससे लाभ उठाकर आस्ट्रिया ने पोलैण्ड के एक भाग पर अधिकार कर लिया। अतः कैथरीन को फ्रेड्रिक की योजना को स्वीकार करना पड़ा। सन् १७७२ ई० में सेन्ट पिटर्सबर्ग (St. Petersburg) की सन्धि के अनुसार पोलैण्ड का प्रथम बटवारा हुआ। इस सन्धि के अनुसार रूस को डाईना और नीपर नदियों के समीप पूर्वी प्रदेश मिले। डानजिग नगर को छोड़कर सम्पूर्ण पश्चिमी प्रशिया को मिला। क्राको नगर को छोड़कर पूरे गलिसिया पर आस्ट्रिया का अधिकार हो गया।

पोलैण्ड का द्वितीय बटवारा— सन् १७८७ ई० में रूस और तर्की में पुनः युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध से पोलैण्ड के निवासी लाभ उठाना चाहते थे। अतः उन्होंने प्रशिया से एक सन्धि कर लिया और अपने शासन विधान में परिवर्तन किये। केथोलिक धर्म को राष्ट्रीय धर्म स्वीकार किया गया और अन्य मतावलम्बियों को पूरी स्वतन्त्रता दी गई। आस्ट्रिया का राजा ल्यूपाल्ड द्वितीय इन सुधारों के पक्ष में था क्योंकि उसका कहना था कि एक शक्तिशाली स्वतंत्र पोलैण्ड ही रूस के प्रभाव को कम कर सकता है। रूस इन सुधारों का कड़ा विरोध करता था। रूस और तर्की के युद्ध के अन्त होने पर रूस ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। स्टानिशलाज द्वितीय को नये शासन विधान को नष्ट कर देना पड़ा। सन् १७९३ ई० में रूस और प्रशिया ने मिलकर पोलैण्ड का द्वितीय बटवारा किया। इस बटवारे से रूस को पोलैण्ड का अधिकांश भाग मिला। अभागे स्टानिशलाज को एक सन्धि (Eternal Alliance) भी स्वीकार करनी पड़ी जिससे वह रूस का एक दास बन गया।

पोलैण्ड का तृतीय बटवारा---सन् १७९४ ई० में पोलैण्ड के सुधारकों ने कोसिअस्को के नेतृत्व में एक विद्रोह किया। यद्यपि कोसिअस्को को आरम्भ में सफलता मिली लेकिन वह रूस और प्रशिया की सम्मिलित सेना को पराजि

न कर सका। वह मेसीजोविस के युद्ध में हार गया और बन्दी बना लिया गया। वारसाव ने भी आत्म समर्पण कर दिया और उसके साथ ही साथ विद्रोह का भी अन्त हो गया। अतः सन् १७६५ ई० में आस्ट्रिया और रूस ने मिलकर पोलैण्ड का तृतीय और अन्तिम बटवारा किया। द्वितीय बटवारे की भाँति इस बटवारे के अनुसार भी पोलैण्ड का अधिकांश भाग रूस को मिला।

पोलैण्ड के बटवारे का प्रभाव—पोलैण्ड का बटवारा सफल राजनीतिक लुटेरेपन का सबसे लज्जाजनक उदाहरण है। अठारहवीं शताब्दी में पोलैण्ड अराजकता और कुशासन का शिकार बना हुआ था। नोबुलों की स्वार्थपरता, किसानों की गिरी हुई अवस्था और एक शक्तिशाली सेना के अभाव ने विदेशी शक्तियों को पोलैण्ड का बटवारा कर अपने राजविस्तार करने का अच्छा अवसर दिया।

इन बटवारों से तंग आकर स्टानिशलाज द्वितीय ने त्यागपत्र दे दिया और पोलैण्ड का एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में, अन्त हुआ। इसका प्रभाव फ्रान्स की राज्यक्रान्ति पर भी पड़ा। रूस, प्रशिया, और आस्ट्रिया, पोलैण्ड के मामलों में फँसे रहने के कारण फ्रान्स के विरुद्ध कोई संघ न बना सके। अट्ठारहवीं शताब्दी में दो राज्यक्रान्तियाँ हुई एक पोलैण्ड में और दूसरा फ्रान्स में। पोलैण्ड की राज्यक्रान्ति ने योरपीय शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया जिसके कारण फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का दमन न हो सका और वह सफल रही।

प्रश्नोत्तर

1. What led to the first partition of Poland? How far was it due to internal anarchy, how far to the ambition of foreign powers? (Calcutta, 1918)

(देखिये—पृष्ठ ६६, १००)

2. To what causes would you atribute the extinction of Poland as a sovereign state in the eighteenth century. (Ban. 1948)

(देखिये—पृष्ठ १०० १०२)

3. Give in brief, the effect of the partition of Poland on the history of Europe. (देखिये—पृष्ठ १०२)

चौदहवाँ पाठ

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का महत्त्व—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति योरप की सबसे प्रसिद्ध घटना है। अट्ठारहवीं शताब्दी की राज्यक्रान्तियों में इसका एक प्रमुख स्थान है। इसका कारण फ्रान्स की आन्तरिक बुराइयाँ ही नहीं बल्कि योरप की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति भी है। इस क्रान्ति ने सम्पूर्ण योरप की नींव को हिला दी जिससे एक नये आधार पर योरप का पुनः संगठन करने की आवश्यकता जान पड़ी। राज्य विप्लव के साथ साथ इस राज्यक्रान्ति ने विचारों और सिद्धान्तों में भी क्रान्ति पैदा कर दी। इसने लोगों के दृष्टिकोण को ही बदल दिया। इस क्रान्ति के पहले योरप, शक्ति, वर्ग स्वाधिकार और निरंकुश राज्यसत्ता पर निर्भर था लेकिन फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के पश्चात् समानता, राष्ट्रीयता और लोकतन्त्र की भावनाओं का जन्म हुआ और जनता का महत्त्व बढ़ गया।

योरप की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के क्या कारण थे इसको जान लेने के पहले हमें योरप की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति जान लेना अधिक उचित और लाभप्रद होगा। इसका कारण यह है कि योरप की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के कारण ही फ्रान्स की राज्यक्रान्ति सफल हो सकी और फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के पश्चात् योरप की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में भी विशेष कर परिवर्तन हुआ।

योरप के देशों में [illegible] जनतन्त्र था। देश का शासन राज्य के कुछ चुने हुए व्यक्तियों के हाथ में था। केवल इंग्लैण्ड में नियमानुमोदित शासन था। यद्यपि वेनिस एक प्रजातंत्र था लेकिन उसका शासन एक कुलीन वंश के द्वारा होता था। स्वीट्जरलैण्ड के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में असमानता और मतभेद था। इंग्लैण्ड की नियमानुमोदित शासन में भी अधिकांश लोगों को वोट देने का अधिकार न था। आस्ट्रिया, रूस, स्पेन, प्रशिया, स्वीडन और इटली के अधिकांश राज्यों में स्वेच्छाचारी शासन था। इसके अतिरिक्त योरप के देशों

का राजनीतिक संगठन भी कमजोर और अयोग्य था। जर्मनी छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था जिनमें धार्मिक और राजनीतिक मतभेद था। सम्राट् शक्तिहीन था और राजकीय सभा अपने नियमों को मानने के लिए राज्यों को बाध्य नहीं कर सकती थी। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के प्रारम्भ में आस्ट्रिया की स्थिति भी डाँवाडोल थी। आस्ट्रिया पर हैब्सबर्ग का वंश शासन करता था। इस देश में बोहेमिया, हंगरी, मीलन, और नीदरलैण्ड के लोग सम्मिलित थे जिनमें वैमनस्य था और एक दूसरे के पतन की बाट देखते थे। जोसिफ द्वितीय जर्मनी और आस्ट्रिया दोनों पर शासन करना चाहता था जिससे बोहेमिया, हंगरी और नीदरलैण्ड ने विद्रोह कर दिया। फ्रेड्रिक के शासन-काल में पोलैण्ड के बटवारे से और सिलेसिया जीत लेने से प्रशिया की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। फ्रेड्रिक की मृत्यु के पाश्चात् सन् १७८६ ई० में फ्रेड्रिक विलियम द्वितीय प्रशिया का राजा हुआ जो निकम्मा और विलासप्रिय था। उसमें शासन करने की योग्यता का अभाव था। रूस की महारानी कैथरीन द्वितीय राज्य विस्तार में लगी हुई थी। जर्मनी की भाँति इटली भी छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था जिनमें एकता का अभाव था। चार्ल्स चतुर्थ के अधीन स्पेन एक शक्तिहीन राज्य हो गया था। इंग्लैण्ड फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का दमन करता लेकिन अमेरीका के उपनिवेशों में विद्रोह हो जाने के कारण इंग्लैण्ड क्रान्ति को दबा न सका।

योरपीय राजनीतिक स्थिति की तरह योरप का सामाजिक संगठन भी डाँवाडोल था। समाज दो वर्गों में विभक्त था। प्रथम वर्ग में कुलीन वंश के लोग थे। इनके भूमि होती थी। इनको राज्य की ओर से विशेष स्वीकृति मिलती थी। दूसरे वर्ग में मध्यम श्रेणी के लोग, मजदूर और किसान सम्मिलित थे। इनसे राज्य के अनेक कार्यों के लिए कर देने पड़ते थे। योरप के अधिकांश भाग में जागीर प्रथा अब भी प्रचलित थी। जमीन्दार छोटे-छोटे राजाओं की तरह किसानों पर जो खेतों को जोतते-बोते थे, राज्य करते थे। किसानों और गुलामों की स्थिति भी अच्छी न थी। उनको अनेकों प्रकार के नियन्त्रणों में रखा जाता था। प्रशिया में किसानों को अपने स्वामी के लिए

सप्ताह में ६ दिन काम करना पड़ता था। यह निश्चय था कि यदि योरप में कोई राज्यक्रान्ति होती तो किसान और मजदूर राज्यक्रान्ति में शर्तिया भाग लेते।

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के कारण—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के कारणों को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। (क) राजनीतिक कारण (ख) सामाजिक कारण ग) आर्थिक कारण (घ) वाल्टेयर और रूसो का प्रभाव (च) अमेरीका की राज्यक्रान्ति का प्रभाव (छ) तत्कालिक कारण।

(क) राजनीतिक कारण—राजा निरंकुश था। उसकी शक्ति अपरिमित थी। जनता की सभी संस्थायें नष्ट की जा चुकी थीं। राजा की शक्ति पर कोई रुकावट न था। राजा ही स्वयं राज्य था। राजा अपनी शक्ति में वृद्धि चाहते थे और जनता की भलाई की ओर ध्यान नहीं देते थे। रिचलू और मेजारिन के नेतृत्व में फ्रान्स की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। लेकिन अट्ठारहवीं शताब्दी के राजा निकम्मे और अयोग्य थे। पन्द्रहवाँ लुई फजूलखर्ची और व्यभिचारी था। उसके राज्यकाल में फ्रान्स में गड़बड़ी मची हुई थी और देश का दिवाला निकल रहा था। भारतवर्ष और अमेरिका में फ्रान्सीसियों को अपने उपनिवेश छोड़ने पड़े और योरप की सप्त-वर्षीय युद्ध में फ्रान्स की सैनिक शक्ति नष्ट हो चुकी थी। निरंकुश शासन का अब चलना असम्भव हो गया था।

(ख) सामाजिक कारण—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का मुख्य कारण सामाजिक कारण था। समाज दो वर्गों में विभक्त था। पहले वर्ग में कुलीन वंश के लोग और उच्च पादरी थे और दूसरे में मध्यम श्रेणी के लोग, किसान और मजदूर सम्मिलित थे। दूसरे वर्ग को राज्य के सभी करों को देना पड़ता था। प्रथम वर्ग के लोग करों से बिलकुल मुक्त थे। जमींदारों का बर्ताव अपने किसानों और दासों के प्रति सन्तोषजनक न था। चर्च में भी असमानता और पक्षपात था। उच्च पादरियों का चर्च के सभी ऊँचे पदों पर अधिकार था। वे धार्मिक कर्त्तव्यों की अपेक्षा सांसारिक भोगविलास में अधिक ध्यान देते थे। दूसरी ओर छोटे पादरी होते थे जो वास्तव में धार्मिक कार्य करते थे लेकिन वे गरीब होते थे और श्रेष्ठ पद की प्राप्ति का कोई आशा नहीं रखते थे जिससे वे हमेशा असन्तुष्ट रहते थे।

मध्यम श्रेणी उस समय की वातावरण से बिलकुल असन्तुष्ट थी और राजनीतिक और सामाजिक सुधार चाहती थी। किसानों को जिनकी संख्या फ्रान्स में सबसे अधिक थी नाना प्रकार के कर देने पड़ते थे। उन्हें अपने स्वामी की भूमि का किराया, चर्च को अपने भूमि की पैदावर का दसवाँ भाग और राज्य को कर देना पड़ता था। उन्हें सड़क बनाने या मरम्मत करने पड़ते थे। इस प्रकार किसानों की स्थिति चिन्ताजनक हो गई थी। मजदूर मध्यम श्रेणी के लोगों पर पूर्णतया आश्रित थे।

(ग) आर्थिक कारण—कर निर्धारण में बहुत सी त्रुटियाँ आ गई थी। कर प्रायः अनुचित और घृणित होते थे। कुलीन वंश के लोग और पादड़ी करों से मुक्त थे। करों का सारा भार किसानों और मजदूरों पर पड़ता था। कर एकत्र करने की विधि भी खराब थी। राज्य कर एकत्र करने के अधिकार को उन लोगों के हाथ में दिया जाता था जो राज्य को सबसे अधिक धन देते थे। इसके पश्चात् अधिकार प्राप्त लोग किसानों से मनमानी कर वसूल करते थे। फ्रान्स का प्रत्येक अर्थमन्त्री कर-निर्धारण में सुधार करना चाहता था लेकिन नोबुल इन सुधारों का विरोध करते थे जिसके कारण उनका प्रयत्न विफल हो जाता था।

(घ) वाल्टेयर और रूसो का प्रभाव—रूसो और वाल्टेयर जैसे दार्शनिक विद्वानों की शिक्षाओं ने असन्तोष की आग में घी का काम किया। उन विद्वानों ने जनता में उस समय की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के प्रति घृणा और ईर्ष्या उत्पन्न कर दी। रूसो ने अपनी पुस्तक (Social Contract Theory) में प्रत्यक्ष लोकतन्त्र (Direct Democracy) की स्थापना पर जोर डाला और जनता को राज्य करने के लिए उत्साहित किया। वाल्टेयर ने चर्च और राज्य में होने वाली त्रुटियों की आलोचना की। इसका जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(च) अमेरिका की राज्यक्रान्ति का प्रभाव—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के मुख्य कारणों में एक अमेरिका की राज्यक्रान्ति का प्रभाव भी है। इंगलैण्ड ने अपने अमेरिका के उपनिवेशों पर अनेक प्रकार के व्यापारिक नियन्त्रण लगा रखा था। उन्हें अनेकों प्रकार के टैक्स देने पड़ते थे। उपनिवेशों को शासन

प्रणाली भी ठीक नहीं थी। सप्तवर्षीय युद्ध से उनकी स्थिति भी आपत्तिग्रस्त हो गई थी। उपनिवेश कर लगाने के अधिकार का हमेशा से विरोध करते थे। अतः सन् १७७६ ई० में उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्रता की घोषणा की और अमेरिका की राज्यक्रान्ति का प्रारम्भ हुआ। सरेटोगा आदि युद्धों में अंग्रेज बुरी तरह परास्त हुए और सन् १७८३ ई० की वारसाई की सन्धि से अमेरिका की उपनिवेशों की स्वतन्त्रता मान ली गई। अमेरिका की स्वतंत्रता के युद्ध का गहरा प्रभाव फ्रान्स के सुधारकों पर पड़ा। अमेरिका की राज्य-क्रान्ति ने फ्रान्सीसियों को स्वतन्त्रता की युद्ध के लिए उत्साहित किया।

(छ) तत्कालिक कारण---फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का शीघ्र सूत्रपात होने का मुख्य कारण अर्थ की शोचनीय स्थिति थी। देश का दिवाला निकल रहा था। लुई पंद्रहवाँ के शासन काल में राजा की फजूलखर्ची नीति और कई युद्ध में भाग लेने से देश की बजट में काफी घाटा हो गया था। धन की आवश्यकता बनी रहने के कारण राजा को सन् १७८९ ई० में इस्टेट-जनरल बुलाना पड़ा।

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति की मुख्य घटनायें---सन् १७८९ ई० में इस्टेट-जनरल आमंत्रित की गई। नेकर इस सभा का प्रधान था। नेकर ने जनता की प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि की और उनकी संख्या अब पादड़ियों और नोबुलों के प्रतिनिधियों की संयुक्त संख्या के बराबर हो गई। जनता की प्रति-निधियों ने तीनों वर्गों के प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक की माँग की। सोलहवें लुईस को अन्त में जनता की प्रतिनिधियों की मांगों को स्वीकार करना पड़ा। इन सब का यह परिणाम हुआ कि तीनों वर्गों की संयुक्त बैठक होने लगी और राष्ट्रीय सभा के संगठन का कार्य पूरा हुआ।

सोलहवाँ लुई जनता के प्रभाव को कम करना चाहता था। उसने नेकर को पद से हटा दिया। राजा की दमन नीति से असन्तुष्ट होकर पेरिस की जनता ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। राजकीय कारागार जो बैस्टिली कहलाता था नष्ट कर दिया गया। पेरिस की देखा-देखी अन्य प्रान्तों ने भी विद्रोह कर दिया।

४ अगस्त सन् १७८९ ई० में राष्ट्रीय सभा आमंत्रित की गई। राष्ट्रीय-सभा ने फ्रान्स की शासन-विधान की संगठन की ओर ध्यान दिया। राष्ट्रीय

सभा आर्थिक कठिनाइयों को भी दूर करना चाहती थी जिसके कारण सोलहवें लुई को स्टेट-जनरल बुलानी पड़ी थी। राष्ट्रीय सभा का शासन विधान असफल रहा और अधिक दिनों तक नहीं चला।

सोलहवें लुई ने अपने को पेरिस में एक बन्दी के रूप में पाया। अतः वह अपने कुटुम्ब के साथ भाग जाना चाहता था। लेकिन उसकी योजना का पता चल गया और वह बन्दी बनाकर पेरिस लाया गया। राजा के प्रति जनता की सहानुभूति जाती रही। रोबेस्पीयर और डान्टन ने जो प्रजातन्त्र दल के प्रमुख सदस्य थे, प्रजातन्त्र राज्य की माँग की। लेकिन राजपक्षावलम्बियों की संख्या अधिक होने के कारण सोलहवाँ लुई एक बार फिर फ्रान्स का राजा बनाया गया। ३० सितम्बर सन् १७९१ ई० में शासन विधान भंग कर दिया गया।

१ अक्टूबर सन् १७९१ ई० में नये-शासन विधान के अनुसार व्यवस्थापिका सभा की बैठक हुई। शासन-विधान ने एक नियम पास किया जिसके अनुसार इस सभा के सदस्य भविष्य में व्यवस्थापिका सभा के सदस्य नहीं हो सकते थे। इसके अतिरिक्त शासन-विधान में कई राजनीतिक दलों का आविर्भाव हो गया था। कुछ लोग व्यवस्थित शासन प्रणाली के अनुयायी थे। कुछ लोग (Girondists) जिनका निर्वाचन जिरान्ड जिले से होता था, नरम प्रजातन्त्र दल के मानने वाले थे और कुछ लोग ऐसे भी थे जो गरम प्रजा-तन्त्र दल के अनुयायी थे।

सन् १७९२ ई० में फ्रान्स ने आस्ट्रिया और प्रशिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इसके कई कारण थे। (क) आस्ट्रिया ने फ्रान्स से भागे हुए नोबुलों और राजकुमारों को शरण दे रखी थी। (ख) आस्ट्रिया का सम्राट् सोलहवें लुईस की पत्नी का भाई था। अतः ल्युपार्ल्ड द्वितीय अपनी बहिन की रक्षा करना चाहता था। उसने प्रशिया से सन्धि कर के २७ अगस्त सन् १७९१ ई० में एक घोषणा पत्र (Declaration of Pilnitz) प्रकाशित किया जिसमें फ्रान्स के राजा के हित को योरप के राजाओं का हित बतलाया गया। (ग) राजतन्त्र को बिलकुल नष्ट करने के विचार से जिरान्डीस्ट युद्ध के इच्छुक थे।

यद्यपि युद्ध के आरम्भ में ल्यूपाल्ड द्वितीय की मृत्यु हो गई थी लेकिन उसकी नीति को सम्राट फ्रान्सिस द्वितीय ने अपनाया। आस्ट्रिया के फ्रान्सिस

द्वितीय और प्रशिया के फ्रेड्रिक विलियम द्वितीय ने फ्रान्स पर आक्रमण करने के लिए काब्लेन्ज नामक स्थान पर ८०,००० सिपाहियों की एक सेना एकत्र किया। इस प्रकार सन् १७६२ ई० में एक युद्ध आरम्भ हुआ जो तेरह वर्ष तक चलता रहा। फ्रान्सीसियों में उत्साह था क्योंकि वे एक उद्देश्य को लेकर लड़ रहे थे। लेकिन उनकी सेना का संगठन अच्छा न था और उनमें अनुशासन का अभाव था। लफायेट में जिसके हाथ में सेना का बागडोर थी योग्यता की अपेक्षा अभिलाषायें अधिक थीं।

युद्ध के आरम्भ में फ्रान्स को हार खानी पड़ी। आस्ट्रियन बेल्जियम जीतने का प्रयत्न विफल रहा। ड्यूक आफ ब्रून्सविक की अध्यक्षता से आस्ट्रिया और प्रशिया की संयुक्त सेना पेरिस की ओर बढ़ रही थी। जनता को ऐसा प्रतीत हुआ कि राजा शत्रुओं से मिला हुआ है। अतः २० जून को जनता ने एक बहुत बड़ा सैनिक प्रदर्शन किया और राजा और रानी को शत्रुओं का साथ न देने के लिए भयभीत किया। लुई और मेरी अनटायनेट पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा।

२५ जुलाई को ड्यूक आफ ब्रून्सविक ने फ्रान्सीसियों के नाम एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया जिसमें यह कहा गया कि यदि कोई राजवंश को किसी प्रकार की हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेगा तो उसका बदला पेरिस की जनता से ली जायगी और राजधानी को बिलकुल नष्ट कर दिया जायगा। ड्यूक आफ ब्रून्सविक की घोषणा-पत्र का उत्तर पेरिस की जनता ने विद्रोह से दिया। राजा के रक्षक मार डाले गए और व्यवस्थापिका सभा में रहने के लिए राजा को बाध्य किया गया। १० अगस्त को समस्त प्रतिनिधियों ने राजा को पदच्युत करने तथा एक नेशनल कनवेन्सन की नियुक्ति करने के लिए प्रस्ताव किया।

राजा के पदत्याग से लेकर (१० अगस्त) नेशनल कनवेन्सन की नियुक्ति (२० सितम्बर) तक फ्रान्स में अराजकता फैली रही। फ्रान्स में क्रान्तिकारी दल का प्रभाव अधिक था। डान्टन उनका नेता था। उसका कहना था कि जब तक भीतरी और बाहरी शत्रु भयग्रस्त नहीं किये जाँयगे तब तक देश की रक्षा

होना असम्भव है।* २ सितम्बर को डान्टन को जब विपक्षियों के वर्डन जीत लेने का समाचार मिला तो उसने राजपक्षावलम्बियों के कत्ले-आम की आज्ञा दिया। पाँच दिनों तक राजपक्षावलम्बियों का वध होता रहा। २० सितम्बर को नेशनल कनवेन्सन की नियुक्ति हुई और २२ सितम्बर को फ्रान्स में प्रजातन्त्र राज्य की घोषणा की गई। कनवेन्सन का पहला काम शासन-विधान तैयार करना था। जिरान्डीस्ट और माउन्टेन में मतभेद होने के कारण यह कार्य बहुत दिनों तक स्थगित रहा। कनवेन्सन ने लुई पर घूस लेने का अपराध लगाकर अभियोग चलाया। कनवेन्सन के अधिकांश सदस्य उसके विरुद्ध थे। अतः २१ जनवरी सन् १७६३ ई० को सोलहवें लुई को फाँसी दिया गया।

इसके पश्चात् नेशनल कनवेन्सन ने सम्पूर्ण योरप में सुधार करना चाहा। फ्रान्स के लिए युद्ध आवश्यक था क्योंकि युद्ध के बिना प्रजातन्त्र का चलना असम्भव था। आस्ट्रिया और प्रशिया तो फ्रान्स के शत्रु थे ही। फ्रान्सीसियों की बेल्जियम विजय ने इंग्लैण्ड और हालैण्ड में भय पैदा कर दिया था। लुई की हत्या के पश्चात् फ्रान्स के राजदूत को इंग्लैण्ड छोड़ना पड़ा जिससे उत्तेजित होकर फ्रान्स ने इंग्लैण्ड और हालैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दिया। फ्रान्स के विरुद्ध योरपीय देशों ने एक संघ (First Coalition) बनाया जिसमें इंग्लैण्ड, हालैण्ड, आस्ट्रिया, प्रशिया, सारडीनिया और स्पेन सम्मिलित थे।

शत्रुओं की संयुक्त सेना ने बेल्जियम और राईन नदी के निकटवर्ती प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। कार्नाट की नेतृत्व में फ्रान्स की सेना ने देश से शत्रुओं को निकाल बाहर किया। इसी प्रकार सन् १७६४ और सन् १७६५ में फ्रान्सीसी सेना कई स्थानों पर विजयी हुई। बेसेल की सन्धि से इस युद्ध का अन्त हुआ। फ्रान्स का राईन नदी के बाँये किनारे पर अधिकार हो गया। हालैण्ड का

* डान्टन का कहना था कि—In my opinion the way to stop the enemy is to terrify the royalists' audacity, more audacity and always greater audacity."

(Quoted from Hayes. Modern Europe)

विलियम पंचम पदच्युत कर दिया गया। आस्ट्रियन नीदरलैण्ड और राईन नदी तक के सभी प्रदेश फ्रान्स के अधिकार में आ गये।

सन् १७९३ ई० में ९ सदस्यों की एक कमेटी (Committee of Public of Safety) बनाई गई। इस कमेटी का, जिसके सदस्य कार्नाट रोबेस्पीयर, सेन्ट जस्ट (St. Just) जैसे जकोबिन नेता थे, मुख्य कार्य राज्य के मन्त्रियों को आज्ञा देना, स्थानीय अफसरों की नियुक्ति करना और भीतरी और बाहरी शत्रुओं का दमन करना था। इस कमेटी के शासन-काल को "त्रास राज्य" (Reign of Terror) कहते हैं। त्रास की अवस्था स्थापित करने में इस कमेटी के दो मुख्य साधन थे। पहला (Committee of General Security) और दूसरा (Revolutionary Tribunal) देश में शान्ति स्थापित करने के लिए पहली कमेटी को पुलिस अधिकार दिया गया। दूसरी कमेटी संदेहयुक्त व्यक्तियों पर अभियोग चलाती थी। ये दोनों कमेटी अपने कार्यों के लिए Committee of Public Safety के प्रति उत्तरदायी होते थे। त्रास राज्यकाल में करीब ५,००० व्यक्तियों को प्राण दण्ड दिया गया जिनमें मेरी अनटायनेट, फिलिप इगालिट और मैडम रोलाण्ड प्रमुख थे।

डान्टन और उसके साथी त्रास के समर्थक थे। लेकिन जब फ्रान्स को कोई विदेशी शत्रु का भय न रहा तो डान्टन ने कमेटी के अत्याचारों को कम करना चाहा जिसके कारण डान्टन और उसके समर्थकों को प्राणदण्ड दिया गया। डान्टन के पतन के बाद रोबेस्पीयर फ्रान्स में प्रधान हो गया। वह जकोबिन्स का नेता था और कनवेन्शन पर उसका काफी प्रभाव था। जनता ने न्यायालय (Tribunal) को हटाने की माँग की और कनवेन्शन ने उसे और उसके समर्थकों को अवैध घोषित कर दिया। २७ जुलाई को वह और उसके साथी पकड़े गये और दूसरे दिन वध कर दिये गये। रोबेस्पीयर के पतन के बाद "त्रास-राज्य" का भी अन्त हो गया।

नेशनल कनवेन्शन ने एक 'डाईरेक्टरी' की स्थापना की जिसमें पाँच सदस्य होते थे। एक व्यवस्थापिका सभा की भी नियुक्ति की गई। इसमें दो हाउस होते थे—Council of five hundred और

(Council of Ancients)। यह Constitution of the year III के नाम से प्रसिद्ध है। राजपक्षावलम्बियों ने इसके विरोध में विद्रोह किया लेकिन नेपोलियन बोनापार्ट के प्रयत्न से दबा दिया गया। २६ अक्टूबर को कनवेन्शन भंग हो गया।

नये शासन-विधान के अनुसार २६ अक्टूबर सन् १७९५ ई० को डाईरेक्टरी की बैठक हुई। प्रथम प्रश्न प्रजातन्त्र के शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध जारी करना था। इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया और सार्डीनिया फ्रान्स के शत्रु थे। एक जहाजी बेड़े के अभाव में इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करना असम्भव था। इसलिए डाई-रेक्टरी ने आस्ट्रिया पर आक्रमण करना अधिक उचित समझा। कार्नाट ने आस्ट्रिया पर आक्रमण किया। जर्मनी पर आक्रमण करने का भार जोर्डन और मोरिया पर छोड़ा गया और इटली के युद्धों का भार नेपोलियन को सौंपा गया।

नेपोलियन बोनापार्ट ने सेवाय और नाइस जीत कर सारडीनिया के निवासियों को सन्धि के लिए बाध्य किया। आस्ट्रिया की सेना आर्टोला (Artola) और रिवलोली के युद्धों में बुरी तरह परास्त हुई। मनचूआ जीत लिया गया और वेनिस पर फ्रान्सासियों का अधिकार हो गया। नेपोलियन की सफलताओं से भयभीत होकर सम्राट् फ्रान्सीस द्वितीय ने सन् १७९७ ई० में फ्रान्स के साथ काम्पो-फारमियों की सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार आस्ट्रिया ने फ्रान्स को बेल्जियम देना स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त आस्ट्रिया ने दो प्रजातन्त्र राज्यों को जिसको नेपोलियन ने इटली में बनाया था, मान लिया।

आस्ट्रिया के बाद इंग्लैण्ड को ही नीचा देखाना शेष रह गया था। नेपोलियन अप्रत्यक्ष रूप से इंग्लैण्ड पर आक्रमण करना चाहता था। इस लिए उसने सन् १७९८ ई० के मई महीने में मिश्र पर आक्रमण किया। पिरामिड्स के युद्ध ने नेपोलियन को नील नदी की घाटी का स्वामी बना दिया। लेकिन नेल्सन ने जो इंग्लैण्ड का समुद्रीय सेना-नायक था, फ्रान्स की जल-शक्ति को बिलकुल नष्ट कर दिया। नेपोलियन मिश्रमें एक बन्दी के रूप में हो गया। उसने सीरिया पर भी आक्रमण किया लेकिन एके Acre जीतने का प्रयत्न विफल रहा।

इस समय तक डाईरेक्टरी के सदस्यों में काफी मतभेद हो गया था। डाईरेक्टरी में दलबन्दियाँ शुरू हो गई थीं। जनता डाईरेक्टरी की परराष्ट्र नीति से असन्तुष्ट थी। अब्बे सीज ने नेपोलियन की सहायता से डाईरेक्टरी भंग कर दी और उसके स्थान पर एक Consulate नियुक्त किया। अब्बे-सीज, ड्यूकोस और नेपोलियन उसके कांसुल नियुक्त हुए।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति का प्रभाव—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति ने प्राचीन शासन पद्धति और दृष्टिकोण में क्रान्ति पैदा कर दी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की नीव पड़ी, गुलामी की प्रथा का अन्त हुआ और जनता को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार मिला। जनता का महत्व पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गया। राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति हुई। वर्ग भिन्नता दूर हो गई और समानता के सिद्धान्त को अपनाया जाने लगा। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति से प्रभावित होकर इटली और जर्मनी के निवासियों ने भी अपने शासकों के विरुद्ध विद्रोह किया और स्वतन्त्र हो गये।

फ्रांस की राज्यक्रांति की सफलता के कारण—(क) फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के साथ जनता का पूरा सहयोग था। (ख) लुई में शासन करने की योग्यता का अभाव था। उसमें बढ़ती हुई अशान्ति को रोकने की क्षमता न थी। (ग) विद्रोहियों के नेता योग्य और प्रभावशाली थे। उन्हें जनता का पूरा सहयोग प्राप्त था। (घ) विदेशियों ने दमन कार्य में सोलहवें लुई की सहायता न की। (च) नेपोलियन बोनापार्ट का व्यक्तित्व महान् था।

प्रश्नोत्तर

1. Discuss the causes that led to the French Revolution.
(Alld. 1928. *Cal* 1920, 1922)

(देखिये पृष्ठ १०६, १०७, १०६)

2. Describe briefly the various causes of the French Revolution, indicating their relative importance. (*Banaras* 1949)

(देखिये प्रश्न १ का उत्तर)

3. "Fiscal causes lay at the root of the French Revolution. Illustrate. (देखिये पृष्ठ १०७) (*Calcutta* 1922)

4. Give in brief, the main events of the French Revolution?

(देखिये पृष्ठ १०८, ११४)

5. Account for the success of the French Revolution.

(देखिये पृष्ठ ११४)

पन्द्रहवां पाठ

नेपोलियन का उत्कर्ष

नेपोलियन का आरम्भिक जीवन—नेपोलियन का जन्म १५ अगस्त सन् १७६९ ई० में कार्सिका के अजासिओ नामक स्थान पर हुआ था। प्रारम्भ से ही उसे गणित, इतिहास और युद्ध विद्या में रुचि थी। वह अपने बाल्यावस्था में कार्सिका के निवासियों के स्वतन्त्र युद्ध का नेता बनने का स्वप्न देखा करता था। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति से उसे अपने स्वप्न को वास्तविक रूप देने का अच्छा अवसर मिला। सत्रह वर्ष की अवस्था में वह सेना में भर्ती हुआ और तोपखाने का अफसर हो गया। उसने सन् १७९३ ई० में टायलान जीता और सन् १७९५ ई० में नेशनल कनवेन्शन की रक्षा किया।

नेपोलियन का चरित्र—नेपोलियन की सफलता का मुख्य कारण उसकी योग्यता थी। नेपोलियन अपनी योग्यता पर पूरा विश्वास करता था। वह अभिलाषी, स्वार्थी और आत्माभिमानी था। संसार विजयी होने की योजना में वह सदैव विचार-विमग्न रहता था। वह अपने को "भाग्य की देन" समझता था। उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। वह अच्छी तरह से जानता था कि फ्रान्स की जनता निशक्त सरकार और निरन्तर युद्ध से ऊब गई है और वह एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना चाहती है। वह असन्दिग्ध था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह सभी साधनों को लगा देता था। उसका न तो कोई सिद्धान्त था और न वह ईश्वर में ही विश्वास करता था। वह किसी कार्य को असम्भव नहीं मानता था। वह कहा करता था कि असम्भव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है।

नेपोलियन और द्वितीय संघ—Consulate की पहली समस्या द्वितीय संघ (Second Consulate) का सामना करना था। इस द्वितीय संघ में इंगलैण्ड और आस्ट्रिया सम्मिलित थे। जर्मनी से आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के लिए मोरियो भेजा गया और नेपोलियन ने स्वयं उसका सामना

करने के लिए इटली प्रस्थान किया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया की सेना को मरेंगी नामक स्थान पर परास्त किया और सम्पूर्ण इटली पर अधिकार कर लिया। कुछ माह पश्चात् मोरिया ने आस्ट्रिया की सेना को होहेनलिन्डेन के युद्ध में हराया। सन् १८०१ ई० में ल्यूनेविली की सन्धि से आस्ट्रिया और फ्रान्स में मैत्री हो गई।

ल्यूनेविली की सन्धि के बाद संघ का एक मात्र सदस्य इंग्लैण्ड बच गया था। इंग्लैण्ड की जहाजें तटस्थ देशों की जहाजों का निरीक्षण करती थीं। नेपोलियन ने इंग्लैण्ड के इस कार्य को रोकने के लिए रूस के जार को एक संघ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस संघ में रूस, प्रशिया, स्वीडन, फ्रान्स और डेनमार्क सम्मिलित थे। इस संघ के बनने की सूचना पाते ही नेलसन (Nelson) के नेतृत्व में एक अंग्रेजी जहाजी बेड़ा ने कोपेनहेगेन पर बम वर्षा की और डेनमार्क के जहाजी बेड़े पर अधिकार कर लिया। इस विजय से और साथ ही साथ रूस के जार की हत्या से यह संघ छिन्न भिन्न हो गया। इस प्रकार नेपोलियन की योजना असफल रही। मिश्र में भी अंग्रेजों की विजय हुई। कैरो नामक स्थान पर फ्रान्सीसी सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा। सन् १८०२ ई० में नेपोलियन ने इंग्लैण्ड के साथ अमीन्स की सन्धि कर ली जिसके अनुसार इंग्लैण्ड को लंका और ट्रिनिडाड छोड़कर अपनी सारी विजयों को फ्रान्स को लौटाना पड़ा। इसके बदले में फ्रान्स को नेपील्स और पोप के राज्यों को छोड़ना पड़ा और मिश्र को तुर्की के सुल्तान के हवाले करना पड़ा। यह सन्धि ल्यूनेविली की सन्धि की तरह फ्रान्स के अनुकूल थी क्योंकि इंग्लैण्ड ने योरप में फ्रान्स की प्रधानता को स्वीकार कर लिया था।

नेपोलियन की गृह नीति—अमीन्स की सन्धि के पश्चात् नेपोलियन ने फ्रान्स के शासन में सुधार करना चाहा। उसकी नीति के मुख्य तीन लक्ष्य थे : (क) फ्रान्स की क्षति को पूरा करना। (ख) फ्रान्स में एकात्मक सरकार की स्थापना करना। (ग) और समानता के सिद्धान्त को कार्य के रूप में लाना। वह स्वतन्त्रता के सिद्धान्त के विरुद्ध था। उसका कहना था कि जनता स्वतन्त्रता नहीं बल्कि समानता चाहती है। इसलिए उसने वर्गों की भिन्नता को दूर किया और एक संघ (Legion of Honour) की स्थापना की जिसमें सभी

जाति, धर्म या पद के लोग जो देश के लिए कोई हितकर कार्य कर करते थे, सम्मिलित हो सकते थे।

शासक मंडल और व्यवस्थापिका सभा के कार्यों को बोनापार्ट को सौंपा गया। निर्वाचित कौंसिलों की कार्यों को कम कर दिया गया। और प्रत्येक विभाग को प्रिफेक्ट और सब-प्रिफेक्ट के अधीन रखा गया। इन कर्मचारियों की नियुक्त नेपोलियन स्वयं करता था और वे अपने कार्यों के लिए उसके प्रति उत्तरदायी होते थे। स्थानीय निर्वाचित कौंसिलों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया। उनकी बैठक वर्ष में केवल पन्द्रह दिन के लिए होती थी। वे प्रिफेक्ट या सब-प्रिफेक्ट से सलाह ले सकते थे। पाँच हजार से अधिक जन-संख्या वाले नगरो के अध्यक्षों की नियुक्त बोनापार्ट करता था। इस प्रकार फ्रान्स में एकात्मक सरकार की नींव डाली गई जिससे शासन में जनता का प्रभाव कम हो गया।

नेपोलियन ने आर्थिक अशान्ति को भी दूर किया जो राजतन्त्र (सन् १७८९ ई०) और डाईरेक्टरी (सन् १७९९ ई०) के पतन का मुख्य कारण था। उसने सावधानी से करो को एकत्र किया और राज्य की आय को बढ़ाया। उसने फजूलखर्ची को कम किया व्यभिचारी अफसरों को कड़ा दण्ड दिया और पराजित देशो की जनता को सैनिक सहायता देने के लिए बाध्य किया। इस प्रकार उसने जनता के खर्च को कम किया। और सरकार की आय को बढ़ाया। सन् १८०० ई० में उसने बैंक आफ फ्रान्स की नींव डाली।

एक दूसरी समस्या जिसका सामना नेपोलियन को करना पड़ा राज्य और केथोलिक चर्च का झगड़ा था। नेपोलियन अपने राजनीतिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिए फ्रान्स के केथोलिकों की सहायता प्राप्त करना चाहता था। सन् १८०१ ई० में पोप और प्रजातन्त्र में एक समझौता हो गया जिसके अनुसार चर्च की सम्पत्ति जब्त कर ली गई और मठों का दमन किया गया। इसके बदले में प्रजातन्त्र ने पादड़ियो को वेतन देना स्वीकार किया। बोनापार्ट विशपो को निर्दिष्ट करता था और पोप पदों पर उनकी नियुक्ति करता था। पादड़ियो की नियुक्ति विशप करते थे। इस प्रकार फ्रान्स में केथोलिक चर्च की पुनः स्थापना हुई। अन्य मतावलम्बियो को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई।

नेपोलियन ने कानून सम्बन्धी सुधार भी किया। राज्यक्रान्ति के पहले फ्रान्स का शासन भिन्न-भिन्न कानूनों के द्वारा होता था। बोनापार्ट ने कानूनों की संख्या में कमी किया और उनको एक निश्चित रूप दिया। इसको "कोड नेपोलियन" कहते हैं। इन सुधारों से कानून स्पष्ट, यथाक्रम और व्यवस्थित हो गया जिससे न्याय शीघ्र, सस्ता और विश्वासनीय होने लगा।

शिक्षा-प्रणाली में भी सुधार किया गया। और जनता की शिक्षा के लिए नये नये स्कूलों की स्थापना की गई। प्रत्येक छोटे नगरों में प्रिफेक्ट और सब-प्रिफेक्ट के अधीन प्राईमरी स्कूल खोले गये। ऊँचे स्कूलों में लैटिन प्रारम्भिक विज्ञान आदि की शिक्षा दी जाती थी और उनका खर्च जनता की सहायता से चलता था। लेकिन वे केन्द्रीय सरकार के अधीन होते थे। प्रत्येक मुख्य नगर में हाई स्कूल खोले गये। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष स्कूल, जैसे टेक्नीकल स्कूल, सिविल सर्विस स्कूल, सैनिक स्कूल, भी खोले गये। शिक्षा-प्रणाली में एकरूपता या समानता लाने के लिए फ्रान्स के विश्वविद्यालय की नींव डाली गई।

इसके अतिरिक्त नैपोलियन ने सार्वजनिक कार्य भी किया। उसने पुरानी सड़कों की मरम्मत करवाया और लगभग २२६ नई सड़कों को बनवाया जिसमें तीस मुख्य थे जो पेरिस से फ्रान्स की सीमा तक जाते थे। आल्प्स पर्वत पर दो सुन्दर सड़कों के बन जाने से पेरिस, ट्यूरीन, मीलन, रोम, और नेपील्स से मिल गया। नदियों पर पुल बनाये गए और नहरों और छोटी नदियों की योजनाओं को कार्यान्वित किया गया।

नेपोलियन एक उपनिवेशिक राज्य स्थापित करना चाहता था लेकिन उसे इस कार्य में सफलता नहीं मिली। उसने सफलतापूर्वक विद्रोहियों को दबाया और षड्यन्त्रों का पता लगा कर उनके नेताओं को प्राणदन्ड दिया। बूरबाँ वंश का एक राजकुमार बिना कोई अपराध के मार डाला गया। इस प्रकार नेपोलियन ने राजसत्तावलम्बियों को भयत्रस्त किया। २ दिसम्बर सन् १८०४ ई० में नेपोलियन बोनापार्ट फ्रान्स का सम्राट् हो गया।

नेपोलियन और अन्य विजय—अमीन्स की सन्धि (सन् १८०२ ई०) अधिक दिनों तक कायम न रही। नेपोलियन अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्र

करके संसार विजय करना चाहता था। नेपोलियन ने इंग्लैण्ड से आने वाली वस्तुओं पर अधिक कर लगाना आरम्भ किया जिससे दोनों में मतभेद बढ़ता गया। और सन् १८०३ ई० में इंग्लैण्ड और फ्रान्स में एक युद्ध छिड़ गया। नेपोलियन ने हनोवर (Hanover) जीत लिया और उसके बन्दरगाहों को अंग्रेजी जहाजों के लिए बन्द कर दिया। सन् १८०५ ई० में नेलसन ने फ्रान्स और स्पेन की संयुक्त सेना को जल-युद्ध में परास्त किया।

रूस का जार नेपोलियन के 'सम्राट्' की उपाधि से क्रुद्ध हो गया था और इटली के आक्रमणों से आस्ट्रिया फ्रान्स से अप्रसन्न हो गया था। ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड ने एक तृतीय संघ बनाया जिसके सदस्य इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया, प्रशिया और स्वीडन थे। इस तृतीय संघ की सूचना पाते ही नेपोलियन ने बोलान की विशाल सेना को आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के लिए आदेश दिया। उल्म नामक स्थान पर आस्ट्रिया की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। आस्टर-लिट्ज के युद्ध में बोनापार्ट ने आस्ट्रिया और रूस की सेना को बुरी तरह परास्त किया। सन् १८०५ ई० में आस्ट्रिया को प्रसवर्ग की सन्धि करना पड़ी जिसके अनुसार उसे वेनिस, इटली और टाइरोल देना पड़ा। जर्मनी के दो प्रदेश-वरटेमवर्ग और ब्रवेरिया स्वतन्त्र राज्य स्वीकार कर लिये गये।

बेसेल की सन्धि से लेकर अब तक फ्रान्स और प्रशिया में मित्रता बनी रही। लेकिन नेपोलियन की सफलताओं से बाध्य होकर प्रशिया को रूस से मित्रता करनी पड़ी जिसका मुख्य उद्देश्य जर्मनी से फ्रान्सीसियों को खदेड़ना था। सन् १८०६ ई० में युद्ध की घोषणा हुई। प्रशिया की सेना जेना और आर्सटाड्ट के युद्धों में बुरी तरह हारी और सन् १८०६ में बोनापार्ट ने सफलता पूर्वक बर्लिन नगर में प्रवेश किया।

प्रशिया के बाद नेपोलियन ने अपना ध्यान रूस की ओर दिया। बोनापार्ट ने फ्रीडलैण्ड के युद्ध में रूसी सेना को हराया जिससे बाध्य होकर जार को सन्धि के लिए प्रार्थना करनी पड़ी। सन् १८०७ ई० में टिल्सिट की सन्धि हुई जिससे रूस और फ्रान्स में मित्रता हो गई।

टिल्सिट की सन्धि से नेपोलियन की शक्ति अपनी चोटी पर पहुँच गई। उसका सितारा योरप में चमक रहा था। इस समय वह फ्रान्स का सम्राट् और

इटली का राजा था। राईन के संघ का रक्षक (Protector of the Confederation of the Rhine) होने के कारण उसका प्रभाव जर्मनी में अधिक था। हालैण्ड का लुई, वेस्टफालिया का जिरोम और नेपील्स का जोजेफ उस पर पूर्णतया आश्रित थे। आस्ट्रिया और प्रशिया नीचा देख चुके थे। और रूस से मित्रता हो गयी थी। इंग्लैण्ड केवल शेष रह गया था जिसको दबाने का नेपोलियन ने संकल्प किया।

नेपोलियन और उसकी महाद्वीप नीति—महाद्वीप नीति नेपोलियन की सबसे बड़ी भूल थी और जो आगे चलकर उसके पतन का कारण हुई। फ्रान्स के पास कोई जहाजी बेड़ा न था जिससे वह इंग्लैण्ड पर सीधा आक्रमण नहीं कर सकता था। ऐसी स्थिति में नेपोलियन अप्रत्यक्ष रूप से इंग्लैण्ड को हानि पहुँचाना चाहता था। सन् १८०६ ई० में बर्लिन से उसने एक घोषणा प्रकाशित की जिसके अनुसार इंग्लैण्ड का बहिष्कार किया गया और अंग्रेजी जहाजों को पकड़ लेने की आज्ञा दी गई। इसके अतिरिक्त उन जहाजों पर जो अंग्रेजी बन्दरगाहों से होकर पास करेंगी, अधिकार कर लिया जायगा। यह नेपोलियन की महाद्वीप नीति कहलाती है।

नेपोलियन की महाद्वीप नीति असफल रही। समुद्र पर अंग्रेजों का पूरा अधिकार था। विदेशी सामान अंग्रेजी जहाजों में आता जाता था जिससे अंग्रेजी व्यापार पूर्ववत बना रहा लेकिन विदेशी राज्यों को काफी हानि उठानी पड़ी। जिसका परिणाम यह हुआ कि आवश्यक वस्तुओं का मूल्य बढ़ गया और फ्रान्स के मित्र शत्रु बन बैठे।

नेपोलियन और द्वीप युद्ध—पुर्तगाल ने सबसे पहले नेपोलियन की महाद्वीप नीति का विरोध किया। नेपोलियन के प्रयत्न से विद्रोह दबा दिया गया। पुर्तगाल के बाद स्पेन ने विद्रोह किया। चार्ल्स षष्ठम और फरडीनाण्ड के झगड़े से लाभ उठाकर नेपोलियन जोजेफ को स्पेन का राजा बनाना चाहा। जनता ने विद्रोह कर दिया। स्पेन वालों ने गुरिल्ला युद्ध आरम्भ किया और जोजेफ को मैड्रीड भाग जाने के लिए विवश किया। फ्रान्सीसियों को हार माननी पड़ी और बेलेन नामक स्थान पर फ्रान्सीसी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। इंग्लैण्ड ने स्पेन वालों का पक्ष लिया और

उनकी सहायता के लिए सर आर्थर वेलेजली के नेतृत्व में एक सेना भेजी। आर्थर वेलेजली ने फ्रान्सीसियों को विमिरो के युद्ध में हराया और पुर्तगाल छोड़ने के लिए बाध्य किया। फ्रान्सीसियों की असफलताओं को सुन कर नेपोलियन ने स्वयं युद्ध में भाग लिया और मैड्रिड पर अधिकार कर लिया। लेकिन आस्ट्रिया के आक्रमण का समाचार पाते ही उसे शीघ्र फ्रान्स लौट जाना पड़ा। उसकी अनुपस्थिति में आर्थर ने सन् १८०९ ई० में टालेवरा नामक स्थान पर फ्रान्स की सेना को हराया। मैड्रीड पर कब्जा कर लिया गया और स्पेन फ्रान्सीसियों से खाली हो गया।

आस्ट्रिया वालों ने भी विद्रोह किया लेकिन उनका प्रयत्न विफल रहा और वाग्राम के युद्ध मे बुरी तरह परास्त हुए। आस्ट्रिया के सम्राट् को अपनी पुत्री (Maria Lousia) का विवाह नेपोलियन के साथ करना पड़ा।

टिल्सिट की सन्धि से लेकर अब तक रूस और फ्रान्स में मित्रता थी। लेकिन आस्ट्रिया और नेपोलियन के वैवाहिक सम्बन्ध से जार क्रुद्ध हो गया। दोनों शक्तियों ने युद्ध की तैयारी की। नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण किया और बोर्डीना के युद्ध में रूसी सेना को परास्त किया। अन्त में सन् १८१२ ई० में नेपोलियन ने मास्को पर अधिकार कर लिया। रूस वालों ने राजधानी मे आग लगा दिया। इससे बाध्य होकर नेपोलियन को वापस लौटना पड़ा। सैनिकों को अकथनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नेपोलियन के रूसी आक्रमण ने फ्रान्स की सैनिक शक्ति को नष्ट कर दिया।

प्रशिया के फ्रेड्रिक विलियम तृतीय ने कलिस्च नामक स्थान पर रूस के साथ एक सन्धि किया। इस प्रकार प्रशिया और फ्रान्स में एक युद्ध आरम्भ हुआ। यद्यपि नेपोलियन ने विपक्षियों की सेना को ल्यूट्जेन और बाउट्जेन के युद्धों में हराया लेकिन वह अपने शत्रुओं के विरुद्ध अधिक सफल न हो सका। मेटर्निक की शर्तों को ठुकरा देने पर आस्ट्रिया भी इस युद्ध में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार यह युद्ध चलता रहा और नेपोलियन ने आस्ट्रिया वालों को ड्रेसडेन के युद्ध में परास्त किया। ड्रेसडेन की विजय नेपोलियन की अन्तिम विजय थी। सन् १८१३ ई० में बोनापार्ट की शत्रुओं ने उस पर लेपजिग के युद्ध में जो तीन दिन (अक्टूबर १६, १७, १८,) तक चलता रहा,

अपूर्व विजय पाया। संघ वालों ने शान्ति के लिए नेपोलियन के सामने कुछ शर्तें पेश किया लेकिन नेपोलियन बोनापार्ट उनको मानने के लिए तैयार न था। इसलिए उसके शत्रुओं ने फ्रान्स पर चारो ओर से आक्रमण किया और सन् १८१४ ई० में विवश होकर नेपोलियन को फ्रान्स छोड़कर एल्बा भाग जाना पड़ा।

नेपोलियन के भाग जाने के बाद अट्ठारहवाँ लुई फ्रान्स का राजा हुआ। पेरिस की पहली सन्धि से फ्रान्स की सीमा निर्धारित की गई। वियना में योरपीय मामलों का निपटारा करने के लिए एक कांग्रेस की बैठक हुई। लेकिन शीघ्र ही बटवारे के विषय को लेकर भिन्न-भिन्न देशों में झगड़ा होने लगा। फ्रान्स की जनता भी अट्ठारहवें लुई की प्रतीकारी नीति से असन्तुष्ट थी जिससे नेपोलियन को फ्रान्स पर एक बार फिर शासन करने का अवसर मिला।

सन् १८१५ ई० नेपोलियन अचानक एल्बा से निकल भागा और फ्रान्स में पदार्पण किया। यह समाचार पाते ही उसके शत्रुओं ने फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। नेपोलियन ने जर्मनी की सेना को लिगनी नामक स्थान पर हराया लेकिन सन् १८१५ई० में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की सेना को बुरी तरह परास्त किया। नेपोलियन पेरिस भाग गया और अमेरिका भागने के प्रयत्न में पकड़ा गया और बन्दी बना लिया गया। अंग्रेजों ने उसे सेन्ट हेलेना में कैद रखा जहाँ पर छः वर्ष बाद सन् १८२१ ई० उसकी मृत्यु हो गई।

नेपोलियन के पतन के कारण---(क) नेपोलियन की अभिलाषायें अपरिमित थी। वह अपने सामने किसी को समझता न था जिससे उसे अपने प्रतिद्वन्द्वियों की शक्ति का पूरा पूरा ज्ञान न था। वह विश्व-विजयी होना चाहता था जो उसकी भूल थी क्योंकि इससे उसे दुस्तर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। (ख) साम्राज्य की नींव कमजोर थी। वह शक्ति पर निर्भर थी और जिसे बोनापार्ट ने युद्ध और विजयों से बनाया था। (ग) फ्रान्स में निरंकुश राजतन्त्र था जिससे जनता में असन्तोष था। (घ) साम्राज्य की नींव एक ही व्यक्ति के द्वारा डाली गयी थी इसलिए साम्राज्य उसके जीवन और भाग्य पर निर्भर करती थी। भाग्य अत्यन्त अस्थिर है। अतः उसके पतन के साथ-साथ साम्राज्य का भी अन्त हो गया। (ङ) महाद्वीप नीति नेपोलियन की एक बहुत

बड़ी भूल थी। इससे व्यापार अस्तव्यस्त हो गया और चीजों का मूल्य कई गुना बढ़ गया। नेपोलियन की लोकप्रियता जाती रही। महाद्वीप नीति को बनाये रखने के लिए उसे आक्रमणात्मक नीति का अवलम्बन करना पड़ा जिससे उसके बहुत से शत्रु हो गये। (च) उसकी भूल अपने भाई जोसेफ को स्पेन की गद्दी पर बैठाना था। इस भूल से उसे स्पेन की जनता का सामना करना पड़ा। (छ) पोप के साथ नेपोलियन का व्यवहार सन्तोषजनक न था जिससे वह केथोलिकों की सहानुभूति से वंचित रहा। (ज) रूस पर की गयी आक्रमणों से फ्रान्स की सैनिक शक्ति नष्ट हो गई। (झ) वाटरलू के युद्ध में उसका भाग्य उसके विरुद्ध था।

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति और इंग्लैण्ड—पहले तो अंग्रेजों ने फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का स्वागत किया। बेस्टिली (Bastille) के नष्ट किये जाने पर इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री फाक्स (Fox) को अत्यन्त हर्ष हुआ लेकिन अंग्रेज विद्वान एडमन्ड बर्क का विचार इसके बिलकुल भिन्न था। वह सुधार का पक्षपाती था लेकिन किसी प्राचीन वस्तु को नष्ट नहीं करना चाहता था। उसका कहना था कि यदि प्राचीन संस्थायें नष्ट कर दी जायंगी तो देश में अराजकता और भ्रष्टाचार फैल जायगा। विलियम पिट ने प्रतीकारी नीति का अवलम्बन किया। इंग्लैण्ड में क्रान्तिकारी भावनाओं की प्रसार को रोकने के लिए उसने कई एक्ट (Alien Act, Sedition Act, Treason Act,) पास किया।

राज्यक्रान्ति के प्रथम तीन वर्ष तक इंग्लैण्ड तटस्थ रहा। लेकिन क्रान्तिकारियों की आक्रमणात्मक नीति से बाध्य होकर इंगलैण्ड को फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा। पिट ने फ्रान्स के विरुद्ध कई संघ बनाया लेकिन नेपोलियन की विजयों ने उसको छिन्न भिन्न कर दिया जिससे इंग्लैण्ड को कई बार अकेले ही युद्ध करना पड़ा। नील और ट्राफल्गार के युद्धों में इंग्लैण्ड ने फ्रान्स की जल-शक्ति को बिलकुल नष्ट कर दिया। द्वीप युद्ध में इंग्लैण्ड ने प्रमुख भाग लिया। वेलिंगटन की योग्यता और तत्परता ने फ्रान्सीसियों को स्पेन और पुर्तगाल से भगाया और नेपोलियन को वाटरलू के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। इस प्रकार इंग्लैण्ड नेपोलियन के पतन का एक मुख्य कारण था।

प्रश्नोत्तर

1. Form an estimate of the character and achievements of Napoleon Bonaparte.

(*Banaras*, 1947)

(देखिये पृष्ठ ११६-१२३)

2. "Napoleon was one of the greatest social reformers of the world." Amplify.

(*Calcutta*, 1925, 1921)

(देखिये-पृष्ठ ११७, ११८, ११९,)

3. What benefits did Napoleon's rule confer upon France ?

(*Nagpur* 1921)

(देखिये-प्रश्न २ का उत्तर)

4. Assess the contributions of (a) Britain (b) Prussia and (c) Russia towards [illegible] Napoleon.

(*Banaras* 1949)

(देखिये-पृष्ठ १२१, १२२, १२३,)

5. Examine the causes of Napoleon's downfall.

(*Calcutta* 1922. *Bana.* 1949)

(देखिये पृष्ठ १२३)

6. Give in brief the part played by England during the French Revolution.

(देखिये पृष्ठ १२१, १२१)

7. Write short notes on:—

(a) Code Napoleon (b) Continental system.

(देखिये पृष्ठ ११९, १२१)

सोलहवाँ पाठ

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के अनन्तर

वियना की कांग्रेस—नेपोलियन के पतन के बाद फ्रान्स की सीमा को निर्धारित करने की आवश्यकता जान पड़ी। अतः सन् १८१४ ई० के मई महीने में वियना नामक स्थान पर योरपीय शक्तियों की एक बैठक हुई जो वियना की कांग्रेस के नाम से प्रसिद्ध है। इस कांग्रेस का मुख्य कार्य नेपोलियन द्वारा नष्ट किये गये राज्यों का पुनः निर्माण करना था। सीमा निर्धारित करते समय कांग्रेस ने विशेषकर दो सिद्धान्तों को ध्यान में रखा—शक्ति संतुलन और वंशीय हित।

फ्रान्स—फ्रान्स की सीमा पूर्ववत बना दी गई और उसकी आक्रमण को रोकने के लिए उसकी सीमा पर शक्तिशाली राज्यों की स्थापना की गई।

हालैण्ड—बेल्जियम जो पहले आस्ट्रिया का एक भाग था हालैण्ड में मिला दिया गया ताकि फ्रान्स उत्तर की ओर आक्रमण कर सके।

सार्डीनिया—सार्डीनिया (Sardinia) को जनोवा मिला जिससे उसकी शक्ति काफी बढ़ गई।

स्वीडन—नार्वे (Norway) स्वीडन में मिला दिया गया।

स्वीट्जरलैण्ड—स्वीट्जरलैण्ड में तीन प्रान्त मिलाये गये और उसकी स्वतन्त्रता और स्थायी तटस्थता को स्वीकार कर लिया गया।

रूस—रूस को फिनलैण्ड जिसको उसने पिछले युद्धों में स्वीडन से जीता था और बेसाराबिया (Basarabia) जिसे उसने तुर्कों से छीना था, मिला। इसके अतिरिक्त उसे पोलैण्ड में वारसा का प्रान्त मिला।

आस्ट्रिया—आस्ट्रिया को बेल्जियम के बदले में विनिशिया और लाम्बार्डी इटली में मिले। बवेरिया से उसे टाइरोल (Tyrol) प्राप्त हुआ।

जर्मनी––जर्मनी में उन्तालीस राज्यों का एक संघ स्थापित किया गया। उसके कार्यों की देखभाल करने के लिए आस्ट्रिया की अध्यक्षता में एक संघीय राज्यपरिषद (Federal Diet) बनाया गया। जर्मनी के भिन्न-भिन्न राज्यों ने आपस में न लड़ने का वचन दिया और जर्मनी की रक्षा करने की शपथ ली। इस राज्यपरिषद् के सदस्य जनता की प्रतिनिधि नहीं होते थे बल्कि वे भिन्न-भिन्न राज्यों के द्वारा नियुक्त किये जाते थे।

इटली––इटली के प्रबन्ध में आस्ट्रिया का स्वार्थ था। आस्ट्रिया को स्वयं इटली के दो उपजाऊ प्रदेश––वेनिस और लाम्बार्डी मिले। पारमा, मोडेना, और टस्कनी के सिंहासनों पर आस्ट्रिया से सम्बन्धित शासक नियुक्त हुए। इस प्रकार इटली में आस्ट्रिया का प्रभुत्व स्थापित हो गया। पोप के राज्यों को पुनः स्थापित किया गया। नेपील्स फरडीनाण्ड को दिया गया और जनोवा को सार्डीनिया में मिला दिया गया।

इंग्लैण्ड––इंग्लैण्ड को योरप में माल्टा मिला। इसके अतिरिक्त उसे स्पेन से ट्रिनिडाड फ्रान्स से मारीशास और टोबागो (Tobago) और हालैण्ड से लंका और केप आफ गुड होप मिला। इस प्रकार इंग्लैण्ड योरप में एक प्रधान उपनिवेशिक शक्ति हो गई।

वियना की कांग्रेस की नीति वास्तव में प्रतीकारी थी। कांग्रेस का लक्ष्य केवल दो था––शक्ति संतुलन के सिद्धान्त को कायम रखना और वंशीय हित की रक्षा करना न तो जनता की हितों का और न उनके ऐतिहासिक रीति रिवाजों का ही ख्याल किया गया। इसके अतिरिक्त इस कांग्रेस ने राष्ट्रीयता की भावनाओं को मानने से अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार बेल्जियम और हालैण्ड जिनको धर्म और भाषा एक दूसरे से भिन्न थे मिला दिये गये। उसी प्रकार नार्वे जिसका सम्बन्ध डेनमार्क के साथ अधिक था स्वीडन में मिला दिया गया। इटली और जर्मनी एकता और राष्ट्रीय सरकार से वंचित रहे जो उस समय उनकी माँग थी। राज्यक्रान्ति ने राष्ट्रीय भावनाओं का बीज बोया जो दबायी नहीं जा सकती थी। सन् १८१५ ई० के बाद के इतिहास का मुख्य नियम राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति और प्रसार है। बेल्जियम

हालैण्ड से पृथक हो गया, इटली ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और जर्मनी में राज्यपरिषद् के स्थान पर एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई।

क्वाड्रीपुल एलायन्स—फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के समाप्त होने के बाद योरप में शान्ति स्थापित करने की आवश्यकता जान पड़ी। आस्ट्रिया का प्रधान मन्त्री मेटर्निक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए अधिक चिन्तित था। उसका कहना था कि योरप की शान्ति जनता के द्वारा नियुक्त की हुई केन्द्रीय न्यायालय से स्थापित नहीं हो सकती बल्कि उसके लिए भिन्न भिन्न देशों के शासकों की एक संघ की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः नवम्बर सन् १८१५ ई० में एक संघ बना जो (Quadruple Alliance) कहलाती है क्योंकि इसमें चार देश—आस्ट्रिया, रूस, प्रशिया और इंग्लैण्ड सम्मिलित थे। इन देशों ने समय समय पर मिलने और योरप की समस्यायों को सुलझाने का विचार किया। यह संघ सन् १८२२ ई० तक कायम रहा। उसके बाद इंग्लैण्ड संघ से अलग हो गया और उसके हटते ही संघ छिन्न भिन्न हो गया।

होली एलायन्स—रूस का जार अलेक्जेन्डर प्रथम क्वाड्रीपिल एलायन्स से एक कदम और आगे बढ़ा और सितम्बर सन् १८१५ ई० में रूस, आस्ट्रिया और प्रशिया का एक संघ बनाया जो होली एलायन्स के नाम से प्रसिद्ध है। इस संघ के सदस्य अपने परराष्ट्र और गृह-नीति में बाइबिल की उपदेशों को मानते थे। लेकिन वास्तव में ये स्वतन्त्रता की अन्दोलनों के दमन करते थे और जनता को अपने निरंकुश शासन के अधीन रहने के लिए विवश करते थे। आस्ट्रिया का प्रधान मन्त्री मेटर्निक इस संघ का सबसे प्रमुख सदस्य था। इंग्लैण्ड इस संघ में सम्मिलित नहीं हुआ।

मेटरनिक का प्रारम्भिक जीवन—मेटर्निक का जन्म १५ मई सन् १७७३ ई० में एक प्रतिष्ठित कुल में हुआ था। उसका पिता 'राइन' के राजनीति विभाग में काम करता था। अतः उसने भी अपने पिता के कार्य को पकड़ा। आस्ट्रिया का प्रधान धर्माधिकारी—प्रिन्स कानिट्ज (Prince Kaunitz) उससे विशेष आकर्षित हुआ और सन् १७९५ ई० में अपनी पुत्री से उसका विवाह कर दिया। इस वैवाहिक सम्बन्ध से उसे धन ही नहीं बल्कि अठारहवीं

शताब्दी का सबसे कुशल राजनीतिज्ञ होने का अवसर प्राप्त हुआ। उसकी उन्नति बराबर होती गई। ड्रेसडेन (1801) बर्लिन (1803) सेन्ट पिटर्सबर्ग (1805) और पेरिस (1806) में वह सम्राट का प्रतिनिधि था। सम्राट फ्रान्सिस प्रथम के शासन-काल में मेटर्निक आस्ट्रिया का प्रधान मन्त्री हो गया और चालीस वर्ष (१८०९-१८४९) तक इस पद पर आसीन रहा।

मेटर्निक की नीति—मेटर्निक अपने नीति में प्रजातन्त्र और राष्ट्रीयता का कट्टर शत्रु था। वह प्राचीन वस्तुओं को नष्ट नहीं करना चाहता था इसलिए उसने सभी सुधारों का जोरदार विरोध किया, स्वतन्त्रता के अन्दोलनों का दमन किया और स्वराज्य की मांगों को दबाया। पहले उसने अपनी नीति को आस्ट्रिया में अपनाया और उसके पश्चात् होली एलायन्स के द्वारा अन्य देशों में अपनाना चाहा।

आस्ट्रिया में उसने जासूसों की नियुक्ति की, प्रेसों पर प्रतिबन्ध लगाया और विश्वविद्यालयों को अपने अधिकार में किया। इस प्रकार उसने आस्ट्रिया में प्राचीन शासन-प्रणाली की रक्षा की।

नेपोलियन के युद्धों से जर्मन निवासियों में राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति हो गई थी। वियना की कांग्रेस से उन्हें एक संघ मिला जिसमें जनता के प्रतिनिधियों के स्थान पर राजाओं के प्रतिनिधि होते थे। जिससे स्वतन्त्र विचार वाले (Liberals) असन्तुष्ट हो गये थे। विश्वविद्यालय असन्तोष का मुख्य केन्द्र था। विद्यार्थियों ने प्रजातन्त्र और राष्ट्रीयता की भावनाओं को जीवित रखने के लिए एक संघ जो 'Bruchenschaft' कहलाता था, बनाया। इसी समय कोटजेब्यू रूसी जासूस के सन्देह में मारा गया। मेटर्निक ने इस उत्तेजना से लाभ उठाया और कार्ल्सबैड नामक स्थान पर राज्यों का एक कान्फ्रेन्स बुलाया जिसमें स्वतन्त्रता के अन्दोलनों के विरुद्ध दमन नीति का अवलम्बन किया गया। प्रेस पर प्रतिबन्ध लगाया गया। विश्वविद्यालयों को राज्य के अधीन रखा गया और विद्यार्थियों को दबाया गया।

नेपोलियन के पतन के बाद फरडीनाण्ड सप्तम स्पेन का राजा हुआ। उसने सन् १८१२ के विधान को नष्ट कर दिया। मठों का पुनर्निर्माण किया

गया और स्वदेश भक्तों को पीड़ा पहुँचाया गया। फरडीनाण्ड का प्रतीकार इतना असहनीय हो गया कि सन् १८२० में स्पेन के स्वदेश भक्तों ने पुनः विद्रोह किया और फरडीनाण्ड को शासन विधान स्थापित करने के लिए विवश किया।

वियना की कांग्रेस ने इटली को छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित किया था। वेनिस और लाम्बार्डी आस्ट्रिया को दे दिये गये थे। इटली में आस्ट्रिया का प्रभाव काफी था। मेटर्निक ने इटली में राष्ट्रीय भावनाओं का दमन किया जिससे कई राजनीतिक दल बन गये जिसमें कार्बोनारी दल प्रमुख था जिसका ध्येय इटली से आस्ट्रिया वालों को खदेड़ना और इटली की स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। इस प्रकार मेटर्निक की नीति आस्ट्रिया जर्मनी, स्पेन और इटली में सफल रही।

यूनान का स्वतन्त्र होना—यूनान की स्वतन्त्रता राष्ट्रीय भावनाओं की सफलता का प्रथम उदाहरण है। यूनान तुर्कों के अधीन था और नेपोलियन के युद्धों से उनमें राष्ट्रीय भावनाओं का विकास हो गया था। यूनानवालों ने सन् १८२१ ई० में अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह किया और कुछ समय तक उन्हें अकेले ही लड़ना पड़ा। सन् १८२१ ई० के जब मेटर्निक और अलेक्जेन्डर प्रथम लेबाच की अन्तर-राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग ले रहे थे, मोल्डाविया के यूनानी गवर्नर प्रिन्स अलेक्जेन्डर सिलान्टी ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया। और रूस से सहायता की आशा करने लगा। यह समाचार पाते ही मेटर्निक ने रूस के जार को प्रतिनिधि मण्डल भेजा। प्रिन्स अलेक्जेन्डर सिलान्टी पदच्युत कर दिया गया और तुर्कों ने मोल्डाविया के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया।

लेकिन इससे यूनान के स्वतन्त्र विद्रोह का अन्त न हुआ। यह केवल असामयिक प्रयत्न था। रिगास और कोरेज जैसे यूनानी स्वदेश भक्तों की उत्तेजनाओं का प्रभाव दिन प्रति दिन बढ़ता गया और क्रान्तिकारी दलों के सदस्यों की संख्या में बराबर वृद्धि होती गई। यूनान और इजीन के द्वीप में विद्रोह हुआ। तुर्कों ने विद्रोहियों से क्रूरतापूर्वक बदला लिया। कुस्तुनतुनिया

का पादड़ी मार डाला गया। मैकेडोनिया और एशिया माइनर में एक बड़े पैमाने पर कत्लआम की आज्ञा दी गई। दुराग्रही मेटर्निक ने यूनानियों की सहायता नहीं की। उसके विचार में वे क्रान्तिकारी थे और अपने न्याययुक्त शासकों के विरुद्ध विद्रोह किया था।

मेटर्निक की प्रतिकारी नीति के प्रभाव से योरपीय शक्तियाँ यूनानियों की सहायता न कर सकीं। वे इस स्वतन्त्रता के आन्दोलन को क्रान्तिकारी आन्दोलन समझते थे। इंग्लैण्ड में लोगों का विचार भिन्न था। टोरी सरकार इसमें रूस का हाथ समझता था। यद्यपि योरपीय देशों ने यूनानियों के प्रति सहानुभूति नहीं दिखलाई लेकिन योरपीय जनता ने बड़े उत्साह के साथ यूनानियों की सहायता की और हेलेनिक सभ्यता की रक्षा के लिए उनकी सेना में भर्ती हो गये। यूनानी लोग अपने विदेशी शासकों के विरुद्ध पाँच वर्ष तक दृढ़तापूर्वक लड़ते रहे। अन्त में तुर्की सुल्तान को अपनी रक्षा के लिए इब्राहीम पाशा को जो मिश्र के मेहेमेत अली का बेटा था, बुलाना पड़ा। इब्राहीम पाशा तीन वर्ष तक योग्यता और क्रूरता से लड़ता रहा। उसने बड़ी सरलता से यूनानियों को हराया और देश को उजाड़ कर दिया।

यूनानियों का आन्दोलन लगभग पूर्णरूप से कुचल दिया गया था कि योरपीय शक्तियों ने यूनानियों का पक्ष लेकर इस युद्ध में भाग लिया। इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री कैनिंग ने रूस और फ्रान्स को इंग्लैण्ड के साथ मिलकर यूनानियों का पक्ष लेकर मध्यस्थता करने के लिए उसकाया। सन् १८२७ ई० में इंग्लैण्ड, फ्रान्स और रूस के प्रतिनिधियों ने लन्दन की सन्धि पर हस्ताक्षर किया और यह निश्चित किया गया कि तुर्की के आधीनस्थ यूनान को एक स्वतन्त्र राज्य मान लेने के लिए तुर्की सुल्तान से माँग की जाय। तुर्की सुल्तान ने इस माँग को अस्वीकार कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि अक्टूबर में तीनों देशों की संयुक्त जहाजी बेड़े को नेवारिनो के युद्ध में बिलकुल नष्ट कर दिया। वास्तव में इस युद्ध से यूनानियों की स्वतन्त्रता निश्चित हो गई। नेवारिनो के युद्ध के पश्चात् इंग्लैण्ड ने इस युद्ध से हाथ खींच लिया। अतः रूस ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और डेन्यूब नदी के प्रान्तों पर आक्रमण किया। सन् १८२९ ई० में तुर्की सुल्तान

९

को एड्रीयानोपिल की सन्धि पर हस्ताक्षर करना पड़ा जिसके अनुसार यूनान की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली गई और सर्विया, मोल्डाविया और वालाचिया के गवर्नर ईसाई होने लगे। लन्दन में एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फरेन्स हुई जिसमें यौरोपीय शक्तियों ने यूनान की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया। बवेरिया का प्रिन्स ओटो स्वतन्त्र यूनान का पहला राजा हुआ।

सन् १८३० ई० का राज्यक्रान्तियाँ—अठारवें लुई की मृत्यु के बाद चार्ल्स दशम फ्रान्स का राजा हुआ। वह स्वतन्त्रता का विरोधी था और स्वेच्छाचारी शासन में विश्वास करता था। उसके शासन काल में नोबुलों की क्षति को जो फ्रान्स की राज्यक्रान्ति से हुई थी पूरा करने के लिए एक बड़ी रकम स्वीकार की गई। व्यवस्थापिका सभा ने इसका विरोध किया और इसलिए वह भंग कर दी गई। प्रतिकारी मन्त्री पोलिगनाक के कहने पर चार्ल्स दशम ने चार नियम पास किया जिसके अनुसार प्रेसों की स्वतन्त्रता छीन ली गई, व्यवस्थापिका सभा को भङ्ग कर दिया गया, वोटरों की संख्या में कमी की गई और वोट देने की प्रथा में परिवर्तन किया गया।

इन नियमों के पास होने का समाचार पाते ही पेरिस की जनता ने जुलाई महीने में विद्रोह कर दिया। राजधानी पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। चार्ल्स दशम भागा। जनता ने उसके पोते लुई फिलिप को अपना राजा बनाया और "फ्रान्सीसियों का राजा" की उपाधि दी। धार्मिक स्वतन्त्रता, समानता और प्रेसों की स्वतन्त्रता फिर से स्थापित की गई।

इस जुलाई राज्यक्रान्ति का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। सन् १८१४-१५ ई० में बेल्जियम बलपूर्वक हालैण्ड में मिला दिया गया था जो बेल्जियम वालों को अप्रिय था। उनके असन्तोष की लहर और भी धधक उठी जब हालैण्ड की भाषा को राष्ट्रीय भाषा का रूप दिया गया। बेल्जियम वालों ने विद्रोह कर दिया। लन्दन में एक कान्फरेन्स हुई जिसमें बेल्जियम को एक स्वतन्त्र देश मान लिया गया। सन् १८३१ ई० में स्वतन्त्र बेल्जियम राज्य की स्थापना हुई और ल्यूपाल्ड (Leopold of Saxe Coburg) उसका राजा हुआ।

जैसा कि आगे बतलाया जा चुका है अठारहवीं शताब्दी में रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया ने पोलैण्ड राज्य को आपस में बाँट लिया था। लेकिन वियना

की कांग्रेस ने प्राचीन पोलैण्ड राज्य की पुनः स्थापना की और उसको रूस के कुछ नियन्त्रणों में रखा। यह पोलैण्ड के स्वदेश भक्तों के लिए पर्याप्त न था। सन् १८२५ ई० में जब निकोलस प्रथम अपने भाई अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद रूस का राजा हुआ पोलैण्ड की स्थित अत्यन्त शोचनीय हो गई। जार स्वेच्छाचारी शासक था। सर्व प्रथम वारसाव में विद्रोह हुआ। पोलैण्ड के निवासियों ने एक वर्ष तक रूस का सामना किया लेकिन योग्य नेताओं और एकता के अभाव में विद्रोहियों को निवासियों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। निकोलस प्रथम ने .पोलैण्ड को उनके जातित्व से वंचित कर दिया। पोलैण्ड रूस का एक प्रान्त हो गया।

जुलाई राज्यक्रान्ति का प्रभाव जर्मनी पर भी पड़ा। जर्मनी के छोटे छोटे राज्यों में जनता के विद्रोह हुए। जिसके फलस्वरूप उत्तरी जर्मनी के छोटे-छोटे राज्यों को अपने शासकों से (Liberal Constitutions) प्राप्त हुआ। मेटर्निक की अध्यक्षता में वियना की कांग्रेस की बैठक हुई जिसमें प्रेस और विश्वविद्यालयों के विरुद्ध कठोर नीति का अवलम्बन करने का निश्चय किया गया।

इटली भी जुलाई राज्यक्रान्ति के प्रभाव से वंचित न रहा। पार्मा, मोडेना और पोप के कुछ राज्यों में विद्रोह हुआ लेकिन वे दबा दिये गये। सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति ने केवल आस्ट्रिया के प्रति इटली वालों में घृणा और ईर्ष्या पैदा कर दी।

सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति के कुछ ही वर्ष पश्चात् उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर स्पेन और पुर्तगाल में शासन विधान स्थापित किये गये। इसाबेला और डान कार्लोस स्पेन के सिंहासन के लिए झगड़ रहे थे। अन्त में डान कार्लोस की हार हुई। पुर्तगाल में भी यही बात थी। डोना मेरिया और डान मिग्वेल सिंहासन के लिए लड़ रहे थे। इंग्लैण्ड और फ्रान्स ने डोना मेरिया (Donna Maria) का पक्ष लिया। डान मिग्वेल हार गया और उसे राज्य छोड़ना पड़ा।

योरप के इतिहास में फ्रान्स की जुलाई राज्यक्रान्ति का विशेष महत्त्व है। इस राज्यक्रान्ति के फलस्वरूप बेल्जियम को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, फ्रान्स में

नियमानुमोदत शासन (Constitutional Government) की नींव डाली गई और इग्लैंएड में पार्लियामेन्ट सुधार हुआ। इसके द्वारा स्वतन्त्रता और राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों को स्वीकार किया गया। होली एलायन्स की दमन नीति असफल रही और मेटर्निक स्वतन्त्रता के आन्दोलनों को कुचलने में विफल रहा।

सन् १८४८ की राज्यक्रान्तियाँ—इस राज्यक्रान्ति के कई कारण थे। (क) लुई फिलिप का शासन मध्यम वर्ग का शासन था क्योंकि मध्यमवर्ग के साथ उसकी विशेष सहानुभूति थी। यह अन्य वर्गों के लिए असहनीय था। (ख) समाजवाद की उन्नति से मिल मालिकों और मजदूरों में झगड़े होने लगे थे। लुई फिलिप मिल मालिकों का पक्ष लेता था जिससे मजदूर जिनकी संख्या फ्रान्स में अधिक थी फिलिप से असन्तुष्ट हो गये। (ग) फिलिप की परराष्ट्र नीति स्वतन्त्रता और स्वीकृति देने की नीति थी जो फ्रान्सीसीयों को अप्रिय थी। लुई ने बेल्जियम के मामलों में इंग्लैंएड का साथ दिया था। लेकिन पोलैंएड और इटली के स्वदेश भक्तों को जिन्होंने स्वराज्य के लिए लड़ाइयाँ लड़ी थी सहायता न दी। (घ) सन् १८४८ ई० की राज्यक्रान्ति का मुख्य और अन्तिम कारण पौरजन के अधिकार में विस्तार न करना था। वोट देने की योग्यता अधिक ऊँची होने के कारण फ्रान्स की अधिकांश जनता इस अधिकार से वंचित थी। ग्यूजाट (Guizot) ने जो सन् १८४८ ई० में फ्रान्स का प्रधान मन्त्री था सुधार के प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

लुई फिलिप ने फ्रान्स की जनता को सन्तुष्ट करने के लिए ग्यूजाट को पदच्युत कर दिया। इसका कोई विशेष प्रभाव न पड़ा और देश के कोने कोने में दंगे होने लगे। लुई को फ्रान्स के सिंहासन को त्याग कर इंग्लैंएड भाग जाना पड़ा। फ्रान्स की जनता ने जो राजतन्त्र से असन्तुष्ट थी फ्रान्स में द्वितीय बार प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया।

सन् १८४८ ई० की फ्रान्स की राज्यक्रान्ति एक व्यापक आन्दोलन का चिन्ह था। जर्मनी में राष्ट्रीयता एकता और वैधानिक स्वतन्त्रता (Consitutional Liberty) के लिए युद्ध चल रहा था। बेडेन में विद्रोह हुआ और स्वतन्त्र विचार वालों (Liberals) ने प्रेसों की स्वतन्त्रता और नियमानु-

मोदित शासन की मांग की। सेक्सोनी, हनोवर, बवेरिया, और प्रशिया को छोड़कर अन्य सभी राज्यों ने इन मांगों को स्वीकार किया। इसी समय बर्लिन और वियना में विद्रोह हुआ जिससे भयभीत होकर फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ को प्रशिया के लिए एक (Liberal Constitution) स्वीकार करना पड़ा। प्रशिया के उदाहरण को सेक्सोनी, हनोवर और बवेरिया ने अपनाया। सन् १८४८ ई० में फ्रान्क फर्ट नामक स्थान पर जर्मन पार्लियामेन्ट की बैठक हुई जिसका मुख्य उद्देश्य संयुक्त जर्मनी के लिए एक शासन विधान तैयार करना था। इस नये शासन-विधान के अनुसार फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ को जर्मनी का राजा बनाया गया। लेकिन फ्रेड्रिक ने इसे अस्वीकार कर दिया। उसकी देखा देखी अधिकांश राज्यों ने भी शासन विधान को अस्वीकार कर दिया। स्वतन्त्र विचार वालों ने उत्तेजित होकर विद्रोह किया। लेकिन वे प्रशिया की सहायता से दबा दिये गये। इन सफलताओं से लाभ उठाकर फ्रेड्रिक ने जर्मनी की राज्य परिषद् को भङ्ग कर दिया और अपनी अध्यक्षता में एक पार्लियामेन्ट नियुक्त किया। जिसका उद्देश्य जर्मनी से आस्ट्रिया को निकालना था। आस्ट्रिया ने जर्मनी छोड़ना अस्वीकार कर दिया और ओलम्यूट्ज की संधि सम्मति से फ्रेड्रिक को अपनी योजनाओं को त्यागना पड़ा।

आस्ट्रिया में भी विद्रोह हुआ। मेटर्निक इंग्लैण्ड भाग गया। और फरडीनाण्ड प्रथम को एक (Liberal Constitution) स्वीकार करना पड़ा। वियना के साथ साथ बोहेमिया, हंगरी, मीलन और वेनिस में भी विद्रोह हुआ। रूस की सहायता से बोहेमिया और हंगरी के आन्दोलन दबा दिये गये।

इटली में लाम्बार्डी और वेनिस ने विद्रोह कर दिए। सार्डीनिया और पेडमान्ट का राजा चार्ल्स एलबर्ट इन आन्दोलनों का नेतृत्व कर रहा था। विदेशी सहायता न मिलने के कारण वह कस्टोजा और नोवारा के युद्धों में हार गया। उसके पुत्र विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय ने आस्ट्रिया से सन्धि कर ली जिससे स्वतन्त्रता के आन्दोलनों का अन्त हुआ।

पहले तो रोम का पोप पायस नवम (Pope Pius IX) ने इन आन्दोलनों के प्रति सहानुभूति दिखलाया लेकिन जब आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली की सहायता करने के लिए कहा गया तो पोप ने इन्कार कर दिया। रोम में विद्रोह

कर दिया, पोप भाग गया और रोम में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई। पोप के निकास से केथोलिक संसार में भय पैदा हो गया और लुई नेपोलियन ने केथोलिकों की सहानुभूति प्राप्त करने के विचार से पोप का पक्ष लिया और रोम का विद्रोह दबा दिया गया।

इस प्रकार सन् १८४८ ई० की अधिकांश राज्यक्रान्तियाँ विफल रहीं।

सन् १८३० और सन् १८४८ ई० की राज्यक्रान्तियाँ, एक तुलनात्मक दृष्टि—सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति फ्रान्स के चार्ल्स दशम् की प्रतिकारी नीति का विरोध था। इसका मुख्य ध्येय नियमानुमोदित शासन प्राप्त करना था। यह वास्तव में लोकतन्त्रवादी न था और न इसका लक्ष्य राजतन्त्र की ही ओर था। यह राज्यक्रान्ति स्वैराधि राज्य का अन्त करना चाहती थी।

सन् १८४८ की राज्यक्रान्ति एक लोकतन्त्रवादी आन्दोलन था। और इस पर समाजवाद का पूरा प्रभाव पड़ा था। इसके राजनीतिक और आर्थिक कारण भी थे। जनता पौरजन के अधिकार में विस्तार चाहती थी और समाजवादी लोग समाज का पुनः संगठन करना चाहते थे इस प्रकार दोनों राज्यक्रान्तिओं का लक्ष्य भिन्न था।

परिणाम में दोनों राज्यक्रान्तियाँ लगभग समान थीं। दोनों राज्यक्रान्तियाँ असफल रहीं। सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति से केवल बेल्जियम को स्वतन्त्रता मिली लेकिन यह भी विदेशी राज्यों के हस्तक्षेप से प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सन् १८४८ ई० की राज्यक्रान्ति भी अधिक सफल न हुई। केवल प्रशिया और सर्डीनिया को ही अपने शासकों से (Liberal constitutions.) प्राप्त हुए।

मेटर्निक के पतन के कारण—मेटर्निक पुरानी पद्धति में परिवर्तन करना नहीं चाहता था और साथ ही साथ निरंकुश शासन का कट्टर पक्षपाती था। उसकी नीति उस समय की स्थिति के बिलकुल प्रतिकूल थी। राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार हो रहा था। जनता में स्वदेश भक्ति की निष्ठा अधिक थी और विदेशी शासकों के अधीन रहना उन्हें असह्य था। समाजवाद की भी उन्नति तेजी के साथ हो रही थी। नियमानुमोदित शासन ही उस समय की

माँग थी। इसकी आवश्यकता को जनता ही नहीं बल्कि शासकगण भी अनुभव करने लग गये थे। ऐसी स्थिति में मेटार्निक का पतन होना अवश्यम्भावी था।

प्रश्नोत्तर

1. Describe and criticise the political settlement effected by the Congress of Vienna (1814-15). How far were the settlements permanent ? *(Cal—1920-1922)*

(देखिये—पृष्ठ १२६, १२७)

2. What were the aims and objects of Prince Metternich ? How far was he successful ?

(देखिये—पृष्ठ १२६, १३०)

3. Give a brief account of Metternich's European policy from the Congress of Vienna to his fall. *(Banaras 1947)*

(देखिये—पृष्ठ १२६, १३७)

4. Trace the steps by which the Greeks won the independence ? *(Banaras 1947)*

(देखिये—पृष्ठ १३०, १३१, १३२)

5. What were the repercussions of the Greek War of Independence ? *(Banaras 1950)*

(देखिये—प्रश्न ४ का उत्तर)

6. Estimate the importance of the July Revolution of 1830 on the history of Europe. *(Cal. 1923)*

(देखिये—पृष्ठ १३२, १३३, १३४)

7. Why is the year 1848 called 'a year of miracles ? *(Banaras 1948)*

(देखिये—पृष्ठ १३५, १३६, १३७)

8. Estimate the importance of the Paris Revolution of 1848 on the history of Europe. *(Calcutta 1924)*

(देखिये—प्रश्न ७ का उत्तर)

9. Compare and contrast the Revolution of 1848 with those of 1830. *(Calcutta 1919, 1924)*

(देखिये—पृष्ठ १३६)

10. Account for failure of Prince Metternich.

(देखिये पृष्ठ १३७)

सत्तरहवां पाठ

फ्रान्स में द्वितीय राज्य

(Second Empire in France)

फ्रान्स में द्वितीय प्रजातन्त्र का अन्त और द्वितीय साम्राज्य की स्थापना—लुई फिलिप के पदत्याग के बाद स्थापित की हुई असामयिक सरकार में समाजवादियों की बहुतायत थी। यद्यपि लोकतन्त्रवादियों ने समाजवादियों की योजनाओं का जोरदार विरोध किया लेकिन अन्त में उन्हें स्वीकार करना पड़ा। समाजवादियों ने एक "राष्ट्रीय कारखाना" ("National Workshop") खोला जहाँ पर बेकार लोगों को काम दिया जाता था।

असामयिक सरकार एक अल्पकालीन संस्था थी। कुछ ही समय पश्चात् निर्वाचन हुआ और नये प्रजातन्त्र राज्य के निर्माण के लिए एक राष्ट्रीय सभा बनाई गई। लोकतन्त्रवादियों की अधिकता होने के कारण इस सभा ने पांच (anti-socialists) की एक कार्यकारिणी सभा बनाई। समाजवादी अधिकार से वंचित हो गये और "राष्ट्रीय कारखाना" नष्ट कर दिया गया। इन सब कार्यों से कई स्थानों पर दंगे हुए।

राष्ट्रीय सभा ने इसके पश्चात् लोकतन्त्रवादी शासन विधान की रचना करनी आरम्भ की। राज्य का प्रधान अध्यक्ष होता था जो जनता के द्वारा चार वर्ष के लिए चुना जाता था। अध्यक्ष के निर्वाचन में नेपोलियन बोनापार्ट का भतीजा लुई नेपोलियन बहुसंख्यक वोटों से चुना गया। उसके विजय का मुख्य कारण उसके चचा की प्रतिष्ठा थी।

यद्यपि लुई ने प्रजातन्त्र के प्रति राजभक्ति की शपथ खाई लेकिन वह राजतन्त्र की पुनः स्थापना करना चाहता था। वह अच्छी तरह से जानता था कि फ्रान्स के द्वितीय प्रजातन्त्र की नींव कमजोर है। अतः वह अपने प्रभुत्व के लिए प्रयत्न करने लगा। उसने मेजिनी और गैरीबाल्डी

से पोप की रक्षा की जिससे उसे केथोलिकों की सहानभूति प्राप्त हुई। सन् १८५२ में वह फ्रान्स का सम्राट हो गया।

नेपोलियन तृतीय—नेपोलियन तृतीय या लुई नेपोलियन हालैंण्ड के राजा लुई बोनापार्ट का पुत्र और नेपोलियन बोनापर्ट का भतीजा था। आठ वर्ष की अवस्था में (१८१६) वह फ्रान्स में बन्दी बना लिया गया और उसने अपने जीवन के अधिकांश भाग को स्वीटजरलैण्ड, इटली और जर्मनी में व्यतीत किया। सन् १८३१ ई० में वह इटली के राजनीतिक दल में सम्मिलित हुआ और लुई फिलिप के शासक काल में फ्रान्स के सिंहासन पर अधिकार करने के लिए दो (१८३६ और १८४०) असामयिक प्रयत्न किए। सन् १८४८ ई० की राज्यक्रान्ति के बाद जब लुई फिलिप ने पद त्याग किया और प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई लुई नेपोलियन राष्ट्रीय सभा का सदस्य निर्वाचित हुआ और कुछ ही माह पश्चात् प्रजातन्त्र का अध्यक्ष हो गया। चार वर्ष बाद सन् १८५२ ई० में वह फ्रान्स का सम्राट घोषित हुआ और सन् १८७१ ई० तक राज्य करता रहा।

नेपोलियन तृतीय के उद्देश्य—नेपोलियन तृतीय इस बात को भली-भाँति जानता था कि उसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण उसके चाचा की प्रतिष्ठा है। अतः वह अपने चचा की नीति को अपनाना चाहता था जिसका मुख्य उद्देश्य एक शक्तिशाली और योग्य सरकार की स्थापना करना और विदेशों में राष्ट्रीय गौरव को प्राप्त करना था।

नेपोलियन तृतीय की गृह नीति—नेपोलियन तृतीय अपनी गृह-नीति में अपने को प्रधान बनाना चाहता था। इसलिए उसने दमन नीति का अवलम्बन किया। उसने लोकतन्त्रवादियों का दमन किया। समाजवादी उत्तेजना को दबाया, प्रेसों पर नियन्त्रण लगाया और गुप्तचरों की नियुक्ति की। दूसरी ओर वह जनता की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था। फलतः जनता की भौतिक उन्नति के लिए उसने उद्योग धन्धों, वाणिज्य और बैंकिंग को प्रोत्साहन दिया। स्वतन्त्र व्यापार की नीति को अपना कर उसने पूँजीपतियों और व्यापारियों की सहायतायें की। मजदूरों की हितों की रक्षा के लिए उसने भरसक

प्रयत्न किया। उसने पेरिस को सजाया और दरबार की शान-शौकत को पुनः आरम्भ किया। उसके इन कार्यों से जनता का असन्तोष कम हो गया और वह जनता का लोकप्रिय बन गया।

नेपोलियन तृतीय की परराष्ट्र नीति— नेपोलियन अपनी परराष्ट्र नीति में फ्रान्स को एक महान् शक्ति बनाना चाहता था। इसलिए उसने चार युद्धों में भाग लिया। सर्व प्रथम उसने क्रीमिया युद्ध (Crimean war) में इंगलैण्ड का साथ दिया और उसे यह अपने ही राजधानी में पेरिस की सन्धि (Peace of Paris) करने का गौरव प्राप्त हुआ। यद्यपि इस युद्ध से फ्रान्स को लाभ कम हुआ लेकिन उससे फ्रान्स का मान बढ़ गया जो नेपोलियन चाहता था। इसके बाद उसने इटली की ओर ध्यान दिया और आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली के स्वदेश भक्तों की सहायता की। सबसे पहले उसे मैक्सिको में हार खानी पड़ी। वह मैक्सिको में आस्ट्रिया के सम्राट मैक्सिमिलियन के अधीन एक राज्य स्थापित करना चाहता था। वह असफल रहा और फ्रान्सीसी सेना को मैक्सिको छोड़ना पड़ा। उसका अन्तिम युद्ध प्रशिया के विरुद्ध था। इस युद्ध (Franco Prussian war) में वह बुरी तरह परास्त हुआ और सेडान (Sedan) नामक स्थान पर बन्दी बना लिया गया। उसके पतन के साथ साथ साम्राज्य का भी पतन हो गया।

नेपोलियन तृतीय के पतन के कारण—नेपोलियन तृतीय वास्तव में एक योग्य शासक था। लेकिन उसकी योग्यता दूसरे की नीति को अपनाने में थी। वह अपने चचा नेपोलियन बोनापार्ट की नीति का अनुकरण करना चाहता था। लेकिन उसमें अपने चचा की कल्पना बुद्धि, सैनिक योग्यता और अच्छे साधनों को चुनने की शक्ति न थी। नेपोलियन बोनापार्ट अपनी योग्यता, परिश्रम और विजयों के कारण फ्रान्स का सम्राट हुआ था लेकिन नेपोलियन तृतीय विश्वासघात से इस पद पर आरूढ़ हुआ था। उसके पतन का दूसरा कारण उसका पक्षपात था। वह समाजवादियों का नेता था और समाजवादियों के हित का ही ख्याल रखता था इसलिए वह अन्य दलों की सहानुभूति से वंचित रहा। तीसरा कारण प्रशिया के विरुद्ध युद्ध था। अभाग्यवश उसे बिस्मार्क (Bismarck) जैसे कुशल राजनीतिज्ञ से सामना करना पड़ा। इन

सब कारणों से यदि नेपोलियन तृतीय को "नेपोलियन छोटा" ("Napoleon the Little") कहा जाय तो अनुचित न होगा।

प्रश्नोत्तर

1. Account for the impermanence of second republic in France.

(देखिये-पृष्ठ १३९)

2. Estimate the home and foreign policy of Napoleon III.

(देखिये-पृष्ठ १४०, १४१)

3. What were the chief difficulties of Napoleon III's position as Empieror of the French and into which blunders did they lead him during the second decade of his reign?

(*Banaras* 1947)

(देखिये-प्रश्न २ का उत्तर)

4. What were the causes of the failure of Napoleon III?

(देखिये-पृष्ठ १४१)

5. Account for the impermanence of second empire in France.

(देखिये-पृष्ठ १४१)

अठारहवाँ पाठ

इटली का एकीकरण

Unification of Italy

इटली की स्थिति—पिछले पाठों के पढ़ने से यह पता लग गया होगा कि इटली किस प्रकार अस्वाभाविक रूप से विभाजित था। वर्तमान युग के प्रारम्भ से ही इटली भिन्न भिन्न देशों का युद्ध स्थल रहा है। इटली, छोटे छोटे राज्यों में विभक्त था जिसमें जाति, धर्म और संस्कृति की एकता का अभाव था। एकता और स्वतन्त्रता के अभाव में वह विदेशी राज्यों का शिकार बन गया।

इटली और फ्रान्स की राज्यक्रान्ति—गुलाम और विभाजित इटली में फ्रान्स की राज्यक्रान्ति ने एक नया जीवन और आशा पैदा कर दी। इस क्रान्ति ने इटली के निवासियों में स्वराज्य और स्वतन्त्रता की भावनायें उत्पन्न कर दीं और उन्होंने नेपोलियन बोनापार्ट का मुक्तदाता के रूप में स्वागत किया। आस्ट्रिया वालों को खदेड़ने में उन्होंने एक दूसरे का साथ दिया था। यद्यपि इस राज्यक्रान्ति से केवल शासकों में परिवर्तन हुआ आस्ट्रिया के स्थान पर फ्रान्स शासक हो गया लेकिन यह राज्यक्रान्ति इटली वालों के लिए अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई। अल्पकाल के लिए ये छोटे छोटे राज्य नष्ट हो गये और उनके साथ साथ आपसी मतभेद और ईर्ष्या का भी अन्त हो गया। इस प्रकार इटली वालों को सर्वप्रथम राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय संगठन की शिक्षा मिली।

इटली और वियना की कांग्रेस—नेपोलियन के पतन के बाद इटली में पहले की स्थिति फिर से स्थापित की गई। "यथार्थता" ("Legitimacy") के सिद्धान्त से प्रभावित वियना की कांग्रेस की प्रतिकारी नीति ने योरप में राज्य-क्रान्ति के पहले की स्थिति फिर से स्थापित करनी चाही। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि इटली एक कठोर और कलङ्कित दासत्व में बाँध दिया गया। वेनिस और लाम्बर्डी आस्ट्रिया को दिए गए, नेपिल्स बूर्बों शासकों को

मिला और मोडेना, टस्कनी, पार्मा, और ल्यूका हाब्सबर्ग वंश को मिला। इस प्रबन्ध से इटली में आस्ट्रिया का प्रभाव बढ़ गया। इस प्रकार इटली छोटे छोटे राज्यों का समूह बन गया।

इटली और राजनीतिक दल—इटली तीन राजनीतिक दलों में विभाजित था। पहला दल, मेजिनी और उसके समर्थकों का था जो इटली में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना चाहते थे क्योंकि उनका कहना था कि स्वतन्त्रता की उन्नति प्रजातन्त्र को छोड़कर अन्य किसी सरकार में शीघ्र नहीं हो सकती। दूसरा दल (The new gulf party) केथोलिकों का था जो पोप पायस नवम् (Pope Pius IX) की अध्यक्षता में एक संघ स्थापित करना चाहते थे। तीसरा दल राज्यपक्षावलम्बियों का था और जिसका प्रमुख नेता पेडमान्ट का प्रधान मन्त्री कवूर था। वे पेडमान्ट के राजकीय वंश के अधीन इटली में राजतन्त्र की स्थापना करना चाहते थे। गेरीबाल्डी जो सिसिली के युद्धों का अन्य वीर था पहले लोकतन्त्रवादी था। लेकिन बाद में कवूर के प्रभाव से राज्यपक्षावलम्बी हो गया।

इस प्रकार इटली के स्वतन्त्र आन्दोलन के चार प्रधान नेता थे, मेजिनी, कवूर, गेरीबाल्डी, विकटर एमेन्यूअल, द्वितीय।

इटली और सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति—इटली दश वर्ष तक आस्ट्रिया के अधीन रहा। सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति ने सम्पूर्ण इटली में उत्तेजना फैला दी। लेकिन आस्ट्रिया की सेना की उपस्थिति से विद्रोह दब गया और थोड़े समय के लिए राष्ट्रीय एकता और स्वतन्त्रता की आशा जाती रही।

इटली और जोसेफ मेजिनी—आन्दोलनों की असफलता से विद्वानों को विश्वास होने लगा कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए उदारमत की अत्यन्त आवश्यकता है। इस उदारमत के अभाव को मेजिनी ने पूरा किया और उसकी स्वार्थहीन स्वदेशभक्ति ने इटली के राष्ट्रीय आन्दोलनों में एक उत्साह पैदा कर दिया।

मेजिनी का जन्म सन् १८०५ ई० में हुआ था। बड़े होने पर वह कार्बोनारी दल (Carbonari Party) का एक सदस्य हो गया। सदस्य के रूप में वह पकड़ा गया और पेडमान्ट में बन्दी बना लिया गया। मुक्त होने पर उसने एक राजनीतिक दल की नींव डाली जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय और लोकतन्त्रवादी भावनाओं का प्रसार करना था। उसका कहना था कि इटली की स्वतन्त्रता शिक्षा और शक्ति से प्राप्त करना चाहिए। राज्यक्रान्ति की सफलता के लिए विधोन्नति की अत्यन्त आवश्यकता है। इटली के इतिहास में जोसेफ मेजिनी का एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि वह इटली की स्वतन्त्रता को करणीय आदर्श समझता था। उसने सफलतापूर्वक इस मत को दूसरों तक पहुँचाया और स्वदेशभक्ति की भावना को जीवित रखा।

चार्ल्स एलबर्ट और सन् १८४८ ई० की राज्यक्रान्ति—पेरिस की राज्यक्रान्ति से इटली में महत्वपूर्ण परिणाम हुआ। सम्पूर्ण द्वीप ने विद्रोह कर दिया। सार्डीनिया के राजा चार्ल्स एलबर्ट ने इन आन्दोलनों का नेतृत्व ग्रहण किया। यह आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली का पहला युद्ध था लेकिन आस्ट्रिया वालों ने सार्डीनिया की की सेना को कस्टोजा और नोवारा के युद्धों में परास्त किया। दुःखित होकर चार्ल्स एलबर्ट ने अपने पुत्र विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय के लिए पद त्याग कर दिया।

विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय—चार्ल्स एलबर्ट ने अपना जनता को एक Liberal constitution स्वीकार किया था। आस्ट्रिया ने उसको भंग करने के लिए आज्ञा दी। विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय ने साफ इन्कार कर दिया। इस प्रकार पेडमान्ट ही इटली में एक ऐसा राज्य था जिसके पास एक (Liberal constitution) था। इस कारण से वह निरंकुशता के मरुनदेश में एक शाद्वल (Oasis) बन गया था। इटली के स्वदेशभक्तों को केवल एक आशा थी और वह विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय से थी। उसका मन्त्री काउन्ट कवूर उन्नीसवीं शताब्दी
का सबसे कुशल राजनीतिज्ञ था।

इटली और कवूर की नीति—कवूर को पूरा विश्वास था कि मेजिनी के विद्रोह और षड्यन्त्र की नीति से इटली को स्वतन्त्रता और एकता प्राप्त नहीं

हो सकता। वह अच्छी तरह जानता था कि बिना किसी विदेशी शक्ति की सहायता से इटली का स्वतन्त्र होना कठिन है। वह इस कार्य में पेडमान्ट को नेता बनाना चाहता था।

इसी समय क्रिमिया युद्ध Crimean war आरम्भ हुआ जो कवूर के लिए एक ईश्वरी देन थी। कवूर के आदेशानुसार पेडमान्ट ने रूस के विरुद्ध इंग्लैण्ड और फ्रान्स की सहायता की। इस राजनीतिक चाल से पेडमान्ट ने सम्पूर्ण योरप को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सन् १८५६ ई० में पेरिस की कांग्रेस में आस्ट्रिया के विरोध करने पर भी पेडमान्ट को इटली की समस्या पर बोलने का अधिकार मिला। कवूर ने इस अन्तरराष्ट्रीय सभा में इटली की समस्या पर बोलने के अवसर को हाथ से न जाने दिया और शीघ्र ही इटली के लिए नेपोलियन तृतीय की सहानुभूति प्राप्त कर ली। सन् १८५८ ई० में नेपोलियन तृतीय के साथ एक सन्धि Compact of Plombieres हो गई जिसके अनुसार यह निश्चय किया गया कि यदि आस्ट्रिया इटली पर आक्रमण करेगा तो फ्रान्स को इटली की सहायता करना पड़ेगा और इसके बदले में फ्रान्स को सेवाय और नाइस मिलेंगे।

फ्रान्स से आश्वासन मिलने पर कवूर एक बड़े पैमाने पर युद्ध की तैयारी करने लगा। इसकी सूचना पाते ही आस्ट्रिया ने पेडमान्ट को फौजी प्रबन्ध हटा लेने के लिए आज्ञा दी। कवूर ने इस आज्ञा को मानने से अस्वीकार कर दिया। इसलिए सन् १८५९ ई० में सार्डीनिया और आस्ट्रिया में एक युद्ध (Austro Sardinian war) छिड़ गया। फ्रान्स और सार्डीनिया की संयुक्त सेना ने आस्ट्रिया वालों को मजेन्टा और साल्फेरिनो के युद्धों में परास्त किया। लाम्बार्डी जीत लिया गया। इसी समयनेपोलियन तृतीय ने युद्ध बन्द कर दिया और आस्ट्रिया से एक सन्धि Truce of Villa Franca कर लिया। जिसके अनुसार लाम्बार्डी इटली को मिला और वेनिस आस्ट्रिया के अधीन रहा। लाम्बार्डी की प्राप्ति इटली की स्वतन्त्रता की ओर पहला कदम था।

इसी समय टस्कनी, पार्मा, मोडेना, आदि राज्यों ने सार्डीनिया में सम्मिलित होने के लिए आन्दोलन किया। आस्ट्रिया इस आन्दोलन के विरुद्ध था।

लेकिन कवूर ने नाइस (Nice) और सेवाय (Savoy) का लालच देकर नेपोलियन तृतीय की सहानुभूति प्राप्त कर लिया। यह राष्ट्रीय एकता की ओर दूसरा कदम था।

गेरीबाल्डी की नीति---राष्ट्रीय एकता की ओर तीसरा कदम गेरीबाल्डी ने उठाया। सिसिली (Sicily) में एक विद्रोह हुआ जिससे लाभ उठाकर गेरीबाल्डीने उस टापू पर आक्रमण किया। नेपील्स के राजा की सेना बाहर निकाल दी गयी। गेरीबाल्डी ने विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय के नाम पर सिसिली को सार्डीनिया में मिला दिया। इसके पश्चात् उसने नेपील्स पर आक्रमण किया। राजा भाग गया और नेपील्स इटली में सम्मिलित कर दिया गया। गेरीबाल्डी ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राजा के हाथ समर्पण कर दिया और सभी सम्मान और पारितोषिक को लेने से इन्कार कर दिया। यह स्वार्थ-नही स्वदेशभक्ति का एक उज्वलंत प्रमाण है।

सन् १८६१ ई० में ट्यूरीन (Turin) नामक स्थान पर इटली की प्रथम पार्लियामेन्ट की बैठक हुई जिसमें वेनिस और रोम को छोड़कर सभी राज्यों ने भाग लिया। इस पार्लियामेन्ट ने विक्टर एमेन्यूअल द्वितीय को 'राजा' की पदवी दी। इसके कुछ ही दिन पश्चात् कवूर की मृत्यु हो गई।

वेनिस और रोम का मिलाया जाना---इटली की एकरूपता के लिए दो राज्यों का अभाव था। पहला, वेनिस जो आस्ट्रिया के अधिकार में था, और दूसरा रोम जो फ्रान्सीसी सेना की सहायता से पोप के अधीन था। कुछ समय के लिए विक्टर एमेन्यूअल ने ठहराव की नीति (Waiting Policy) को अपनाया। सन् १८६६ ई० में आस्ट्रिया और प्रसीया में एक युद्ध छिड़ा जिसमें एमेन्यूअल ने प्रसीया का साथ दिया। सडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया की सेना बुरी तरह परास्त हुई। आस्ट्रिया को वेनिस समर्पण करना पड़ा।

रोम केवल जीतने को शेष रह गया था। सन् १८७० ई० में जब फ्रान्स और प्रसीया में युद्ध (Franco Prussian war) छिड़ा तो नेपोलियन तृतीय ने रोम से फ्रान्सीसी सेना बुला लिया। विक्टर एमेन्यूअल इस अवसर को हाथ से जाने न दिया और रोम पर अधिकार कर लिया। रोम आगे चलकर इटली की राजधानी हुई।

इस प्रकार वर्तमान इटली राष्ट्र की नींव पड़ी।

कवूर का महत्त्व—इटली के इतिहास में कवूर का एक विशेष स्थान है। वह अपने समय का सबसे कुशल राजनीतिज्ञ था। वह इटली की स्वतन्त्रता के लिए विदेशी सहायता के महत्व को भली भाँति जानता था। उसने नेपोलियन तृतीय से सन्धि किया और आस्ट्रिया वालों को मजेन्टा और सालफेरिनों के युद्धों में हराया। उसके बारे में सच कहा गया है कि यदि विदेशी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए कवूर पैदा न हुआ होता तो मेजिनी का प्रयत्न षड्यन्त्र में ही समाप्त हो गया होता और गेरी बाल्डीको कुछ वर्ष अधिक लगते।*

कवूर अपनी गृह नीति में पक्षपातहीन और उदार था। वह पेडमान्ट को एक आदर्श राज्य बनाना चाहता था। वह चाहता था कि जनता एक स्वतन्त्र राजनीतिक जीवन व्यतीत करे। उसने अपने देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया और उद्योगधन्धों, वाणिज्य और खेती को प्रोत्साहन दिया।

वर्तमान इटली कवूर की अपूर्व नीति और कठोर परिश्रम का फल है।**

---

*"If there had been no Cavour to win the confidence, sympathy and support of Europe, if he had not been recognised as one whose sense was just in all emergencies, Mazzini's efforts would have been run to waste in questionable insurrections and Garibaldi's feat of arms must have added one chapter more to the history of unproductive patriotism."

**"Italy as a nation is the legacy, the life-work of Cavour. Cavour knew how to bring it to the sphere of possibilities. he steered straight between revolution and reaction, and gave Italy an organised force, a flag, a government and foreign allies.

प्रश्नोत्तर

1. Narrate in brief the history of the unification of Italy.

देखिये-सम्पूर्ण पाठ

2. Briefly describe the events leading upto the union of Italy.

देखिये-प्रश्न १ का उत्तर

3. Trace the history of the unification of Italy. What were the contributions made by (a) Cavour (b) Garibaldi (c) Mazzini (d) and Victor Emmanuel II to the success of the movement?

देखिये-सम्पूर्ण पाठ

4. Indicate the chief stages in the unification of Italy during the reign of Victor Emmanuel II. (Banaras 1947)

(देखिये—पृष्ठ १८०, १८१, १८२, १८३)

5. Examine carefully the parts played by Mazzini, Garibaldi & Cavour in the cause of Italian unity. (Banaras 1948)

(देखिये पृष्ठ १४२-१४५)

6. Give a critical estimate of the character and statesmanship of Count Cavour. (Calcutta 1930)

(देखिये पृष्ठ १४२, १४३)

उन्नीसवाँ पाठ

जर्मनी का एकीकरण

जर्मनी और वियना की कांग्रेस—इटली की भाँति जर्मनी भी वर्तमान युद्ध के प्रारम्भ से ही छोटे छोटे राज्यों में विभक्त था। उनकी संख्या तीन सौ पचास थी। उनमें मतभेद था और वे एक दूसरे के पतन की बाट देखते थे। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के बाद यह आशा की जाती थी कि जर्मनी में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना होगी। लेकिन वियना की कांग्रेस ने आस्ट्रिया की अध्यक्षता में उन्तालीस राज्यों का एक मण्डल बनाया। मेटर्निक और होली एलायन्स के प्रभाव से स्वतन्त्र राजनीतिक जीवन और स्वराज्य के सभी आन्दोलन दबा दिए गए।

जर्मनी और सन् १८३० ई० की राज्यक्रांति—सन् १८३० ई० की राज्यक्रान्ति का जर्मनी पर गहरा प्रभाव पड़ा। सभी राज्यों ने विद्रोह किया जिसके फलस्वरूप उत्तरी जर्मनी के छोटे-छोटे राज्यों (ब्रन्सविक, सैक्सोनी हनोवर, हेसे) को अपने शासकों से (Liberal Constitution) प्राप्त हुआ। मेटर्निक की अध्यक्षता में वियना की कांग्रेस की बैठक हुई और प्रेसों और विश्वविद्यालयों के विरुद्ध दमन-नीति अपनाया गया। इस प्रकार जर्मनी में प्रतिक्रिया सफल रही।

जर्मनी और सन् १८४८ ई० की राज्यक्रांति—जर्मनी सन् १८४८ ई० की राज्यक्रांति के प्रभाव से वंचित न रहा। वहाँ पर राष्ट्रीय एकता और वैधानिक स्वतन्त्रता के लिए युद्ध चल रहा था। सर्व प्रथम बेडेन में विद्रोह हुआ और स्वतन्त्र विचार वालों ने प्रेसों की स्वतन्त्रता और नियमानुमोदित शासन की। माँग की सेक्सोनी, हनोवर, बवेरिया और प्रशिया को छोड़कर अन्य सभी राज्यों ने इन मांगों को स्वीकार किया। इसी समय वियना और बर्लिन में विद्रोह हुआ जिससे भयभीत होकर फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ को प्रशिया के

लिए एक (Liberal constitution) स्वीकार करना पड़ा। सन् १८४८ ई० में फ्रान्कफर्ट नामक स्थान पर जर्मन पार्लियामेन्ट की बैठक हुई जिसका मुख्य उद्देश्य संयुक्त जर्मनी के लिए शासन-विधान तैयार करना था। इस नये शासन विधान के अनुसार फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ को जर्मनी का राजा बनाया गया। लेकिन फ्रेड्रिक ने इसे अस्वीकार कर दिया। जिसका देखादेखी अन्य राज्यों ने भी शासन विधान को मानने से इन्कार कर दिया। स्वतन्त्र विचार वालों ने उत्तेजित होकर विद्रोह किया। लेकिन वे प्रशिया की सेना की सहायता से दबा दिये गये। इन सफलताओं से लाभ उठाकर फ्रेड्रिक ने जर्मनी की राज्य परिषद को भंग कर दिया और अपनी अध्यक्षता में एक पार्लियामेन्ट की नियुक्ति की। इस पार्लियामेन्ट का मुख्य ध्येय जर्मनी से आस्ट्रिया वालों को निकालना था। आस्ट्रिया ने जर्मनी छोड़ना अस्वीकार कर दिया और ओलम्यूट्ज की लोक सम्मति से फ्रेड्रिक को अपनी योजनाएं त्यागनी पड़ी।

बिस्मार्क का प्रारम्भिक जीवन—बिस्मार्क का जन्म प्रशिया के एक प्रतिष्ठित कुल में हुआ था। बचपन से ही उसे आखेट में अनुराग था। वह अपने छात्र जीवन में कोई विशेष परिश्रमी विद्यार्थी न था।

सन् १८४७ ई० में उसने प्रशिया की राजनीति में प्रवेश किया। और संयुक्त प्रशिया की राजपरिषद का एक प्रमुख नवविद्वेषी सदस्य बन गया। फ्रान्कफर्ट की राजपरिषद में उसे योरोपीय राजनीति की शिक्षा मिली। इसके पश्चात् वह प्रशिया का राजदूत बना कर रूस और फिर फ्रान्स भेजा गया था।

फ्रेड्रिक विलियम चतुर्थ के बाद सन् १८६१ ई० में विलियम प्रथम प्रशिया का राजा हुआ। वह स्पष्ट और दूरदर्शी था। उसे जर्मनी की स्वतन्त्रता के युद्धों के प्रति विशेष सहानुभूति थी। वह अच्छी तरह जानता था कि जर्मनी की राजसत्ता से प्राप्त करने के लिए प्रशिया को एक शक्तिशाली सेना की अत्यन्त आवश्यकता है। सन् १८५९ ई० में राष्ट्रीय व्यय का बिल प्रशिया की पार्लियामेन्ट में पेश हुआ लेकिन उदार पक्ष वालों ने जिनकी संख्या पार्लियामेन्ट में अधिक थी सैनिक व्यय का विरोध किया। ऐसी विकट स्थिति में बिस्मार्क ही केवल एक ऐसा व्यक्ति था जिसने पार्लियामेन्ट के विरुद्ध राजा

की सहायता की। सन् १८६२ ई० में बिस्मार्क प्रशिया का प्रधान मन्त्री हो गया। अन्त में बिस्मार्क और विलियम प्रथम की जीत हुई और राज परिषद् के विरोध करने पर भी बिल पास हो गया।

बिस्मार्क का राजनीतिक सिद्धान्त—बिस्मार्क को समानात्मक और लोकतन्त्र सरकारों में विश्वास न था। उसका कहना था कि बड़े बड़े प्रश्नों का समाधान भाषणों और प्रस्तावों से नहीं हो सकता बल्कि कठोर नीति (Policy of Blood & Iron) से।* उसे विश्वास था कि प्रशिया की उन्नति का श्रेय फ्रेड्रिक महान् जैसे कुशल राजनीतिज्ञों को है। वह एक शक्तिशाली राजतन्त्र का पक्षपाती था।

बिस्मार्क के उद्देश्य और कठिनाइयाँ—बिस्मार्क अपनी परराष्ट्र नीति में प्रशिया के नेतृत्व में जर्मनी को स्वतन्त्र करना चाहता था। इसमें कई कठिनाइयां थीं। पहला आस्ट्रिया को जर्मनी से निकालना आवश्यक था क्योंकि वियना की कांग्रेस से जर्मनी में आस्ट्रिया का प्रभाव बढ़ गया था। बिस्मार्क आस्ट्रिया को प्रशिया का स्वाभाविक शत्रु समझता था। दूसरा, प्रशिया और जर्मनी के छोटे छोटे राज्यों में वैमनस्य था। तीसरा, फ्रान्स, प्रशिया में विस्तार नहीं चाहता था क्योंकि ऐसा होने पर मध्य योरप में शक्ति-संतुलन के सिद्धांत के नष्ट हो जाने का भय था।

बिस्मार्क की परराष्ट्र नीति—अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बिस्मार्क को तीन मुख्य लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी और जर्मनी स्वतन्त्र हो गया।

(क) डेनमार्क के साथ युद्ध

डेनमार्क के युद्ध का मुख्य कारण—श्लेसविग-हालस्टेन प्रश्न था। डेनमार्क की दक्षिणी सीमा पर श्लेसविग और हालस्टेन (Holstein) नाम के दो प्रान्त थे। यद्यपि ये डेनमार्क में सम्मिलित न थे लेकिन डेनमार्क का राजा इन पर शासन करता था। श्लेसविग में डेनमार्क वालों की और हालस्टेन में जर्मन वालों की अधिकता थी। क्रिश्चियन नवम् ने जो सन् १८६३ ई० में डेनमार्क का राजा हुआ, एक शासन-विधान प्रकाशित किया जिसके

*The great questions of the day will not be decided by speeches and majority resolutions but by blood and iron.

अनुसार उसने स्कलेसविग को डेनमार्क में मिलाना चाहा। उसके इस प्रयत्न से दोनों प्रान्त असन्तुष्ट हो गये और क्रिश्चन नवम् निकाल बाहर किया गया।

बिस्मार्क ऐसे मौके को छोड़ने वाला व्यक्ति न था। वह हालस्टेन और स्कलेसविग को जर्मनी में मिलाना चाहता था। उसने शीघ्र आस्ट्रिया से सन्धि किया और आस्ट्रिया और प्रशिया की संयुक्त सेना ने डेनमार्क वालों को परास्त किया। लन्दन में योरपीय शक्तियों की एक कान्फरेन्स (Conference) हुई लेकिन बिना किसी निर्णय के भङ्ग हो गया। आस्ट्रिया और प्रशिया ने जीते हुए प्रान्तों को आपस में बाट लिया। प्रशिया को हालस्टेन और आस्ट्रिया को स्कलेसविग मिला। स्कलेसविग-हालस्टे न प्रश्न बिस्मार्क की पहली राज नीतिक सफलता थी।

(ख) आस्ट्रिया-प्रशिया का युद्ध

डेनमार्क के बाद बिस्मार्क ने अपना ध्यान आस्ट्रिया की ओर दिया। जर्मनी की राजसत्ता को प्राप्त करने के लिए जर्मनी से आस्ट्रिया को निकालना अत्यन्त आवश्यक था। बिस्मार्क ने नेपोलियन तृतीय को लालच देकर आस्ट्रिया प्रशिया के युद्ध में तटस्थता का वचन प्राप्त कर लिया। इसके बाद उसने इटली से एक गुप्त सन्धि किया।

आस्ट्रिया—प्रशिया का युद्ध (Austro-Prussian War) केवल सात सप्ताह तक चलता रहा और निर्णायक युद्ध केवल एक दिन हुआ। सडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया बुरी तरह परास्त हुआ और सन् १८६६ ई० में प्राग की सन्धि हुई जिसके अनुसार आस्ट्रिया को जर्मनी से अपना अधिकार हटा लेना पड़ा। इटली को आस्ट्रिया से वेनिस प्राप्त हुआ और स्कलेसविग और हालस्टेन प्रशिया में मिला दिये गये।

(ग) फ्रान्स और जर्मनी का युद्ध

फ्रान्स को केवल नीचा दिखलाना बच गया था। बिस्मार्क युद्ध का बहाना खोजता था और उसे प्राप्त भी हुआ। पहला नेपोलियन तृतीय राईन नदी

पर अधिकार करना चाहता था। बिस्मार्क एक भी गाँव देने को तैयार न था। दूसरा नेपोलियन बेलजियम को मिलाना चाहता था लेकिन बिस्मार्क इसका कट्टर विरोध करता था। तीसरा, नेपोलियन हालैण्ड के राजा से यूजेमबर्ग खरीदना चाहता था।

सन् १८६८ ई० में महारानी इसाबेला से असन्तुष्ट होकर स्पेन वालों ने विद्रोह किया और होहेनजोलर्न राजकुमार ल्यूपाल्ड को स्पेन के सिंहासन पर बैठाया। प्रशिया के राजा के साथ उसका सम्बन्ध होने के कारण पेरिस में काफी असन्तोष फैला जिससे ल्यूपाल्ड ने स्पेन का राजा होना अस्वीकार कर दिया। इससे भी सन्तुष्ट न होकर नेपोलियन तृतीय ने प्रशिया के राजा से इस बात का आश्वासन मांगा कि भविष्य में ल्यूपाल्ड स्पेन की गद्दी के लिए खड़ा न होगा। इस मांग को प्रशिया के राजा ने अस्वीकार कर दिया। बिस्मार्क ने इस घटना से लाभ उठाया और इस घटना का पूरा विवरण प्रकाशित किया जिसमें प्रशिया के राजा के द्वारा फ्रान्सीसी राजदूत का मान हानि बतलाया गया। फ्रान्सीसियों के क्रोध का ठिकाना न रहा और सन् १८७० में फ्रान्स और जर्मनी में एक युद्ध आरम्भ हो गया।

फ्रान्स और जर्मनी का युद्ध अधिक दिनों तक नहीं चला। फ्रान्सीसी सेना वर्थ और ग्रेवलाथ के युद्ध में परास्त हुई। और सेडान के युद्ध में फ्रान्स की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। नेपोलियन तृतीय बन्दी बना लिया गया। और प्रशिया के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट् घोषित किया गया। सन् १८७१ ई० में फ्रान्कफर्ट की सन्धि हुई जिसके अनुसार फ्रान्स को अलसास और लोरेन जर्मनी के हवाले करना पड़ा। इस युद्ध से जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ और जर्मनी स्वतन्त्र हो गया।

बिस्मार्क और त्रिदेशीय सन्धि—जर्मनी को स्वतन्त्र करने के बाद बिस्मार्क जर्मनी को संसार में एक महान् सैनिक शक्ति बनाना चाहता था। यद्यपि उसने फ्रान्स पर विजय पाया। लेकिन फ्रान्स उसकी आँखों में खटकता था। इस लिए उसने योरप के अन्य देशों के साथ मित्रता करना आरम्भ किया। उसने आस्ट्रिया, हंगरी, इटली, रूस और इंग्लैण्ड से मित्रता किया। सन् १८७२ में जर्मनी, रूस और आस्ट्रिया के सम्राटों का एक संघ बना। बर्लिन की कांग्रेस

में बिस्मार्क को रूस के विरुद्ध आस्ट्रिया हंगरी की सहायता करना पड़ा जिससे रूस संघ में सम्मिलित हुआ और इस प्रकार प्रसिद्ध ऐतिहासिक 'त्रिदेश सन्धि' बना। बिस्मार्क के लिए आस्ट्रिया और इटली की मित्रता काफी न थी। जर्मनी को पूर्वी सीमा की रक्षा के लिए रूस से मैत्री रखना आवश्यक था। अतः सन् १८८४ ई० में बिस्मार्क ने रूस से एक सन्धि ("Reinsurance Treaty") किया जिसके अनुसार यदि जर्मनी पर कोई आक्रमण होता तो रूस तटस्थ रहता। इस प्रकार सन् १८७१ ई० से लेकर सन् १८९० ई० तक बिस्मार्क की नीति से जर्मनी योरोपीय राजनीति का प्रधान आधार बन गया।

बिस्मार्क की गृह-नीति—बिस्मार्क अपनी गृह-नीति में देश की आर्थिक उन्नति चाहता था। उसने रेलवे को प्रोत्साहन दिया, सेना को संगठित किया और सैनिक शिक्षा को अनिवार्य किया। बिस्मार्क का केथोलिकों से झगड़ा हुआ और उसे हार मानना पड़ा। यह झगड़ा "सभ्यता के लिए झगड़ा" ("Kultur Kampf" or "Struggle for Civilization") के नाम से प्रसिद्ध है। अन्त में बिस्मार्क और पोप में एक समझौता के हो जाने से इस कलह का अन्त हुआ। इसके अतिरिक्त बिस्मार्क जर्मनी में समाजवाद को दबाना चाहता था। समाजवादी पार्टी (Socialist party) जर्मनी की सबसे संगठित राजनीतिक पार्टी थी। बिस्मार्क समाजवादियों को दबाने में असफल रहा।

बिस्मार्क का पतन और मृत्यु—सन् १८८८ ई० में विलियम प्रथम की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र फ्रेड्रिक तृतीय केवल तीन ही महीने राज्य कर पाया था कि उसका भी देहान्त हो गया। उसके पश्चात उसका पुत्र कैसर विलियम द्वितीय जर्मनी का सम्राट हुआ। वह बिस्मार्क के प्रभुत्व को सहन नहीं कर सकता था। सन् १८९० में बिस्मार्क और कैसर विलियम द्वितीय का मतभेद इतना बढ़ा कि बिस्मार्क को पद त्याग करना पड़ा। सन् १८९८ में बिस्मार्क स्वर्ग सिधारा।

प्रश्नोत्तर

1. Narrate the story of the unification of Germany.

(Calcutta 1934)

(देखिये—पृष्ठ १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२)

2. Indicate the chief stages in the unification of Germany. (Banaras 1948)

(देखिये प्रश्न १ का उत्तर)

3. What were the obstacles in the way of German unity? How they were removed ?

(देखिये—पृष्ठ १४६, १५०, १५१, १५२)

4. Evaluate the work of Bismarck as a statesman. (Banaras 1949)

(देखिये—पृष्ठ १४६, १५०, १५१, १५२)

5. Estimate the achievements of Bismarck as the maker of German unity (Banaras 1950)

(देखिये—प्रश्न ४ का उत्तर)

6. Indicate the services of Bismarck to Prussia & Germany. (Calcutta 1933)

(देखिये—प्रश्न ४ का उत्तर)

7. "It has always been the policy of Germany to isolate the enemy before striking her down" Illustrate this by the events of 1866 and 1870 Allahabad 1929

(देखिये—पृष्ठ १५०, १५१)

8. Bismarck's foreign policy can be summed up in two expressions "divide and rule". Explain and illustrate.

(देखिये—पृष्ठ १५०, १५१)

बीसवाँ पाठ

प्रथम महायुद्ध

प्रथम महायुद्ध के पहले योरप की राजनैतिक स्थिति—बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दो प्रमुख संघ स्थापित हो गये थे। पहला (Triple Alliance) और दूसरा (Dual Alliance) जैसा कि पिछले पाठ में बतलाया जा चुका है (Triple Alliance) बिस्मार्क की परराष्ट्र नीति के परिणाम स्वरूप बना था। बिस्मार्क फ्रान्स से जर्मनी की रक्षा करना चाहता था। इस संघ मे जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली सम्मिलित थे।

सेडान के युद्ध के बाद फ्रान्स अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने के अभिप्राय से एक संघ बनाना चाहता था। बर्लिन की कांग्रेस में पूर्वी प्रश्न पर जर्मनी और रूस में मतभेद हो जाने से फ्रान्स को संघ बनाने का एक अच्छा अवसर मिला। सन् १८९१ में फ्रान्स ने रूस से एक सन्धि किया और इस प्रकार (Dual Alliance) का जन्म हुआ।

इंग्लैण्ड इन सब संघो से अलग था। यह पृथकत्व इंग्लैण्ड के लिए अहितकर था और विशेषकर जर्मनी की व्यापारिक शत्रुता से। जर्मनी इंग्लैण्ड को समुद्री और व्यापारिक प्रधानता से वंचित करना चाहता था। अपने हितों की रक्षा के लिए इंग्लैण्ड को विदेशी राज्यों से मित्रता करने की आवश्यकता जान पड़ी। अतः सन् १९०४ ई० और सन् १९०७ ई० में इंग्लैण्ड ने क्रमशः फ्रान्स और रूस से सन्धि किया। इस प्रकार फ्रान्स, रूस, और इंग्लैण्ड का एक अलग राजनीतिक संघ बन गया जो योरोपीय इतिहास में "त्रिदेशी मित्रता" ("Triple Entente") के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रथम महायुद्ध (१९१४-१९) के कारण—(क) जर्मनी और फ्रान्स में राईन नदी के लिए परम्परागत झगड़ा चला आता था। जर्मनी के मोरॉको

ने फ्रान्सीसीयों के हितों का जोरदार विरोध किया था। (ख) जर्मनी और इंग्लैण्ड में व्यापारिक प्रतिद्वंदिता थी। इसलिए इंग्लैण्ड-जर्मनी के बगदाद (Baghdad) रेलवे की योजना को संदिग्ध दृष्टि से देखता था। (ग) बालकन के मामलों में रूस और आस्ट्रिया में मतभेद था सन् १९०८ ई० में आस्ट्रिया ने बोसनिया और हरजीगोविना को अपने राज्य में मिला लिया। जिसका रूस और सर्विया ने विरोध किया। (घ) सन् १९१४ ई० में बालकन में अशान्ति थी। रूस और आस्ट्रिया एक दूसरे की नीति को अविश्वास की दृष्टि से देखते थे। रूमानिया, ग्रीस और बलगेरिया का संघ बनाकर रूस आस्ट्रिया से सर्विया की रक्षा करना चाहता था। इसके विपरीत आस्ट्रिया, रूमानिया, ग्रीस और बलगेरिया का संघ बनाकर सर्विया को पृथक करना चाहता था। (ङ) २८ जून सन् १९१४ ई० को आस्ट्रिया का उत्तराधिकारी राजकुमार आर्कड्यूक फ्रान्सीस फर्डीनाण्ड बोसनिया की राजधानी सराजीवो में कत्ल कर दिया गया। आस्ट्रिया ने सर्विया से ४८ घन्टे के भीतर इसका कारण पूछा और साथ ही साथ युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दिया। पूर्वी भूमध्य सागर पर अपना अधिकार करने के लिए रूस ने सर्विया का साथ देने का निश्चय किया। जर्मनी ने आस्ट्रिया का और फ्रान्स ने रूस का साथ दिया। फ्रान्स अपनी पराजय को भूला न था और वह अलसाक और लोरेन को वापस लेना चाहता था। जर्मनी ने फ्रान्स पर आक्रमण करने के लिए सन् १८३९ ई० की सन्धि के विरुद्ध बेल्जियम से रास्ता माँगा। इस पर बेल्जियम ने सहायता के लिए प्रार्थना की। इस प्रकार शक्ति सन्तुलन की नीति को बनाये रखने के लिए इंग्लैण्ड ने प्राचीन नीति के अनुसार योरोपीय महायुद्ध में भाग लिया।

मुख्य घटनायें—घटनाओं को हम दो भागों में बाँट सकते हैं—स्थल युद्ध और जल-युद्ध।

स्थल-युद्ध—जर्मनी ने सर्व प्रथम बेल्जियम पर आक्रमण किया लेकिन जनरल जाफ्रे ने जर्मन वालों को पीछे खदेड़ दिया। जर्मनी की दूसरी सेना ने केले पर अधिकार करने का प्रयत्न किया लेकिन वे असफल रहे। सन् १९१५ ई० में ईप्रेस की लड़ाई हुई और जिसमें भी जर्मनी सेना असफल रही। तीन वर्षों तक दोनों सेनाओं में खंदक की लड़ाइयाँ होती रहीं। सन् १९१६ ई० में

फ्रान्सिसीयों ने जर्मनी की सेना को वर्डन से हटा दिया। दिसम्बर में रूस ने युद्ध करना बन्द कर दिया और जनवरी सन् १९१८ ई० में जर्मनी से सन्धि कर ली। सन् १९१७ ई० में अमेरिका की सहायता से मित्र संघ वालों ने जर्मनी को पीछे हटा दिया। अन्त में जर्मनी ने सन्धि के लिए प्रार्थना की और इस प्रकार पश्चिम युद्ध क्षेत्र में मित्र संघ की विजय हुई।

रूस टेनेनबर्ग के युद्ध में बुरी तरह परास्त हुआ। इसके पश्चात् सन् १९१५ ई० में रूस ने आस्ट्रिया पर आक्रमण किया लेकिन जनरल मेकेनसेन ने रूसी सेना को थनजेक नदी के किनारे परास्त किया। रूस को ल्यूजेमबर्ग और वारसाव खाली करना पड़ा। सन् १९१८ ई० में रूस और जर्मनी में सन्धि हो जाने से पूर्वी स्थल युद्ध का अन्त हुआ।

सन् १९१४ ई० में आस्ट्रिया ने सर्बिया पर आक्रमण किया। पहले तो आस्ट्रिया को सफलता मिली किन्तु बाद में सर्बिया छोड़ना पड़ा। सन् १९१५ ई० में आस्ट्रिया और बलगेरिया की संयुक्त सेना ने सर्बिया को परास्त किया। इंग्लैण्ड की सेना ने गेलीपाली पर अधिकार कर लिया लेकिन सन् १९१५ ई० में उसे हटना पड़ा। सन् १९१७ ई० में आस्ट्रिया और जर्मनी की सम्मिलित सेनाओं ने इटली की सेना पर भयंकर आक्रमण किया। लेकिन मित्र संघ की सहायता से इटली ने उनको पियावे नदी पर पराजित किया। सन् १९१८ ई० में इटली ने आस्ट्रिया पर विजय पाई।

जर्मनी को एशिया और अफ्रीका स्थित अपने उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा। सन् १९१४ ई० में जापान ने अंग्रेजी सेना की सहायता से चीन में जर्मनी के व्यापारिक बन्दरगाह सीगेटाउ (Tsingtau) पर अधिकार कर लिया। फ्रान्स और इंग्लैण्ड ने अफ्रीका में केमेरून्स को ले लिया। दक्षिणी अफ्रीका वालों ने सन् १९१५ ई० में जर्मनी के दक्षिणपश्चिमी अफ्रीका को जीत लिया। सन् १९१७ ई० में जर्मनी का पूर्वी अफ्रीका भी मित्र-संघ के हाथ में आगया।

जल-युद्ध—सन् १९१५ ई० में अंग्रेजी सेना ने उत्तरी सागर में डागर बैंक और बाइट आफ हेलिगोलैण्ड पर आक्रमण किया। दोनों युद्धों में जर्मनी को काफी हानि उठाना पड़ा। सन् १९१६ ई० में जटलैण्ड का युद्ध हुआ।

जर्मनी की अपेक्षा इंग्लैण्ड का समुद्र पर आधिपत्य स्थापित हो गया। जर्मनी ने पनडुब्बियों से काम लेना शुरू किया लेकिन अंग्रेजों के सामने उनकी दाल न गली और सन् १९१८ ई० में उनकी स्थिति अधिक शोचनीय हो गई।

वर्साई की सन्धि (१९१९)—सन् १९१८ ई० में महायुद्ध के बन्द होने की घोषणा की गई। सन् १९१९ ई० में शान्ति संस्थापना के लिए पेरिस और वर्साई में कई कान्फरेन्स हुई। इन कान्फरेन्सों में इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रान्स, भारत और भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। इस सन्धि की निम्नांकित शर्तें थी।

(क) आस्ट्रिया-हंगरी को तोड़कर आस्ट्रिया और हंगरी दो स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य बना दिये गये।

(ख) जर्मनी की सैनिक शक्ति को कम कर दिया गया। उसे अपना जहाजी बेड़ा समर्पित करना पड़ा। अनिवार्य सैनिक शिक्षा को स्थगित कर दिया गया।

(ग) फ्रान्स को अलसाक और लोरेन प्राप्त हुआ और पन्द्रह वर्ष के लिए सार घाटी के कोयले की खान पर फ्रान्स का आधिपत्य स्थापित हो गया।

(घ) स्कलेसविग और हालस्टेन जिसको जर्मनी ने सन् १८६४ ई० में डेनमार्क से जीता था, डेनमार्क को वापस कर दिया गया।

(ङ) बोहेमिया और मोरानिया मिलाकर जेकोस्लावेकिया बना दिया गया।

(च) आस्ट्रिया से इटली को बोटजेन, ट्रेन्ट, ट्रियस्टे, इयालिया और एड्रीयाटिक सागर का दो द्वीप मिला।

(छ) रूमानिया को रूस से बेसारबिया और हंगरी से ट्रांसिलवेनिया मिला।

(ज) बोसनिया, हरजीगोविना, क्रोशिया, सर्बिया मिलाकर युगोस्लाविया राज्य स्थापित किया गया।

(झ) १८वीं शताब्दी के सभी देश पोलैण्ड फिनलैण्ड को मिल गये।

(ञ) बाल्टिक सागर की ओर फिनलैण्ड, इस्टोनिया, लैटविया, और लिथूवानिया प्रजातन्त्र बना दिये गये।

(त) जर्मनी को अलसाक और लोरेन वापस करना पड़ा। सार घाटी के कोयले की खान पर से पन्द्रह वर्ष के लिए अधिकार जाता रहा।

(थ) भावी युद्धों को रोकने के लिए लीग आफ नेशन्स स्थापित की गई।

योरपीय महायुद्ध की विशेषता---गत शताब्दी के युद्धों से यह युद्ध बिलकुल भिन्न था। इस युद्ध में राष्ट्रों ने एक दूसरे के विरुद्ध अस्त्र शस्त्र उठाये और असंख्य नर-नारियों ने भाग लिया। अस्त्रों में उन्नति हुई। पुराने अस्त्रों के साथ साथ नये अस्त्र-शस्त्रों का भी प्रयोग किया गया। युद्ध करने के ढङ्ग में भी उन्नति हुई। आकाशमार्गी और जलमार्गी युद्धों में आशातीत उन्नति हुई। गोलाबारी आदि कार्यों के लिए हवाई जहाजों को काम में लाया गया। पनडुब्बियों आदि के कारण समुद्री युद्ध के ढङ्ग में परिवर्तन हो गया। इस युद्ध का प्रभाव संसार के कोने कोने पर पड़ा जिसके कारण यह विश्वव्यापी युद्ध के नाम पुकारा जाता है। प्रथम महायुद्ध की नृशंसता तथा नर हत्या से भयभीत होकर ही भावी युद्धों को रोकने के लिए लीग आफ नेशन्स (League of nations) की स्थापना की गई।

प्रश्नोत्तर

1. Account for the formation of the Triple Alliance (1882) and the Triple Entente (1907)

(*Banaras* 1949)

(देखिये-पृष्ठ १५२)

2. What were the causes which led to the First Great War of 1914,

(देखिये पृष्ठ १५५)

3. What were the main provisions of the treaty of versailles?

(देखिये-पृष्ठ १५७, १५८)

4. Bring out the main characteristics of the First Great world war of 1914.

(देखिये-पृष्ठ १५८)